हिन्दी दैनिक

मंईयां प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● शुक्रवार ● 13.09.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 55 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3~~ 2 रुपया

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

झारखण्ड मुख्यमंत्री
मंईयां
सम्मान योजना

हर बहना को
हर साल
₹12 हजार

18 से 20
वर्ष की बहन-बेटियों
को भी योजना से लाभ

लुगु बुरु घंटाबाड़ी धोरोम गाढ़
की पवित्र भूमि लललपनिया से

करम पर्व
की पूर्व संध्या पर लाखों बहनों को

खुशियों का उपहार

झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना (JMMSY) की

दूसरी किस्त
का होगा हस्तांतरण

13 सितंबर, 2024 | अपराह्न 12:30 बजे से
ललपनिया फुटबॉल मैदान, गोमिया, बोकारो

48,15,048 बहनों
का योजना के तहत
हुआ निबंधन

45,36,597 बहनें
सम्मान राशि से
अबतक आच्छादित

हर महीने की
15 तारीख तक
हर बहन के खाते में
पहुँचेगी सम्मान राशि

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखण्ड सरकार

PR- 335638 (Women, Child Development & Social Security) 24-25

एक नजर

नए शो में बाल कलाकार काविश खुंगर करेंगे एंट्री

हजारीबाग : आजकल टीवी इंडस्ट्री में कई युवा कलाकार अपनी प्रतिभा के चलते छोटी उम्र से ही दर्शकों के बीच अपनी एक खास पहचान बना रहे हैं। अपने करियर की शुरूआत के साथ इस शो में काविश, कृश माथुर का किरदार निभाएंगे।
कृश माथुर एक खुशमिजाज, ऊजार्वान बच्चा है, जो अपनी मौजूदगी से हर जगह खुशियां बिखेरता है। भगवान श्रीकृष्ण की तरह उसमें भी शरारत की झलक और माखन के लिए अटूट प्यार है। कृश का अपनी मां वृंदा से गहरा लगाव है। वृंदा की दुनिया कृश के इर्द-गिर्द घूमती है और कृश की दुनिया भी उसकी मां हैं। मां-बेटे का यह प्यारा, अनोखा और मजबूत बंधन दर्शकों को नन्हे कन्हैया की याद दिला देता है। वह अक्सर अपनी मां को लोरी गाकर सुलाता है और मां का ख्याल रखता है। खुशमिजाज और हमेशा नई चीजों को जानने के लिए उत्सुक रहता है।

आईसेक्ट विश्वविद्यालय में हेल्थ चेकअप कैंप का हुआ आयोजन

हजारीबाग : नियमित स्वास्थ्य जांच हमें अवश्य कराना चाहिए। इससे न केवल अलग-अलग बिमारियों के शुरूआती लक्षणों का पता चलता है बल्कि समय पर इलाज भी संभव हो पाता है। साथ ही स्वस्थ जीवनशैली अपनाने में भी मदद मिलती है। उक्त बातें आईसेक्ट विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ मुनीष गोविंद ने विश्वविद्यालय के फामेर्सी विभाग की ओर से मुख्य कैंपस परिसर में आयोजित हेल्थ चेकअप कैंप के उद्घाटन के दौरान कही। उन्होंने कहा कि नियमित स्वास्थ्य जांच से हम शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं। बता दें कि डॉ आलोक राय की निगरानी में विश्वविद्यालय के फामेर्सी विभाग की ओर से आयोजित हेल्थ चेकअप कैंप में प्राध्यापक-प्रध्यापिकाओं, कर्मियों व विद्यार्थियों समेत 100 से अधिक लोगों का हेल्थ चेकअप किया गया, जिसमें बी.पी, ऑक्सीजन लेवल, पल्स रेट, बीएमआई, डायबीटिज व अन्य की जांच की गई। डॉ आलोक ने बताया कि बी.पी, डायबीटिज जैसी बीमारियां अब आम हो गई है और 40 वर्ष से अधिक उम्र की एक बड़ी आबादी अब इसके गिरफ्त में आता जा रहा है। ऐसे में नियमित स्वास्थ्य जांच, स्वास्थ्य के मद्देनजर आवश्यक है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में लोगों की दिनचर्या भी बीमारियों को पांव पसारने का भरपूर मौका दे रहें हैं, ऐसे में स्वास्थ्य की देखभाल को लेकर जागरूकता भी जरूरी है। उन्होंने बताया कि जल्द ही विश्वविद्यालय के फामेर्सी विभाग की ओर से कुछ गांवों में भी हेल्थ चेकअप कैंप लगाए जाएंगे और लोगों को इसे लेकर जागरूक किया जाएगा।

जनता की जगह जनप्रतिनिधियों ने किया अपना विकास : रूचिर

मेदिनीनगर (पलामू) : भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के जिला सचिव सह राष्ट्रीय परिषद सदस्य रुचिर कुमार तिवारी ने चैनपुर अंचल के चैनपुर, कल्याण पुर ,भड़गांवा एवं डुमरी ग्राम में आम जनता की जन समस्याओं से अवगत होकर मुलाकात किया जहां लोगों ने जिला सचिव तिवारी का जोरदार स्वागत किया लोगों की जन समस्याओं से अवगत होते हुए जिला सचिव तिवारी ने कहा कि भाजपा के विधायक एवं सांसद आम जनता की विकास की बात नहीं करके बड़े एवं कारपोरेट घरानों के विकास की बात करते हैं 5 साल भाजपा के मेयर रहने के बाद भी चैनपुर क्षेत्र की नारकीय स्थिति बनी हुई है।

पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम महत्वपूर्ण समर्पण के साथ इसे सफल बनाएं : डीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : 7 अक्तूबर को आयोजित होनेवाले दुधमटिया पर्यावरण जागरूकता मेला-सह-वृक्ष रक्षा बंधन के सफल आयोजन को लेकर आज 12 सितंबर को उपायुक्त श्रीमती नैंसी सहाय की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गईं। उपायुक्त वेश्म में आयोजित बैठक में निम्न बिंदुओ पर चर्चा हुई। इस कार्यक्रम को लेकर 06.10.2024 को देवांगना चौंक से दूधमटिया (टाटीझरिया) तक पर्यावरण जागरूकता साईकिल यात्रा कार्यक्रम में रूट मार्ग पर विद्यालियों के विद्यार्थियों के द्वारा मानव श्रृंखला बनाए जाने पर चर्चा की गईं एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया गया। 7 अक्तूबर को दुधमटिया (टाटीझरिया) में आयोजित वृक्ष रक्षाबंधन -सह- पर्यावरण मेला में पर्यावरण चेतना भवन का पेंटिंग, टेंट, सामियाना, कुर्सी, साउण्ड, बैनर एवं झंडी, प्रदर्शनी, पुरस्कार पम्पलेट्स/लिफलेट्स की प्रिंटिंग इत्यादि की व्यवस्था के निमित जिला में अवस्थित विभिन्न सरकारी / गैर सरकारी संस्थानों से आवश्यक सहयोग पर चर्चा की गईं। उपायुक्त ने नगर निगम, हजारीबाग एवं कार्यपालक अभियंता, पेयजल स्वच्छता प्रमंडल, हजारीबाग द्वारा वृक्ष रक्षाबंधन-सह-पर्यावरण मेला में पेजयल एवं अस्थायी शौचालय की व्यवस्था हेतु निर्देश दिया। आरक्षी अधीक्षक, हजारीबाग एवं थाना प्रभारी, टाटीझरिया, दारू एवं विष्णुगढ को उक्त मेला में उपस्थित जनसमूहों की सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। पर्यावरण संरक्षण के लिए शहर में संचालित नर्सिंग होम से उत्सर्जित कचरा के प्रबंधन के संबंध जल्द चर्चा की गईं। मौके पर उपायुक्त ने सी०सी०एल० एवं अन्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु किए गए जा रहे कार्यों की जानकारी ली। बच्चों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक सोच का विकास हो इस बाबत विद्यालयों में ईको क्लब को क्रियाशील करने का निर्देश दिया। बेतहसा बढ़ रहे पॉलीथीन के प्रयोग पर अंकुश लगाने तथा इसके उपयोग पर नियंत्रण लगाने हेतु प्रभावी कदम उठाने का निर्देश दिया। जलाशय प्रदूषित न हो इस हेतु मूर्ति विसर्जन के लिए जलाशयों के चयन पर चर्चा की गईं। कोयला, बालू, स्टोन डस्ट, वाहक वाहनों द्वारा दुलाई के क्रम में मानक निदेशों का पालन करने के निर्देश दिए गए। बैठक में डीएफओ वाइल्ड लाइफ सुरज कुमार, डीएफओ इस्ट विकास कुमार उज्जवल, जिला शिक्षा पदाधिकारी, डिप्टी कमांडेंट, बीएसएफ मेरु श्री रणविजय सिंह, बीएसएफ मेरु, पर्यावरण प्रेमी सुरेंद्र प्रसाद सिंह, मुरारी सिंह व अन्य सदस्य मौजूद रहें।

ग्रामीण खेल प्रतिभा को उजागर करने की यह सकारात्मक पहल है : शेफाली

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल के द्वारा पूरे लोकसभा क्षेत्र में प्रखण्डवार सांसद खेल महोत्सव के तहत नमो फुटबॉल टुनार्मेंट का आयोजन किया जा रहा है। गुरूवार को सांसद मनीष जायसवाल के द्वारा सदर प्रखण्ड के चुटियारो में नमो फुटबॉल टुनार्मेंट का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता शामिल हुई। जहाँ नमो फुटबॉल टुनार्मेंट के संचालन समिति के सदस्यों ने बुके एवं फुलमाला के साथ सहृदय उनका स्वागत व अभिनंदन किया। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि सांसद मनीष जायसवाल के द्वारा आयोजित नमो फुटबॉल टुनार्मेंट के माध्यम से ग्रामीण खेल प्रतिभा को उजागर करने का सकारात्मक पहल है। इससे कई खिलाडियों को अपनी प्रतिभा दिखलाने एवं आगे बढने का अवसर मिलता है। खेल के साथ खिलाडियों को अनुशासन एवं निर्णायक के मौजुदगी में बेहतर खेल प्रदर्शन करने का भी अनुभव प्राप्त होता है। मौके पर सदर पश्चिमी मंडल अध्यक्ष रंधीर पाण्डेय, पूर्वी मंडल अध्यक्ष कृष्णा मेहता, पूर्व सदर विधायक प्रतिनिधि बिजय कुमार, पूर्व विधायक प्रतिनिधि शिवपाल यादव, भाजपा अनुसुचित मोर्चा के जिला अध्यक्ष महेंद्र राम बिहारी, नमो फुटबॉल टुनार्मेंट के संचालनकर्ता प्रभु राम, अध्यक्ष रामचंद्र प्रसाद, उपाध्यक्ष सुभाष राणा, राजेन्द्र प्रसाद, दिलीप प्रसाद, सचिव सुरेश रजक, राजेश कुमार, सोनेलाल ठाकुर, कोषाध्यक्ष मीठू यादव, अर्जुन केशरी, प्रदीप राणा, प्रवेशकर्ता प्रेम रजक, पवन केशरी, दीपक कुमार, नीरज कुमार, अमित दास, प्रदीप यादव, संजय यादव, संतोष कुमार, निर्णायक शशि विश्वकर्मा व उनके सहयोगी, दयामनी टोपो, अजील कुमार, परमेश्वर प्रजापती एवं अर्जुन केशरी सहित कई लोग उपस्थित रहे।

विभावि के स्थापना दिवस समारोह में संतोष गंगवार होंगे मुख्य अतिथि : कुलपति

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : विश्वविद्यालय के 33वें स्थापना दिवस कार्यक्रम पर बतौर मुख्य अतिथि कुलाधिपति संतोष कुमार गंगवार शामिल होगें। विनोबा भावे विश्वविद्यालय को इस संबंध में उनकी सहमति प्राप्त हो चुकी है। उक्त बातें विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति सुमन कैथरीन किसपोट्टा ने कही। वह स्थापना दिवस समारोह के आयोजन को लेकर आर्यभट्ट सभागार में एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता कर रही थी। कुलपति ने आगे कहा कि सब लोग मिलजुल कर काम करेंगे ताकि स्थापना दिवस समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन हो सके। अपने-अपने समितियां के दायित्व के निर्वहन के साथ-साथ अन्य कोई बिंदु के तरफ अगर किन्हीं का ध्यान जाता है तो वह तत्काल उस विषय पर पहल करेंगे। इस बात का सब लोग ध्यान रखेंगे कि विश्वविद्यालय की गरिमा बनी रहे। बैठक का संचालन सीसीडीसी डॉ किशोर कुमार गुप्ता ने किया। उन्होंने क्रमवार सभी उप समितियों के कार्यों की चर्चा की तथा संबंधित समितियों से सुझाव आमंत्रित किए। बैठक में बताया गया कि कुलाधिपति जी का आगमन विश्वविद्यालय परिसर में 10:40 के लगभग अपेक्षित है। सर्वप्रथम उनके द्वारा आचार्य विनोबा भावे के प्रतिमा पर पुष्प अर्पण का कार्यक्रम होगा। तत्पश्चात वहीं पर विश्वविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स के द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाएगा। शेष सभी कार्यक्रम स्वामी विवेकानंद सभागार में आयोजित होंगे। बैठक में प्रस्ताव लिया गया कि वित्तीय नियमों का पालन करते हुए सभी खर्च किए जाएंगे। तय हुआ कि विद्यार्थियों के द्वारा कुलगीत तथा एक संक्षिप्त सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की जाएगी। विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण संकायअध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ) मिथिलेश कुमार सिंह के द्वारा पिछले एक वर्ष में अवकाश प्राप्त करने वाले शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर साथियों की सूची का पाठ किया गया। तय हुआ की पेंशन सेल से दोबारा इसका मिलान कर लिया जाएगा ताकि कोई भी नाम गलती से भी ना छूटे।

आंगो फुटबॉल प्रतियोगिता पर इचापीरी स्पोर्टिंग क्लब का कब्जा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के आंगो पंचायत अंतर्गत के जतरा मेला मैदान में सरगम स्पोर्टिंग क्लब आंगों के द्वारा फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया गया । फाइनल मुकाबला देवगढ़ स्पोर्टिंग क्लब बनाम इचापीरी स्पोर्टिंग क्लब के बीच खेला गया। जिसमें इचापीरी स्पोर्टिंग क्लब ने बेहतर खेल का प्रदर्शन करते हुए विपक्षी टीम को 1-0 से हराकर टूनार्मेंट पर कब्जा जमाया। फाइनल मैच के मुख्य अतिथि बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद एवं विशिष्ट अतिथि बड़कागांव थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल का प्रबंधन द्वारा भव्य स्वागत किया गया। स्वागत कार्यक्रम में बारी-बारी से पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि मुनेश्वर गंझू, पूर्व प्रखंड अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे, प्रतिनिधि सुरेश महतो ,कांग्रेस नेता रमेश गंझू, पूर्व मुखिया प्रतिनिधि महादेव हंसदा, रामजीत गंझू एंव शमशेर आलम दीपक कुमार को मंच पर माला पहनाकर स्वागत किया गया।इस दौरान पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता एवं उपविजेता एवं अन्य बेहतर करने वाली टीमों को टीम को सम्मानित किया गया। पश्चात प्रबंधन के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें झारखंड के कलाकारों के द्वारा गीत संगीत नृत्य प्रस्तुत किया गया। मौके पर उपस्थित लोगों से मुख्य अतिथि विधायक अंबा प्रसाद ने कहा कि खेल प्रतियोगिता से एक दूसरे गांव के लोगों को जोड़ने के साथ साथ मित्रता बढ़ती है। वही विशेष अतिथि बड़कागांव थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल ने कहा कि खेल से शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। स्पोर्टिंग क्लब के अध्यक्ष राजेंद्र भुईंया ने बताया कि इस महा मुकाबले में कुल 39 टीमों ने भाग लिया था।

टीओपी प्रभारी ने गरीब महिला का बकाया पैसा ब्याज समेत कराया वापस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू): शहर थाना क्षेत्र के टीओपी टू प्रभारी अनिल कुमार सिंह ने आज दो लोगों के बीच पैसा लेनदेन के मामले को सुलझाने का काम किया है। जानकारी के अनुसार कई वर्ष पहले सदर थाना क्षेत्र के चियांकी गांव निवासी हरेंद्र राम सतबरवा थाना क्षेत्र के पोलपोल गांव निवासी गरीब महिला उत्तम देवी से 10000 रुपया लिया था। महिला उत्तम देवी के द्वारा पैसा मांगने के बाद भी हरेंद्र राम पैसा देने से इनकार कर रहा था। तभी महिला उत्तम देवी को किसी व्यक्ति ने जानकारी दिया कि टिओपी टू थाना प्रभारी अनिल कुमार सिंह से संपर्क कीजिए मामला सॉल्व हो जाएगा। इसके बाद महिला सतबरवा थाना ना जाकर शहर के टिओपी टू थाना पहुंचकर इसकी जानकारी टिओपी 2 प्रभारी अनिल कुमार सिंह को दी। पैसा लेनदेन की मामला की जानकारी मिलने पर टिओपी 2 प्रभारी अनिल सिंह बकायदार हरेंद्र राम को थाना बुलाकर महिला को शुद्ध समेत 12000 हजार रुपया दिलाया। वहीं महिला उत्तम देवी ने बताया कि वह अपना बकाया पैसा हरेंद्र राम से मांगने के लिए अपने क्षेत्र के हर थाना में न्याय के लिए गई। परंतु उसका कोई भी थाना एक न सुना। इस नेक काम के लिए महिला उत्तम देवी ने अनिल कुमार सिंह का आभार व्यक्त किया है।

पर्यावरण धर्म के तहत ट्री मैन डॉ कौशल ने पौधा लगाकर किया कार्यक्रम का उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

छतरपुर (पलामू): छतरपुर अनुमंडल के ग्राम पंचायत डाली बाजार के कौशल नगर में नेशनल मोहनलाल खुर्जा पार्वती देवी पार्क सह जैविक उद्यान में बुधवार को विश्व व्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्म गुरु व वनराखी मूवमेंट के प्रणेता ट्री मैन डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने सरकार की ओर से आयोजित आपकी योजना, आपकी सरकार ,आपके द्वार कार्यक्रम में आए पदाधिकारी को थाईलैंड का आम का पौधा देकर उन्हें विदा किया। वहीं कार्यक्रम का शुभारंभ पर्यावरण धर्म के प्रार्थना के साथ थाईलैंड प्रजाति के बारहमासी आम के पौधा लगाकर किया गया। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल लोगों को पर्यावरण धर्म के 8 मूल ज्ञान मत्रों की शपथ भी दिलाई। उन्होंने कहा कि बढ़ते प्रदूषण व भीषण गर्मी व जल संकट को नहीं रोका गया तो एक दिन लोग डायनासोर की तरह विलुप्त हो जाएंगे । इससे बचने के लिए दुनिया के तमाम लोगों को अपना धर्म के साथ-साथ पर्यावरण धर्म के 8 मूल ज्ञान मंत्रों को अपनाना होगा । कौशल नगर बाजार प्रांगण में ट्री मैन डॉ कौशल,प्रखंड विकास पदाधिकारी आशीष कुमार, नोडल पदाधिकारी संजय प्रसाद, छतरपुर पूर्वी जिला पार्षद अमित कुमार जायसवाल , प्रखंड के बडाबाबू नवाब खान,सीडीपीओ शीला मैडम ,20 सूत्री अध्यक्ष गोपाल सिंह ,प्रमुख उर्मिला देवी,उप प्रमुख संतोष यादव, डाली पंचायत के मुखिया पूनम जायसवाल ,चराई के मुखिया रविंद्र राम सुपरवाइजर मनीषा कुमारी,उप मुखिया नगीना खातून पंचायत समिति सदस्य शहाबुद्दीन अंसारी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करने के बाद स्कूली बच्चों को पुस्तक और साइकिल वितरण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम लागये गये सभी स्टॉल से करीब 1267आवेदन प्राप्त किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डाली के मुखिया पूनम जायसवाल ने की जबकि संचालन छतरपुर पूर्वी से जिला पार्षद अमित कुमार जायसवाल ने किया । कार्यक्रम में सभी पदाधिकारी को पर्यावरण धर्म के तहत पर्यावरणविद डॉ कौशल , पार्षद अमित, व मुखिया पूनम जायसवाल ने शॉल ओढ़ाकर व विदाई में थाईलैंड जाति के बारहमासी आम का पौधा देकर सम्मानित किया। मौके पर सीआई हरि कुमार, आकाश जी, पूर्व उप मुखिया अफजाल अंसारी, सुचित कुमार जायसवाल, अल्पना जायसवाल विनोद राम, शमीम अंसारी, शिवनाथ राम, बाबूराम, विनोद यादव, नंदू विश्वकर्मा धर्मदेव यादव, श्रवण जायसवाल रामाअशीष राम जुबेर अंसारी, बृजमोहन सिंह, मोहिद्दीन अंसारी, शेर मोहम्मद आदि शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

हुसैनाबाद प्रखंड की चार महत्वपूर्ण सड़कों का हुआ शिलान्यास

मेदिनीनगर (पलामू): हुसैनाबाद प्रखंड की चार महत्वपूर्ण सड़कों देवरी मुख्य पथ से ग्राम कुसुआ, छतरपुर मुख्य पथ से बसडीहा, कचरा मुख्य मुख पथ का शिलान्यास के मौके पर हुसैनाबाद विधायक कमलेश कुमार सिंह ने कहा कि हुसैनाबाद हरिहरगंज की सभी सड़कों का निर्माण उन्होंने 2005 के कार्यकाल में कराने का काम किया था। उन सड़कों पर किसी जन प्रतिनिधि ने मरम्मत तक नहीं कराना उचित समझा। पुनः उन सड़कों का इस कार्यकाल में जीर्णोद्धार उन्होंने ही किया। यह जनता देख रही है। जिन कथित नेताओं को विकास नहीं दिख रहा है, उन्हें जनता दिखा देगी। उन्होंने कहा कि उन्होंने हुसैनाबाद हरिहरगंज की एक एक समस्या सड़क स्वास्थ्य बिजली शिक्षा के साथ साथ अनेक उल्लेखनीय कार्य किया है, जिसे गिनने में पूरा दिन लग जायेगा। अगर किसी ने उनसे पहले भी कुछ किया है, तो जनता की अदालत में प्रस्तुत कर सकते हैं। कमलेश की कथनी और करनी में अंतर नहीं होता है। उन्होंने कहा कि वह जात धर्म संप्रदाय की राजनीति में विश्वाश नहीं रखते हैं। सिर्फ क्षेत्र के विकास की राजनीति करते हैं। उन्होंने कहा कि विधानसभा क्षेत्र के 95 प्रतिशत समस्या का समाधान उन्होंने करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि आगे भी यह जारी रहेगा। कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि अजीत सिंह, योगेंद्र कुमार सिंह उर्फ गुड्डू सिंह, अभिषेक सिंह उर्फ हरी, सतेंद्र सिंह, ओम प्रकाश राजवंशी, बबिता सिंह, पप्पू सिंह गोरख पासवान,गुड्डु पाल, शिवलाल राम, रजनीश सिंह,विमलेश सिंह,विजय राजवंशी,राजू सिंह, हंसराज सिंह,सतेंद्र सिंह, रतन लाल,रजनीश मिश्रा,अपु सिंह,अजय सिंह,उपेंद्र राजवंशी,के अलावा बड़ी संख्या में लोग शामिल थे।

विश्वकर्मा पूजा और ईद मिलादुन्नबी को लेकर थाना में शांति समिति की हुई बैठक

कटकमसांडी : कटकमसाडी प्रखंड क्षेत्र के ओ पी पेलावल थाना में विश्वकर्मा पूजा और ईद मिलादुन्नबी पर्व के लेकर शांति समिति का बैठक पेलावल अंचल निरीक्षक बिनोद कुमार कि अध्यक्षता में आयोजित किया गया। विश्वकर्मा पूजा और ईद मिलादुन्नबी पर्व में थाना क्षेत्र में आपसी भाईचारा,सौहार्द पूर्वक, दोनों त्यौहार मनाने के लेकर क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, ने शांतिपूर्ण तरीके से पर मनाने का निर्णय लिया। इस संदर्भ में ओ पी पेलावल थाना प्रभारी शाहीना परवीन एवं अंचल निरीक्षक पदाधिकारी विनोद कुमार ने थाना क्षेत्र में राजनीतिक सामाजिक जन प्रतिनिधियों से अपील किया है कि त्यौहार में शांतिपूर्ण तरीके से पर्व को मनाए। शांति समिति बैठक में अंचल निरीक्षक पदाधिकारी विनोद कुमार, थाना प्रभारी शाहीना परवीन, राजस्व कर्मचारी अशोक पाण्डेय,चौकिदार अजय पासवान,अशोक राणा, नारायण साव, एजाज आलम, निसार खान, मनीष ठाकुर,मो सेराज,अजय साव,भोला राणा,मो एकलाख, गुलाम मोईनुद्दीन, इम्तियाज हुसैन,सबनम प्रवीण, दर्जनों लोगों उपस्थित थे।

चुनाव को लेकर पुलिस पदाधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड सभागार में चुनाव की तैयारी को लेकर बड़कागांव पुलिस अनुमंडल के पुलिस पदाधिकारियो का एकदिवसीय प्रशिक्षण का कार्यक्रम किया गया जिसमें बड़कागांव पुलिस अनुमंडल के अंतर्गत सभी थाना के थाना प्रभारी सहित पदाधिकारी उपस्थित थे।प्रशिक्षण में प्रशिक्षक के रूप में सर्किल इंस्पेक्टर अनिल कुमार थे। प्रशिक्षण में इंस्पेक्टर अनिल कुमार ने पुलिस पदाधिकारियो को चुनाव से संबंधित तैयारी और चुनाव से पूर्व अपराधियों को चिन्हित करने की बात कही। वही श्रीकुमार ने कहा कि यह प्रशिक्षण इसलिए हो रहा है कि चुनाव के पूर्व और चुनाव में पुलिस पदाधिकारी की भूमिका अहम होती है। जिसको लेकर सभी थाना प्रभारी अपने-अपने क्षेत्र में मुस्तैदी से कार्य करें। प्रशिक्षण में बड़कागांव थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल,गिद्दी थाना प्रभारी कुंदन कुमार,केरेडारी थाना प्रभारी अजीत कुमार,उरीमारी ओपी प्रभारी राजकुमार राम,डाडी कला ओपी प्रभारी पिंटू कुमार सहित बड़कागांव पुलिस अनुमंडल के सभी थाना के एएसआई, हवलदार सहित पुलिस के जवान उपस्थित थे।

किशोरी राणा ने किया फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन

हजारीबाग : नव झारखंड फाउंडेशन के तत्वाधान में दारू प्रखंड के हर्ली फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया गया 32 टीम के प्रतिभागियों ने भाग लिया। नव झारखंड फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष किशोरी राणा का आगमन हुआ। कार्यक्रम में श्री राणा ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा देश के कर्णधार हैं युवाओं में देशभक्ति की भावना का संचार होना समाज को एक अद्भुत अनुभूति देता है देश सेवा के लिए युवा दृढ़ और संकल्पित हो। युवा देश का ही नहीं विदेशों में भी भारत का प्रतिनिधित्व एवं परचम लहरा रहा है। तत पश्चात नव झारखंड फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष किशोरी राणा के द्वारा कुल 32 टीम के खिलाड़ियों के बीच जर्सी देकर मनोबल बढ़ाया गया। कर्यक्रम मे उपस्थित उमेश यादव, धनजय पांडेय, सतीश पांडेय जगदेव राणा, अनुज यादव, विक्की सिंह संजय,समीर, आदि कई लोग उपस्थित थे।

हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● शुक्रवार ● 13.09.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 55 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

सीताराम येचुरी का निधन, सीएम ने जताया शोक

रांची : सीपीआई नेता सीताराम येचुरी के निधन पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शोक जताया है। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एक्स हैंडल पर पोस्ट करके श्रद्धांजलि दी है। उन्होंने लिखा है कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) के महासचिव और वरिष्ठ नेता सीताराम येचुरी जी के निधन का समाचार सुनकर गहरा दु:ख हुआ। उनका जाना भारतीय राजनीति के लिए एक बड़ी क्षति है। वे एक कुशल राजनेता, विचारक और जनता के हितों के लिए समर्पित नेता थे। मरांग बुरु से दिवंगत आत्मा को शांति एवं उनके परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करने की कामना करता हूं।

हेमन्त सोरेन 24 को आयेंगे इटखोरी

चतरा : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन का आगामी 21 सितम्बर को चतरा जिले के इटखोरी में संभावित कार्यक्रम है। मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर पूरा महकमा तैयारी में लग गया है। आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत इटखोरी के भद्रकाली मैदान में 24 सितंबर 2024 को विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इसमें मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन बतौर मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में शामिल होंगे और लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण, योजनाओं का स्वीकृति पत्र समेत करोड़ो के विकास व जनकल्याणकारी योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन करेंगे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के उद्देश से आज उपायुक्त रमेश घोलप इटखोरी कार्यक्रम स्थल पहुंचे उन्होंने हेलीपैड स्थल, लोगों के आवागमन समेत अन्य आवश्यक तैयारियों को लेकर अधिकारियों को कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा सभी अधिकारी आपस में समन्वय बनाते हुए कार्य करें। इस मौके पर उप विकास आयुक्त पवन कुमार मंडल, अपर समाहर्ता अरविंद कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी सिमरिया सन्नी राज, अनुमंडल पदाधिकारी चतरा सुरेंद्र उरांव, जिला परिवहन पदाधिकारी इंद्र कुमार, डीएसपी मुख्यालय रोहित कुमार रजवार, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी चतरा संदीप सुमन, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी शकील अहमद, जिला नियोजन पदाधिकारी मन्नू कुमार व शशिकांत कुमार श्रीवास्तव समेत अन्य संबंधित उपस्थित थे।

हेमन्त सोरेन आज करेंगे मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की दूसरी किस्त का हस्तांतरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : लुगुबुरु घंटाबाड़ी धोरोम गाढ़ की पवित्र भूमि ललपनिया, बोकारो से मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन करम पर्व की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के तहत राज्य की 45 लाख से अधिक महिलाओं के बैंक खाता में दूसरी किस्त का हस्तांतरण करेंगे। इससे पहले विभिन्न चरणों में पहली किस्त का हस्तांतरण मुख्यमंत्री द्वारा किया जा चुका है। योजना का लाभ देने हेतु अबतक 48,15,048 महिलाओं का निबंधन हुआ है।45,36,597 महिलाएं सम्मान राशि से अबतक आच्छादित हुईं हैं। हर महीने की 15 तारीख तक हर बहन के खाते में सम्मान राशि भेजने का आदेश मुख्यमंत्री द्वारा दिया जा चुका है।

18 से 50 वर्ष की बहनों को मिलेगा लाभ

मुख्यमंत्री के आदेश और राज्य मंत्रिपरिषद की स्वीकृति के उपरांत अब राज्य की 18 से 20 वर्ष की बेटियों को भी झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना से जोड़ने की पहल शुरू हो चुकी है। जल्द इन्हें भी सम्मान राशि प्राप्त होने लगेगी। गौरतलब है कि इससे पहले तक 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को योजना से जोड़ने का प्रावधान था। तीन अगस्त 2024 से झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के लिए आवेदन लेना प्रारंभ हुआ। चार अगस्त 2024 को ऑनलाइन आवेदन जमा करने में आ रही परेशानी को मुख्यमंत्री ने दूर कर ऑफ लाइन आवेदन लेने का आदेश दिया। 18 अगस्त को पहली बार योजना के तहत पाकुड़ की 80 हजार से अधिक, 22 अगस्त को पलामू प्रमंडल के लातेहार, मेदिनीनगर और गढ़वा की 2.50 लाख से अधिक, 24 अगस्त को उत्तरी छोटानागपुर के रामगढ़, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, गिरिडीह, धनबाद और बोकारो जिला की 13 लाख 94 हजार से अधिक, 27 अगस्त को संताल परगना के देवघर, गोड्डा, पाकुड़, साहेबगंज, दुमका और जामताड़ा की 07 लाख 32 हजार से अधिक, 28 अगस्त को कोल्हान प्रमंडल के पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम और सरायकेला - खरसावां की 07 लाख 32 हजार से अधिक, 04 सितंबर को दक्षिणी छोटानागपुर के रांची, खूंटी, सिमडेगा, गुमला और लोहरदगा की 07 लाख से अधिक महिलाओं के बैंक खाते में 70 करोड़ 50 लाख रुपये का हस्तांतरण किया गया है।

मुख्यमंत्री से नाबार्ड के जीएम ने की मुलाकात

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से गुरुवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में झारखंड क्षेत्रीय कार्यालय नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक एसके जहागीरदार ने मुलाकात की। भेंट-वार्ता के क्रम में मुख्यमंत्री के समक्ष उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) राज्य में ग्रामीण आधारभूत संरचनाओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार एवं नाबार्ड के बीच जल्द एक मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (एमओयू) हस्ताक्षर कार्यक्रम आयोजित किए जाने को लेकर मुख्यमंत्री के साथ उनकी विस्तृत चर्चा हुई। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से एसके जहागीरदार ने कहा कि एमओयू हस्ताक्षर कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात नाबार्ड द्वारा प्राथमिकता के साथ राज्य में ग्रामीण आधारभूत संरचनाओं के विकास के लिए अतिरिक्त फंड उपलब्ध कराया जा सकेगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने 'नाबार्ड इन झारखंड' पुस्तक का विमोचन भी किया। इस पुस्तक में वित्तीय वर्ष 2023-24 में नाबार्ड द्वारा राज्य में किए गए विकास कार्यों का पूर्ण ब्यौरा समाहित है। मौके पर मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, झारखंड क्षेत्रीय कार्यालय नाबार्ड के महाप्रबंधक गौतम कुमार सिंह एवं अन्य उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री से दीपांकर भट्टाचार्य ने की मुलाकात

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से गुरुवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में भाकपा माले के केंद्रीय महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने मुलाकात की। इस अवसर पर राज्य में चल रहे विकासात्मक योजनाओं के कार्यान्वयन, जनहित से जुड़े कई अहम मुद्दे एवं राज्य की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा हुई। इस मौके पर विधायक विनोद सिंह, पूर्व विधायक अरूप चटर्जी, भाकपा माले के राज्य सचिव मनोज भक्त उपस्थित थे।

अगले हफ्ते झारखंड में राष्ट्रपति प्रधानमंत्री और गृह मंत्री का दौरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में अगले सप्ताह राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का झारखंड दौरा होने वाला है। इसे लेकर जिला प्रशासन व भाजपा की ओर से तैयारी शुरू कर दी गयी है। सरकारी कार्यक्रमों को लेकर जिला प्रशासन तैयारी कर रहा है। तो वहीं पार्टी की सभा को लेकर प्रदेश भाजपा की ओर से तैयारी चल रही है। सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 सितंबर को जमशेदपुर आ रहे हैं। वे इस दौरान 21 हजार करोड़ रुपये की विभिन्न विकास योजनाओं का उद्घाटन करेंगे। साथ ही वंदे भारत एक्सप्रेस की शुरूआत करेंगे। इस दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना के एक लाख से अधिक लाभुकों के खाते में दो-दो लाख की राशि जारी की जायेगी। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रदेश भाजपा की ओर से जमशेदपुर के गोपाल मैदान में आयोजित सभा के माध्यम से चुनावी शंखनाद करेंगे।

19-20 को रांची आएंगी राष्ट्रपति

वहीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 19-20 सितंबर को दो दिवसीय दौरे पर रांची पहुंच रही हैं। इस यात्रा के दौरान वे विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेंगी। 20 सितंबर को वह भारतीय लाह अनुसंधान संस्थान शताब्दी समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर हिस्सा लेंगी। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी मौजूद रहेंगे।

21 को गृह मंत्री आ रहे संताल

वहीं केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 21 सितंबर को संताल परगना पहुंच रहे हैं। वह भोगनाडीह से प्रदेश भाजपा के परिवर्तन संकल्प यात्रा की शुरूआत करेंगे। कार्यक्रम में भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ प्रदेश भाजपा के शीर्ष नेता मौजूद रहेंगे। इसके बाद 30 सितंबर तक भाजपा के केंद्रीय नेताओं का लगातार दौरा होना है। प्रदेश भाजपा इसे लेकर कार्यक्रम तैयार कर रही है।

एसीबी की छापेमारी में लाखों रुपये नकद जमीन की 11 डीड सहित कई सामान बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : बड़गाईं अंचल की जमीन के रिकॉर्ड में छेड़छाड़ से जुड़े मामले में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने दूसरे दिन गुरुवार को भी हजारीबाग एसडीओ शैलेश कुमार और बड़गाई के पूर्व सीओ एवं वर्तमान में चाईबासा के नोवामुंडी में पदस्थापित सीओ मनोज कुमार के ठिकानों पर छापेमारी की । रांची के राधा कृष्णा अपार्टमेंट में मनोज कुमार के दो फ्लैट मिले हैं, जिसकी जांच की गयी। जबकि शैलेश कुमार का रांची के चिरौंदी में एक आलीशान घर भी मिला है। गुरुवार की सुबह इन दोनों ही स्थानों पर एसीबी की टीम पहुंची और जांच की।

एसीबी के एसपी सादिक अनवर रिजवी ने बताया कि एसीबी की छापेमारी पूरी कर ली गयी है। उन्होंने बताया कि हजारीबाग एसडीओ शैलेश कुमार के आवास से जमीन संबंधी कुल 11डीड, गिरिडीह आवास से बरामद कुल नगद 18 लाख 10 हजार 500 रुपये नकद, धनबाद आवास से तीन लाख 98 हजार 662 रुपये, 11 मोबाईल दो लैपटॉप और एक टैब बरामद किया गया है। जबकि चाईबासा के नोवामुंडी में पदस्थापित सीओ मनोज कुमार के ठिकानों से धनबाद जिले से चार डिसमल जमीन से संबंधित कागजात, छह डिसमल जमीन का अन्य दस्तावेज,रांची में लगभग 1.02 करोड़ का एक डुप्लेक्स संबंधी दस्तावेज, एसबीआई का पास बुक और दो मोबाईल फोन बरामद किया गया है।

एसपी ने बताया कि एक जून को रांची के सदर थाना (कांड संख्या 272/2023) का अनुसंधान पूर्व में सीआईडी की ओर से किया जा रहा था। बाद में झारखंड सरकार ने भ्रष्टाचार के बिंदु पर इस केस की जांच एसीबी से कराने का आदेश दिया। सरकार के आदेश पर एसीबी ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। इसके बाद एसीबी के न्यायालय को को विधिवत सूचित करते हुए वर्तमान में इसका अनुसंधान एसीबी कर रही है।

प्रधानमंत्री ने पदक जीतने वाले पैरा-एथलीटों से की मुलाकात

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को नई दिल्ली में अपने आवास पर पेरिस पैरालंपिक-2024 में ऐतिहासिक 29 पदक जीतकर भारत को गौरवान्वित करने वाले पैरा-एथलीटों से मुलाकात की। एक घंटे से अधिक समय तक चली इस बैठक के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने पैरा-एथलीटों से बातचीत की और पेरिस में उनकी सफलता की कहानियां सुनी। उल्लेखनीय है कि भारत ने ऐतिहासिक पैरालंपिक अभियान में 29 पदक (7 स्वर्ण, 9 रजत, 13 कांस्य) जीते, जो 2021 में टोक्यो में जीते गए 19 पदकों के अपने पिछले सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से बेहतर है। पेरिस में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एसएच1 स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाली निशानेबाज अवनी लेखरा ने प्रधानमंत्री मोदी को एक हस्ताक्षरित टी-शर्ट भेंट की। प्रधानमंत्री को भेंट की गई टी-शर्ट के पीछे लिखा था, आपके समर्थन के लिए धन्यवाद सर। प्रधानमंत्री मोदी ने पदक विजेता के पदक पर हस्ताक्षर भी किये। प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद तीरंदाजी में पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता हरविंदर सिंह ने कहा, मैंने प्रधानमंत्री मोदी को अपना तीर उपहार में दिया, जिसका इस्तेमाल पैरालंपिक में किया गया था। प्रधानमंत्री मोदी ने हमें बहुत प्रेरित किया और उन्होंने हमारी टीम को बधाई दी। वहीं महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एसएच1 स्पर्धा में पैरालंपिक कांस्य पदक विजेता मोना अग्रवाल ने कहा, प्रधानमंत्री के साथ हमने कई मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने हमसे व्यक्तिगत रूप से बात की। मैं हमेशा से प्रधानमंत्री मोदी से व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहती थी और अब मुझे यह अवसर मिला है। उन्होंने मेरे बच्चों और मेरे परिवार के बारे में पूछा। यह वास्तव में अच्छा लग रहा है कि देश के प्रधानमंत्री हमारे परिवारों के बारे में बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।

रांची में बगैर नक्शा स्वीकृति के चल रहे रूफ टॉप बार एवं रेस्टोरेंट का संचालन बंद करें : हाई कोर्ट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने खूंटी में अफीम की फसल को नष्ट करने एवं झारखंड में अफीम, चरस, गांजा आदि ड्रग्स के कारोबार में लगातार वृद्धि पर झारखंड हाई कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। इस पर गुरुवार को सुनवाई हुई। हाई कोर्ट ने रांची नगर निगम से मौखिक कहा कि राजधानी रांची में बगैर मैप स्वीकृति के चल रहे हैं रूफ टॉप बार एवं रेस्टोरेंट को तत्काल बंद करें। हाई कोर्ट की खंडपीठ ने रांची नगर निगम से मौखिक कहा कि लालपुर क्षेत्र में कई रूफटॉप बार एवं रेस्टोरेंट चल रहे हैं। इसके लिए उन्होंने मैप की स्वीकृति भी नहीं ली है, रूफटॉप बार एवं रेस्टोरेंट पर अंकुश लगाकर रांची नगर निगम एक्शन टेकन रिपोर्ट कोर्ट में प्रस्तुत करे। सुनवाई के दौरान कोर्ट को बताया गया कि रांची में अधिक संख्या में रूफ टॉप बार रेस्टोरेंट चल रहे हैं, इन्हे बंद किया जाय। कोर्ट ने मौखिक कहा की रांची के हरमू रोड स्थित द कावस रेस्टोरेंट के पास पार्क में गांजा, अफीम, चरस जैसे मादक पदार्थों की बिक्री होती है, इसे रोका जाए। रांची नगर निगम की ओर से अधिवक्ता एलसीएन शाहदेव ने पैरवी की।

कोर्ट ने झारखंड राज्य आवास बोर्ड के अधिवक्ता को कावस रेस्टोरेंट के पास पार्क को रांची नगर निगम को दो सप्ताह में हस्तांतरित करने का निर्देश भी दिया है, ताकि रांची नगर निगम द्वारा यहां जल्द से जल्द टेंडर कर पार्क का सौंदर्यीकरण संभव हो सके। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 25 सितंबर निर्धारित की है। इससे पहले महाधिवक्ता राजीव रंजन ने कोर्ट को बताया कि रांची सहित पूरे राज्य में गांजा, अफीम जैसे मादक पदार्थ की बिक्री रोकने को लेकर अभियान चल रहा है। प्रतिदिन मादक पदार्थों के तस्कर पकड़े जा रहे हैं। कोर्ट ने सरकार को अफीम, चरस और गांजा जैसे मादक पदार्थों के सौदागरों के खिलाफ कड़ा एक्शन लेने का निर्देश दिया है।

हाई कोर्ट से मंत्री इरफान अंसारी को झटका

रांची : झारखंड हाई कोर्ट से राज्य सरकार के मंत्री डॉ. इरफान अंसारी को बड़ा झटका लगा है। अदालत ने सुनवाई के बाद गुरुवार को उनकी उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने दुमका सिविल कोर्ट द्वारा चार्ज फ्रेम किये जाने को चुनौती दी थी। याचिका खारिज होने के बाद अब ट्रायल कोर्ट इस मामले की सुनवाई शुरू करेगा। इरफान अंसारी की याचिका पर हाई कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अरुण कुमार राय की कोर्ट में सुनवाई हुई। इरफान अंसारी की ओर से अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा ने बहस की। दरअसल, साल 2018 में दुष्कर्म की शिकार हुई एक बच्ची की फोटो अस्पताल से वायरल होने के मामले में इरफान अंसारी के खिलाफ अदालत ने संज्ञान लिया था। इस मामले में इरफान अंसारी के खिलाफ जामताड़ा थाना में केस दर्ज किया गया था, जिसमें आरोप लगाया गया था कि विधायक इरफान अंसारी के मोबाइल से बच्ची का फोटो वायरल हुआ। दुमका के एमपी-एमएलए कोर्ट में इस मामले की सुनवाई चल रही है। दुमका सिविल कोर्ट ने 21 दिसंबर 2022 में इरफान अंसारी के खिलाफ चार्जफ्रेम किया था।

चुनाव में भाजपा की अंतिम यात्रा निकालेगी जनता : सुप्रियो भट्टाचार्य

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के महासचिव और प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि अगले सप्ताह की शुरूआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के झारखंड दौरे से होगी। वे 15 सितंबर को झारखंड आ रहे हैं। सुप्रियो ने कहा कि ये भी पता चला कि वे झारखंड को कई सौगात भी देंगे। इसके बाद राज्य में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का दौरा होगा। वह सबसे लंबे समय तक राज्य का राज्यपाल रह चुकी हैं। उन्होंने कहा कि उनके रहते राज्य के आदिवासियों और मूलवासियों के लिए कुछ ऐसे कदम उठाये गये, जिसकी वजह से यहां की जनता ने साल 2019 में भाजपा सरकार को सबक सिखा दिया। राष्ट्रपति भी 19 और 20 तारीख को झारखंड आयेंगी।

सुप्रियो ने कहा कि नामकुम स्थित लाह उत्पादन केंद्र के रिसर्च विंग का यह स्वर्ण जयंती साल है। राष्ट्रपति इसी के समारोह में शामिल होंगी। वहीं, 21 सितंबर को को गृहमंत्री अमित शाह भी झारखंड आ रहे हैं। वो संथाल में सभाएं करेंगे।

उन्होंने कहा कि इन तीनों का विजिट ऐसे समय में हो रहा है, जब यहां की सरकार, यहां के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, यहां के प्रशासनिक अफसर आदिवासी और मूलवासियों की समस्या के समाधान के लिए उनके दरवाजे तक जा रहे हैं। हमारे कार्यकर्ता लोगों के साथ संपर्क बनाये हुए है।

भट्टाचार्य गुरुवार को हरमू स्थित पार्टी कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जो जानकारी है, उसके अनुसार 21 तारीख को कई राज्य के मुखिया भी झारखंड आयेंगे। कई केंद्रीय मंत्री यहां आयेंगे। लगता है चुनाव तक पूरी मोदी कैबिनेट यहीं बैठेगी। उन्होंने कहा कि झारखंड की जितनी यात्रा भाजपा के नेता कर लें, चुनाव में झारखंड की जनता इनकी अंतिम यात्रा निकालेगी। जब भी चुनाव होगा, उसमें भाजपा की अंतिम यात्रा तय है। वहीं कथित घुसपैठिया मुद्दे पर सुप्रियो ने कहा कि अगर घुसपैठ हुई है तो इसके लिए केंद्र का गृह मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय सीधे तौर पर जिम्मेदार है। क्योंकि सीमा सुरक्षा का मामला इन्हीं के जिम्मे है।

एक नजर

मारपीट व गोलीबारी के मामले में बरोरा थाना में कांड दर्ज

धनबाद : बरोरा क्षेत्र के फुलारीटांड़ पैच मे संचालित संजय उद्योग आऊटसोर्सिंग कंपनी मे कार्यरत कर्मियो के साथ गोलीबारी के मामले में डोजर ऑपरेटर मोदीडीह निवासी राकेश कुमार के लिखित शिकायत पर बरोरा पुलिस ने कांड अंकित कर लिया है। पुलिस ने शिकायत के आलोक में अपर मंदरा निवासी शंकर बेलदार,विमल पासवान, माथाबांध निवासी नीरज चौहान, खोखीबीघा निवासी अनीश चौहान,शनि चौहान,प्योर बरोरा निवासी मनोज चौहान व मंदरा निवासी डिगन चौहान पर गाली गलौज करते हुए मारपीट कर जख्मी करने, रंगदारी ,धमकी सहित 27 अमर्स एक्ट के तहत कांड अंकित कर जांच पड़ताल शुरू कर दिया है।

जानलेवा हमला के आरोपी रिहा

बोकारो : बोकारो के प्रथम जिला एवम सत्र न्यायाधीश पवन कुमार की अदालत ने जानलेवा हमला कर घायल करने के आरोपी माराफारी निवासी आदित्य कुमार उर्फ आदित्य कुमार चौबे, सौरभ कुमार, रोहित कुमार मिश्रा को सबूत के अभाव में रिहा कर दिया। सूचक ने माराफारी थाना में दिनांक 15 .07 .2020 को आवेदन देकर कहा था कि क्रिकेट खेलने के दौरान आरोपियों ने जानलेवा हमला कर दिया था जिससे वह घायल हो गया था उसका इलाज बोकारो जेनरल अस्पताल में हुआ था। विचारण के पश्चात सत्र वाद संख्या 384/22 में न्यायलय ने आरोपीयो को साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया। आरोपी आदित्य चौबे एवम अन्य की ओर से युवा अधिवक्ता रणजीत गिरि ने जोरदार बहस करते हुए कहा की आरोपी के खिलाफ कोई पुख्ता सबूत नहीं है। पुलिस बेवजह निर्दोष को अपराधी बनाने पर तुली हुई है। दोनों पक्षों का बहस सुनने के बाद न्यायलय ने आरोपीयो को रिहा कर दिया।

फांसी के फंदे पर लटकता मिला युवक का शव

लोहरदगा : कुडू थाना क्षेत्र के चीरी बरवाटोली गांव के समीप से पुलिस ने गुरुवार को एक युवक का शव संदिग्ध हालात में फांसी के फंदे से झुलता बरामद किया गया। युवक के परिजन जहां युवक की हत्या का आरोप लगा रहे हैं तो होने वाले ससुराल के लोग इसे आत्महत्या बता रहें हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है। बताया जाता है कि लोहरदगा सदर थाना क्षेत्र के खाजा गुलजार नगर निवासी मजबुल अंसारी के बीस वर्षीय पुत्र दानिश अंसारी बुधवार की शाम पिकअप वाहन लेकर कुडू थाना क्षेत्र के चीरी बरवाटोली गांव आया हुआ था। दानिश अंसारी की शादी चीरी बरवाटोली गांव में तय हुई थी साथ ही शादी की रश्म के मौके पर मंगनी व छेका हो चुका था अगले माह शादी होने वालीं थी। दानिश अंसारी का शव सुबह ग्रामीणों ने पेड के फंदे से झुलता देखा इसके बाद सुचना दी गई। दानिश के होने वाले ससुराल के लोग पहुंचे तथा दानिश के परिवार वालों को सूचना दी। दानिश के पिता तथा अन्य गांव के लोग पहुंचे। मृतक के परिजनों का आरोप है कि दानिश की गला दबाकर हत्या करने के बाद शव को पेड़ से लटकाते हुए आत्महत्या का रूप देने के लिए पेड़ पर टांगा गया है। दूसरी तरफ दानिश के होने वाले ससुराल के लोगो ने बताया कि रात में दानिश घर पहुंचा था खाना खाने के बाद रात में अपने घर जाने की बात कहकर निकला था। इसके बाद क्या हुआ कुछ पता नहीं चल पाया। सुबह ग्रामीणों ने बताया कि एक युवक पिकअप वाहन को लगाकर पेड़ में फांसी लगाया है।

स्वस्थ दृष्टि सृष्टि की सुंदरता का आधार : राजेंद्र सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : क्रांतिकारी इस्पात मजदूर संघ (एचएमएस) के प्रधान कार्यालय जनवृत 09 में अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय के विशेषज्ञ चिकित्सकों के सहयोग से नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जाँच शिविर में पत्रकारों को संबोधित करते हुए संघ के महामंत्री सह सदस्य एनजेसीएस श्री राजेंद्र सिंह ने कहा कि बोकारो के पृष्ठभूमि मूलतः औद्योगिक है। प्लांट में कार्य करने के दौरान हम ताप, डस्ट एवं विभिन्न प्रकार के गैस को ग्रहण करते हैं जिससे कई प्रकार की बीमारियां हो सकती है। हम जानते हैं की जाँच ही उपचार है हमें छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, नियमित स्वास्थ्य जांच अवश्य कराना चाहिए । यूनियन समय-समय पर बोकारो वासियों एवं मजदूर साथियों के लिए मेडिकल कैंप का आयोजन करती रही है।इसी क्रम में आज निःशुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर का उद्देश्य विशेषज्ञ चिकित्सकों के द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए निःशुल्क नेत्र जाँच की सुविधा प्रदान करना है ताकि उन्हें अपनी आंखों की देखभाल करने एवं संभावित समस्याओं का पता लगाने में मदद मिल सके। शिविर में अनुभवी नेत्र विशेषज्ञों के द्वारा नेत्र जाँच की जाएगी और आवश्यक उपचार के सुझाव दिए जाएंगे।हम धन्यावाद देना चाहते हैं अग्रवाल नेत्रलाय के उपस्थित चिकित्सकों एवं टेक्निशियन टीम का जिन्होंने हमारे निवेदन को स्वीकार करते हुए निःशुल्क जाँच शिविर में अपना बहुमूल्य समय दिया। जांच शिविर के सफल आयोजन में अग्रवाल नेत्रालय के चिकित्सक डॉ अनूप कुमार ठाकुर, टेक्निशियन विनय कुमार, मुकेश कुमार , टेक्निशियन जयराम गोप और संघ की ओर से आरके सिंह, शशि भूषण, राजेश महतो, अखिलेश सिंह, हरि नारायण सिंह, चंद्र प्रकाश, सुशील कुमार, सुनील कुमार की भूमिका प्रमुख रही।

पेट्रोल पंप में तेल भराकर भाग रहे युवकों ने की चाकूबाजी, तीन धराये

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सेक्टर 4 जय जवान पेट्रोल पंप पर गुरुवार को पौने आठ बजे सुबह 3 अपराधी प्रवृत्ति के लड़के बाइक संख्या जेएच 090 सी 6455 से पेट्रोल लेने पंप पर पहुंचे वह और 100 का पेट्रोल लिया। पेट्रोल लेने के बाद वह फरार होने लगे तो पंप कर्मचारी पप्पू ने उसे पीछे से पकड़ लिया। तीनों लड़कों की मंशा थी कि पेट्रोल मुफ्त में लेकर भाग जाने की । पर कर्मचारी ने तुरंत इसे भांप लिया और गाड़ी को पीछे से पकड़ कर रोक लिया। लड़कों ने देखा कि अब भगाने का कोई चान्स नहीं है तो तीनों लड़कों में से एक लड़का ने कर्मचारी पे चाकू से हमला कर दिया। चाकू का वार ऐसा था कि कर्मचारी अगर पीछे नहीं हटता तो उसको पेट को चीरते हुए निकल जाता जिससे उसकी जान भी जा सकती थी। कर्मचारियों की सतर्कता के कारण चाकू पेट में न लग के हाथ में लगी जिससे पप्पू का हाथ पूरी तरह जख्मी हो गया । फिर भी वह तीनों को भागने में सफल नहीं होने दिया। तब तक अन्य सहयोगी पहुंचकर तीनों लड़कों को पकड़ कर अपने कब्जे में ले लिया । इसकी सूचना सेक्टर 4 थाने को दी गई ।मौके पर पहुंचे पुलिस तीनों को अपने हिरासत में ले लिया। पकड़े गए तीनों युवक में से एक सेक्टर 1 के झोपड़ी के निवासी है जिसका नाम गोलू बताया जा रहा है । वही तीन कुछ देर पहले सेक्टर 1 में 12 हनुमान नगर निवासी अभय कुमार का पर्स और मोबाइल छीन के भागे थे। वे अपनी चचेरी बहन को स्टेशन से छोड़ने सेक्टर 1 गए हुए थे।

बेरोजगारी दूर करने के लिये झामुमो कटिबद्ध : मुकेश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : हेमंत सरकार ने गरीब व जरूरतमंदों के लिये मईया सम्मान योजना,बकाया बिजली बिल की माफी सहित 36 लाभकारी योजना चला रही है। उक्त बातें झामुमो के जिला उपाध्यक्ष मुकेश सिंह ने अंगारपथरा में कृष्णा लाला के आवासीय कार्यालय में मिलन समारोह के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुये कहा, सिंह ने कहा कि ये सरकार पूरी शक्ति के साथ पुनः सरकार बनायेगी।ये गरीब के हितकर सरकार है,जिसे 42 लाख महिलाओं को मईया सम्मान योजना का लाभ अभी साल में 12 हजार व पुनः सरकार बनने के बाद 1 लाख रुपये देने की योजना धरातल पर उतरेगी। जिसका सीधा लाभ चुनाव में झामुमो को मिलेगा। कार्यक्रम के दौरान कृष्णा लाला के नेतृत्व में दर्जनों युवा ने झामुमो का दामन थामा। पार्टी ने कृष्णा लाला को युवा प्रवक्ता का पद दिया, लाला ने कहा कि जो विधायक के साथ सटा उसे झूठा केश में फसाया। युवा जिला अध्यक्ष सूरज चौहान ने कहा कि पार्टी जल्द ही एक बड़े कार्यक्रम की तैयारी में है,जिसे सरकार की योजनाओं को जन जन तक पहुचाने का कार्य किया जायेगा। मौके पर युवा मोर्चा प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप वर्मा, पूर्व प्रखंड सचिव रंजीत महतो, पार्टी में शामिल होने वाले मे रंजीत गुप्ता, अमर पासवान, अवधेश पासवान, सोनू खान, बिट्टू खान, भोला कुमार, चितरंजन पासवान, सुमित यादव, अजित सिंह,जीतु तुरी, निसार खान, अरमान अंसारी, अमन सिन्हा, शैल खान,धनंजय विश्वकर्मा, सुरेश,गुल्लू हाडी, बोना खान, अतीक खान सहित अन्य ने झामुमो का दामन थामा। जिसे मुकेश सिंह ने माला पहनाकर स्वागत किया। मौके पर झामुमो के जिला उपाध्यक्ष मुकेश सिंह, उमेश कुमार राम, सूरज चौहान,राजन सिंह, मो इम्तियाज, कृष्णा लाला, मुकेश गुप्ता, कांग्रेस नेता बुचुन सिंह सहित अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन पूर्व प्रखंड सचिव रंजीत महतो ने किया।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो का लोयाबाद में हुआ जोदार स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

तेतुलमारी : लोयाबाद में झारखंड कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश का जोदार स्वागत हुआ। सभा को सम्बोधित करते हुए केशव महतो ने कहा कि इस विधानसभा चुनाव में हम पिछले चुनाव का बदला लेंगे। बाघमारा व और खूंटी विधानसभा चुनाव में भाजपा दोनों सीटो को झिलफिला कर अपने नाम कर लिया। इसबार हम ऐसा नही होने देंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओ से आह्वान करते हुए कहा कि इस बार चुनाव व काउंटिंग डटकर करवना है। जिलाध्यक्ष संतोष सिंह को जिम्मेदारी देते हुए कहा कि बूथ लेबल को मजबूत बनाने के लिए सच्चे व निष्ठावान समर्पित कांग्रेसी कार्यकताओं को बूथ की जिम्मेदारी देने का काम करेंगे। और जब काउंटिंग हो तब, भी पूरा काउंटिंग खत्म होने तक वहां डेट रहे। वरना भाजपा फिर खेला कर देगा। उन्होंने बूथ लेबल पर महिलाओं को भी जोड़ने की बात कही। कहा की आप बूथ जीतेंगे आपकी सरकार बनेगी। केशव महतो ने आगे कहा कि देश आजाद कराने वाले कांग्रेस के नेताओं की बलिदान देश कभी नही भूल पायेगा। इंद्रा गांधी के सीने को गोली से छलनी कर दी गई। इस देश ने राजीव गांधी को खो दिया। जब सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनने की बारी आई तो,उन्होंने एक सच्चे व बड़े अर्थ शास्त्री को देश की गद्दी पर लाकर बैठा दिया।नेहरू जी के ये वो परिवार हैं। जिसने सिर्फ भारत देश के लिए सोचा। इतने कुबार्नी देने वाले परिवार को उसके बाद भी भाजपाई लोगो द्वारा आलोचना की जाती है। उन्होंने झारखंड के हेमंत सरकार की भी प्रशंसा की,कहा कि हम चुनाव के लिए तैयार है। मिलकर चुनाव लड़ेंगे,और फिर से झारखंड में सरकार बनाएंगे। केशव महतो ने कार्यकारी अध्यक्ष जलेश्वर महतो एवम रामरहीम की प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वागत व सम्मान से मेरा मन गदगद हो गया।ढाई हजार बाइक जुलुश से स्वागत व नारे लगाते हुए मुझे लोयाबाद के इस इत्तेहासिक हटिया मैदान में लाया गया। मैं तमाम कार्यकर्ताओ का आभार व्यक्त करता हूँ। इससे पहले मंच पर 51 किलो के माला पहनाकर,शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस दौरान मंच बैठे सभी नेताओं को बारी बारी से स्वागत किया गया। पूर्व मंत्री जलेश्वर महतो ने कहा कि केशव महतो के प्रदेश अध्यक्ष बनने पर केंद्रीय नेतृत्व का आभार प्रकट करते है।कहा कि बाघमारा विधानसभा पूरे झारखंड में वैसे है जहां नीति की लड़ाई नही होती है।

कांग्रेसियों ने किया प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत

धनबाद : संवाद सम्मेलन में शामिल होने जा रहे झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नवनियुक्त अध्यक्ष केशव महतो कमलेश का गुरुवार को बालीडीह टोल प्लाजा पर कांग्रेसियों ने भव्य स्वागत किया। स्वागत कार्यक्रम का नेतृत्व प्रदेश कांग्रेस सचिव निजाम अंसारी ने किया। इस दौरान कांग्रेसी कार्यकताओं में उत्साह का माहौल था। प्रदेश अध्यक्ष के साथ काफिले में झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग के अध्यक्ष अभिलाष साहू एवं प्रवक्ता परवेज आलम भी शामिल थे। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कांग्रेस के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकताओं को आगामी विधानसभा चुनाव के लिए युद्ध स्तर कार्य करने का निर्देश दिया। स्वागत कार्यक्रम में मुख्य रूप से महेश सिंह, बैद्यनाथ जायसवाल, रवि झा, ध्रुव कुमार, लेखरा मांझी, रवि प्रजापति, जगदीश यादव, फसी रहमान, प्रदेश कांग्रेस कमेटी ओबीसी विभाग के मीडिया प्रभारी कैशफ राजा, गुलाम हसन, अजीम अंसारी सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

20 को 1 से 19 वर्ष के बच्चों को खिलाई जाएगी एल्बेंडाजोल की गोली

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम के तहत 20 सितंबर को जिले में 1 से 19 वर्ष के 4 लाख 73 हजार 258 बच्चों को एल्बेंडाजोल की गोली खिलाई जाएगी। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस को लेकर बृहस्पतिवार को समाहरणालय के सभागार में सिविल सर्जन डॉ चंद्रभानु प्रतापन की अध्यक्षता में जिला टास्क फोर्स की बैठक एवं उन्मुखीकरण सह प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सिविल सर्जन ने कहा कि 20 सितंबर को सभी आंगनवाड़ी केंद्र एवं स्कूल में 1 से 19 वर्ष के बच्चों को गोली खिलाई जाएगी। वहीं 27 सितंबर को मॉप अप दिवस पर छूटे हुए बच्चों को गोली खिलाई जाएगी। जिले में 1 से 5 वर्ष के 1,22,691 तथा 6 से 19 वर्ष के 3,50,567 बच्चे हैं। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं शिक्षक अपने सामने बच्चों को एल्बेंडाजोल की गोली खिलाएंगे। छोटे बच्चों को दवाई का चूरा करके गोली खिलाई जाएगी। बड़े बच्चों को अच्छी तरह से चबाकर गोली खाने के लिए कहेंगे। अच्छी तरह चबाकर गोली नहीं खाने से उसका प्रभाव कम हो जाता है। वहीं बीमार बच्चों को गोली नहीं खिलाई जाएगी। डिवर्मिंग के लाभ पर प्रकाश डालते हुए सिविल सर्जन ने कहा कि इससे रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य पोषण में सुधार होता है। एनीमिया में नियंत्रण होता है। बच्चों के वयस्क होने पर काम करने की क्षमता में बढ़ोतरी होती है। वहीं कृमि का संक्रमण होने से दस्त, पेट में दर्द, कमजोरी, उल्टी और भूख न लगना सहित कई लक्षण हो सकते हैं। बच्चों के आंत में कृमि की मात्रा जितनी अधिक होगी संक्रमण के उतने ही अधिक लक्षण होंगे। हल्के संक्रमण वाले बच्चों में आमतौर पर कोई लक्षण नहीं दिखते हैं। कृमि संक्रमण का इलाज एल्बेंडाजोल का उपयोग करके किया जा सकता है।बैठक में सिविल सर्जन डॉ चंद्रभानु प्रतापन, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अनीता कुजूर, निदेशक डीआरडीए राजीव रंजन, जिला आर.सी.एच पदाधिकारी डॉ रोहित गौतम, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ सुनील कुमार, सिटी अर्बन हेल्थ मैनेजर गौतम कुमार सिंह के अलावा सभी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, महिला पर्यवेक्षिका व स्वास्थ्य विभाग से जुड़े कर्मी मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

रणविजय सिंह ने सिजुआ से निकाला विशाल जुलूस

धनबाद : बिहार जनता खान मजदूर संघ के केंद्रीय कार्यालय सिजुआ मोड़ से संघ के महामंत्री सह प्रदेश कांग्रेस के रणविजय सिंह ने विशाल मोटरसाइकिल जुलूस लेकर कपूरिया के लिये रवाना हुआ, श्री सिंह ने कहा कि कॉग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष के स्वागत के लिये पूरे लाव लश्कर के साथ रवाना हुई,उन्होंने कहा कि पुनः झारखंड में इंडिया गठबंधन की सरकार बनाने के लिये प्रदेश अध्यक्ष का आज आगमन हुआ है। जुलूस में मुख्य रूप से बालेश्वर पाठक,रमेश सिंह,उपेन्द्र प्रजापति,छोटु सिंह,सत्येन्द्र सिंह, मो आजाद, महेश सिंह, सुदर्शन चौहान ,पवन प्रसाद,महेश साव, पंचू सिंह, सुबोध सिंह,मुस्तकीम,आनंद सिंह,बी के मिश्रा,भोला शर्मा,चुनमुन सिंह, राजेश सिंह,सोनू झा, आकाश सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

विधायक ने छातबाद निवासी कैंसर से पीड़ित के परिजन को सौंपा 50 हजार का चेक

धनबाद : आर्थिक रूप से कमजोर गंभीर रोग मुंह कैंसर से ग्रसित छातबाद निवासीमो चांद पिता मो . सलीम ने इलाज केलिए टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो से मिलकर सहयोग की अपील की थी। पीड़ित मो . चांद ने गुहार लगाते हुए कहा कि मेरी मेरी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर है। इलाज कराने में असमर्थ है। फिलहांल कोलकाता के द डैनी नर्सिंग होम में चल रहा है। जिसके उपरांत विधायक श्री महतो झारखंड से सहयोग राशि उपलब्ध कराने के लिए अनुसंशा किया। जिसके बाद विधायक श्री महतो छातबाद अटल क्लिनिक छातबाद के हॉल में पीड़ित मो . चांद की माता के हाथों में 50 हजार रुपये का चेक सौपे। मौके पर महतो के साथ वार्ड संख्या 2 के पार्षद प्रतिनिधि मासूम खान, डा . सुनील कुमार, मनोज महतो, बाबू नाथ महतो, बसंत महतो, आनंद महतो, रिंकू अंसारी, मो . शमीम, विकास कुमार लाला, गुलरैज अंसारी, रहमान अंसारी, मो . जॉनी, मो . नदीम, पिंकू अंसारी, बबलू खान, कमाल सिद्दीकी, मो . परवेज इकबाल, लाल कुमार, सागर कुमार आदि मौजूद थे।

मुख्यमंत्री के बोकारो आगमन को लेकर तैयारी पूरी

बोकारो : गोमिया प्रखंड के ललपनिया फुटबॉल मैदान में आयोजित जिला स्तरीय आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में होंगे शामिल गोमिया प्रखंड के फुटबॉल मैदान ललपनिया में जिला स्तरीय आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों का गुरुवार को डीआइजी कोयला प्रक्षेत्र श्री सुरेंद्र झा, उपायुक्त विजया जाधव, रामगढ़ उपायुक्त चंदन कुमार एवं पुलिस अधीक्षक बोकारो पूज्य प्रकाश, पुलिस अधीक्षक रामगढ़ डा. विमल कुमार आदि ने जायजा लिया। उनके साथ उप विकास आयुक्त गिरिजा शंकर प्रसाद, डीआरडीए निदेशक मेनका, अपर नगर आयुक्त अनंत कुमार, एसडीओ बेरमो अशोक कुमार समेत जिला स्तरीय पदाधिकारीगण आदि उपस्थित थे। पदाधिकारियों ने क्रमवार कार्यक्रम स्थल पर जर्मन हेंगर,विभिन्न स्टाल, विभिन्न पार्किंग स्थलों, आमजनों के प्रवेश निकासी, स्टेज आदि स्थलों का निरीक्षण किया। द्वय पदाधिकारियों ने संबंधित विभागों के वरीय पदाधिकारियों से विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की और सबंधित अधिकारियों को कई दिशा निर्देश दिया। कहा कि जिसे जो दायित्व दिया गया है उसका सही से अनुपालन करेंगे। कहीं कोई चूक नहीं हो, इसे सुनिश्चित करेंगे। मौके पर वरीय पदाधिकारियों ने प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी एवं दंडाधिकारियों का संयुक्त ब्रिफिंग किया और जरूरी दिशा निर्देश दिया। 52594 .26 लाख की योजना का माननीय मुख्यमंत्री करेंगे उद्घाटन एवं शिलान्यास माननीय मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन शुक्रवार को फुटबॉल मैदान ललपनिया में आयोजित कार्यक्रम में जिले से संबंधित 525 करोड़ 94 लाख 26 हजार की योजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास करेंगे। जिसमें 74 करोड़ 34 लाख 64 हजार रुपये की योजनाओं का उद्घाटन एवं 451 करोड़ 59 लाख 62 हजार रुपए की योजनाओं का शिलान्यास शामिल हैं। मौके पर अपर समाहर्ता मो . मुमताज अंसारी, जिला परिवहन पदाधिकारी श्रीमती वंदना सेजवलकर, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी श्री साकेत कुमार पांडेय, जिला सहकारिता पदाधिकारी श्रीमती स्वेता गुड़िया, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा पीयूष आदि उपस्थित थे।

बेरमो विधानसभा

बेरमो में शांतिपूर्ण ढंग से रायशुमारी

बोकारो : आगामी बेरमो विधानसभा चुनाव को लेकर बुधवार को भाजपा पार्टी द्वारा आहुत संभावित प्रत्याशी के लिए रायशुमारी शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो गई। इस रायशुमारी में बतौर पर्वेक्षक गोड्डा विधायक अमित मंडल उपस्थित रहे। इस रायशुमारी में बेरमो विधानसभा अंतर्गत चंद्रापुरा, अंगबाली, फुसरो, बेरमो व जरीडीह मंडल सहित जिला भाजपा के पदाधिकारियों ने अपना मंतव्य दिया। जिसमें कुल 453 मत गिरे। इसमें चुद्रपरा में 69, अंगबाली में 64, फुसरो में 78, बेरमो में 117 व जरीडीह में 125 मत पड़े। रूक्षानों के अनुसार पुर्व गिरिडीह सांसद रविन्द्र कुमार पांडे, पुर्व बेरमो विधायक योगेश्वर महतो बाटुल व भाजपा कार्यकर्ता प्रकाश सिंह को तीन डिजिट में मत प्राप्त करने की संभावना जताई जा रही है। वहीं इन तीनों में से किसी को भी पांचों मंडल में एक तरफा बढ़त मिलने की रुझान नहीं दिखी। अन्य संभावित नामों में लक्षमण नायक, गिरिजा देवी, मनोज ठाकुर, अर्जुन सिंह, भरत यादव सहित दर्जनों को दो डिजिट में मत मिलने की बात कही जा रही है। प्रदेश भाजपा मुख्यालय के सुत्रों के अनुसार पार्टी के अंतरिक सर्वे में बेरमो विधानसभा की जनता नये चेहरे के पक्ष में दिख रही है। अब देखना यह है कि प्रदेश और शीर्ष नेतृत्व किसे बेरमो चुनावी दंगल में अपना प्रत्याशी बनकर विधानसभा में कमल खिलाने को भेजती है।

एक नजर

आरपीएफ ने दो नाबालिग को स्टेशन से बचाया

रांची : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने दो नाबालिग को रांची स्टेशन से बचाया। महिला निरीक्षक सुनीता पन्ना ने गुरुवार को बताया कि रांची रेलवे स्टेशन पर ट्रेन संख्या 12817 में चेकिंग के दौरान एस-1 बोगी पर दो नाबालिग को अकेली बैठे देखा, संदेह होने पर पूछताछ की गई। दोनों पश्चिमी सिंहभूम (चाईबासा) के रहनेवाले है। पूछने पर बताया कि वे नई दिल्ली गए थे, लेकिन उनके साथ कोई अभिभावक नहीं था और उनके पास कोई यात्रा टिकट भी नहीं था। मामले की सूचना सीडब्ल्यूसी रांची सदस्य को दी गई और मौखिक आदेश के अनुसार सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद प्रेमाश्रय बालिका आश्रय गृह, रांची को दोनों नाबालिग को सौंप दिया।

डायरिया से तीन लोगों की मौत

रांची : रांची जिले के तमाड़ थाना क्षेत्र में डायरिया का कहर देखने को मिला है। लोधमा गांव में डायरिया से तीन लोगों की मौत हो गई है। मृतकों की पहचान मंगल मछुआ (53 वर्ष), उनकी पत्नी कुंती देवी (47 वर्ष) और बैशाखी देवी (41 वर्ष) शामिल हैं। बताया जा रहा है कि परिजनों ने उनको इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां उनकी हालत में सुधार नहीं होता देख उनको बेहतर उपचार के लिये रिम्स ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया गया। तमाड़ विधायक विकास कुमार मुंडा ने मामले पर संज्ञान लेते हुए सिविल सर्जन रांची को सूचित किया है। उन्होंने जल्द से जल्द गांव में मेडिकल कैंप लगाने के लिए कहा है। विधायक विकास मुंडा आज लोधमा गांव पहुंचकर मृतकों के परिजनों से मिलेंगे। उन्होंने गांव में स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने का आश्वासन दिया है। इधर ग्रामीणों में डायरिया फैलने से दहशत का माहौल है।

करमा मिलन समारोह कार्यक्रम का हुआ आयोजन

रांची : रांची के पिठौरिया स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय (नव ज्योति भवन) प्रेक्षागृह में गुरुवार को करमा मिलन समारोह धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर आश्रम के भक्तों ने मांदर की थाप और सुमधुर करमा गीतों ने उपस्थित जनों का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संचालिका बी के राजमति और नवा टोली पंचायत के सरपंच अशोक उरांव उपस्थित थे। बीके राजमति ने कहा कि आदिवासी समाज ने सभी समाज को कला, संस्कृति, बोली, भाषा, परंपरा और प्रकृति की रक्षा करने को लेकर जागरूक किया है।

आरपीएफ ने बियर के साथ दो नाबालिग को पकड़ा

रांची : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने केन बियर के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। उपनिरीक्षक दीपक कुमार ने गुरुवार को बताया कि हटिया रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या दो पर जांच के क्रम में 36 केन बियर बरामद किया। मामले में दो नाबालिग को पकड़ा गया है। दोनों बिहार के बक्सर के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि रांची मंडल के सुरक्षा आयुक्त पवन कुमार के निर्देश पर ट्रेनों तथा रेलवे स्टेशनों मे शराब तस्करों के खिलाफ लगातार अभियान ऑपरेशन सतर्क के तहत जारी है। इसी क्रम मे चेकिंग के दौरान दो नाबालिग के बैग की जांच करने पर 36 बियर जब्त किया गया। दोनों ने पूछताछ में बताया कि बियर को अधिक दाम में बेचने के लिए बिहार लेकर जा रहे थे। जब्त बियर और नाबालिग को आगे की कार्रवाई के लिए उत्पाद विभाग को सौंप दिया गया।

बांग्लादेशी घुसपैठ : केंद्र ने हाइकोर्ट में कहा- संथाल में राज्य सरकार ही कर रही एसपीटी एक्ट की अवहेलना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड के संथाल इलाके में बांग्लादेशी घुसपैठ को लेकर दायर जनहित याचिका पर हाइकोर्ट की फटकार के बाद केंद्र सरकार ने अपना हलफनामा दाखिल कर दिया है। अपने हलफनामे में केंद्र सरकार ने साफ तौर पर यह माना है कि पिछले कुछ सालों में संथाल में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है। केंद्र ने संथाल की मौजूदा परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा है कि पिछले लगभग एक दशक से आदिवासियों की संख्या तेजी से घटी है। पहले संथाल में आदिवासियों कि संख्या 44% थी जो अब घटकर 28% हो गई है। घुसपैठ नहीं धर्मांतरण भी है शामिल केंद्र सरकार ने आगे कहा है कि संथाल मे न सिर्फ घुसपैठ बल्कि धर्मांतरण और पलायन भी शामिल है। केंद्र ने हाइकोर्ट से कहा कि संथाल में राज्य सरकार ही संथाल परगना टेंडेंसी एक्ट का उल्लंघन कर रही है। बाहर से लोग संथाल में आ रहे हैं। घुसपैठियों को संरक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे आदिवासियों की जमीन पर घुसपैठ कर सके। बड़ी संख्या में आदिवासियों कि जमीन को गिफ्ट डीड के जरिए हड़पा जा रहा है। जो साफ तौर पर ये दशार्ता है कि बिना राज्य सरकार की सहमति के ये होना मुमकिन नहीं है। UIDAI ने भी दाखिल किया जवाब गौरतलब हो की केंद्र की ओर UIDAI से ने भी अपना जवाब दाखिल किया है। उन्होंने बताया कि आधार नागरिकता का आधार कभी भी नहीं हो सकता है। ये महज एक यूनिक आइडेंटिफिकेशन के तौर पर मान्य है। केंद्र सरकार ने संथाल की पूरी स्थिति को देखते हुए यहां एनआरसी लागू करने की जरूरत बताई है। केंद्र सरकार के हलफनामे में कहा गया है कि पिछले कुछ दिनों में संथाल में मदरसों की संख्या भी काफी बढ़ गई है। सबसे ज्यादा मदरसे सीमावर्ती जिले साहिबगंज और पाकुड़ में बने है। इसके साथ ही केंद्र की ओर से यह जानकारी भी दी गई है कि हमारे पास घुसपैठियों की शिनाख्त करके उन्हे वापस भेजने के उपाय हैं। लेकिन ये बिना एनआरसी लागू किए मुमकिन नहीं हैं।

इंटर्नशिप विद्यार्थियों के लिए वेटनरी कॉलेज के खाते में 29 लाख रुपये की राशि आई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के वेटनरी कॉलेज के आन्दोलनरत इंटर्नशिप विद्यार्थियों की इंटर्नशिप की बकाया राशि लगभग 29 लाख रुपए कॉलेज को उपलब्ध करा दी गयी है। इससे सत्र 2016-17 से 2019-20 के बीच प्रवेश लेकर पांचवें वर्ष में इंटर्नशिप करने वाले सभी सभी इंटर्न्स को 6000 प्रति माह की दर से 6 माह की इंटर्नशिप अवधि का भुगतान प्रति छात्र 36,000 रुपये किया जाएगा। भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के दिशा निर्देश के अनुरूप इंटर्नशिप की अवधि 12 महीने करने का प्रस्ताव इस माह विश्वविद्यालय की वित्त समिति की होने वाली बैठक में अनुमोदनार्थ रखा जाएगा। साथ ही इंटर्नशिप की मासिक राशि प्रतिमाह 15000 करने का प्रस्ताव भी रखा जाएगा। पीजी छात्र-छात्राओं की फेलोशिप बढ़ाने का प्रस्ताव भी वित्त समिति में रखा जाएगा। डीन वेटनरी को निर्देश दिया गया कि यथाशीघ्र इस आशय का एजेंडा वित्त समिति के सदस्य सचिव को भेजें। अनुमोदन के पश्चात प्रबंध पर्षद की स्वीकृति के प्रत्याशा में उसे बजट के साथ स्वीकृति हेतु राज्य सरकार को भेजा जाएगा। इंटर्नशिप विद्यार्थियों के आंदोलन का हल निकालने के लिए आज वेटनरी कॉलेज के विभागाध्यक्षों, वार्डन, डिप्टी वार्डन एवं सहायक कुलसचिवों की बैठक कुलपति डॉ एससी दुबे की अध्यक्षता में प्रबंध पर्षद कक्ष में हुई। बैठक में डीन के माध्यम से छात्र प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया था किंतु वे नहीं आए। बैठक के निर्णय के अनुसार वेटनरी कॉलेज के सभी शिक्षक आपस में और विद्यार्थियों से बात कर समस्या के समाधान के तरीकों के संबंध में सुझाव विश्वविद्यालय प्रशासन को समर्पित करेंगे। कुलपति ने कहा कि इंटर्नशिप विद्यार्थी कभी भी बातचीत के लिए आ सकते हैं, उनका स्वागत है। बैठक में डीन वेटनरी डॉ सुशील प्रसाद, एसोसिएट डीन डॉ आलोक कुमार पांडेय, वार्डन डॉ प्रवीण कुमार, सहायक कुलसचिव डॉ सुरेश मेहता, डॉ दिनेश कुमार, विभागाध्यक्ष डॉ एके शर्मा, डॉ अभिषेक कुमार, डॉ राजू प्रसाद तथा 5 डिप्टी वार्डन उपस्थित थे।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो आज बाबाधाम में कार्यकर्ताओं को देंगे मूल मंत्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा चुनाव को लेकर पूरे प्रदेश में कांग्रेस जोर-शोर से तैयारी में जुटी हुई है। प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिलते ही केशव महतो कमलेश लगातार झारखंड दौरे पर हैं। इस दौरान अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों का भ्रमण कर वहां के स्थानीय कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर रहे हैं और उनमें ऊर्जा भरने का काम कर रहे हैं। इसके मद्देनजर शुक्रवार को देवघर जिले के विभिन्न विधानसभा के कार्यकर्ताओं से मिलने के लिए केशव महतो कमलेश देवघर पहुंचेंगे। यहां पर एक निजी होटल में जिले के सभी कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करेंगे। कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्नम संजय ने बताया कि 13 सितंबर को पहली बार नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश देवघर पहुंचेंगे, जिसको लेकर कार्यकताओं में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में होने वाली बैठक में जिला अध्यक्ष प्रोफेसर उदय प्रकाश के साथ-साथ देवघर, मधुपुर, सारठ और जरमुंडी विधानसभा के तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहेंगे। प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के द्वारा कार्यकर्ताओं को जो भी दिशा निर्देश दिया जाएगा, उसे कार्यकर्ता पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाएंगे। उसी के आधार पर आगामी चुनाव में काम भी किया जाएगा।

जिला शिक्षा अधीक्षक ने विद्यालय का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के जिला शिक्षा अधीक्षक बादल राज ने गुरुवार को राजकीय मध्य विद्यालय करमटोली का निरीक्षण किया गया। इस विद्यालय में कुल 281 छात्रों का नामांकन है। विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति संतोषजनक पाई गई। यहां केवल तीन शिक्षक पदस्थापित है, शिक्षकों की कमी के बावजूद विद्यालय में पढ़ाई का स्तर संतोषजनक पाया गया। छात्रों से सवाल-जवाब करने पर छात्र आत्मविश्वास के साथ जवाब दे पा रहे थे। विद्यालय में संसाधनों की कमी पाई गई। कक्षाओं के लिए कमरे का अभाव पाया गया। किचन कक्ष साफ सुथरा पाया गया। इसपर जिला शिक्षा अधीक्षक के जरिये पोषण वाटिका को व्यवस्थित तरीके से विकसित करने का निर्देश दिया गया। साथ ही विद्यालय परिसर की भी साफ सफाई कराने को कहा गया। प्राचार्य कक्ष को व्यवस्थित करने का निर्देश दिया गया। जिला शिक्षा अधीक्षक की ओर से जानकारी दी गई कि विद्यालय में शिक्षकों की कमी को जल्द पूरा करा लिया जाएगा। विद्यालय में कोल इंडिया के सौजन्य से सीएसआर के तहत संसाधन और शिक्षक भी प्राप्त है।

मासस का भाकपा माले में विलय की प्रक्रिया पूर्ण : दीपांकर भट्टाचार्य

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाकपा माले महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने कहा कि मार्क्सवादी समन्वय समिति (मासस) का भाकपा माले में विलय की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी हो गई है। इस प्रक्रिया के तहत मासस के पांच नेताओं को केंद्रीय कमिटी में शामिल किया गया है। इनमें आनंद महतो, हलधर महतो, अरूप चटर्जी, आर डी मांझी और आमंत्रित सदस्य निताई महतो शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यह विलय प्रक्रिया ऐतिहासिक महत्व की है और यह झारखंड के साथ-साथ देश की राजनीति को जन आधारित मुद्दों पर संघर्ष को तेज करेगी। भट्टाचार्य रांची के काली मंदिर रोड स्थित राज्य कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि महासचिव ने आगामी जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन के सहयोगियों का समर्थन करने की बात की और झारखंड विधानसभा में इंडिया गठबंधन के साथ मजबूत दावेदारी के साथ चुनाव लड़ने का संकेत दिया। उन्होंने कहा कि मजदूर आंदोलन और झारखंड आंदोलन का केंद्र छोटानागपुर रहा है, और भाकपा माले और मासस का आंदोलन भी मजबूत रहा है। पलामू प्रमंडल में भी पार्टी का जनाधार मजबूत है, इसलिए पार्टी यहां भी मजबूत दावेदारी पेश करेगी और भाजपा को झारखंड से बेदखल करेगी। भट्टाचार्य ने झारखंड में निजीकरण और रोजगार संकट के बढ़ते प्रभाव पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि निजीकरण की वजह से आम लोगों की समस्याएं बढ़ रही हैं और रोजगार के लिए स्थायी समाधान नहीं मिल पा रहा है। केंद्र की भाजपा सरकार झारखंड के खनिज-संपदा और जल-जंगल-जमीन पर एकाधिकार जमाना चाह रही है, जिससे अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और पलायन की समस्याएं बढ़ेंगी। उन्होंने कहा कि झारखंड की गठबंधन सरकार को विभिन्न केंद्रीय जांच एजेंसियों और राज्यपाल के माध्यम से शासन-प्रशासन को अस्थिर करने की लगातार कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के यौन उत्पीड़न, गौ रक्षा के नाम पर लिंचिंग, दलितों पर अत्याचार और मजदूरों के मौलिक अधिकारों पर हमलों के खिलाफ सरकार पूरी तरह से विफल रही है।

झारखंड में 14 और 15 सितंबर को भारी बारिश की संभावना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : बंगाल की खाड़ी में बना साइक्लोनिक सकुर्लेशन और साउथ-वेस्ट मानसून झारखंड में सक्रिय है। राजधानी रांची में बीते 24 घंटे में हल्की बारिश देखी गई। वहीं, प्रदेश में सबसे अधिक तापमान 35.9 डिग्री गोड्डा व सबसे कम तापमान 23.1 डिग्री रांची में दर्ज किया गया। सबसे अधिक वर्षा 32 मिमी रामगढ़ में दर्ज की गई। रांची मौसम केंद्र के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने गुरुवार को बताया कि बंगाल की खाड़ी में बने साइक्लोनिक सकुर्लेशन का असर राज्य में अच्छा खासा पड़ने वाला है। कुछ जिलों में तेज बारिश के साथ वज्रपात की आशंका है, इसलिए लोगों को काफी सचेत रहने की जरूरत है। इसे लेकर मौसम विभाग ने येलो अलर्ट भी जारी कर दिया है। उन्होंने बताया कि राज्य में 16 सितंबर तक भारी बारिश की संभावना है। मौसम विज्ञान केंद्र की मानें तो 13 सितंबर को राज्य के उत्तर पूर्वी हिस्से में भारी बारिश होने की संभावना है जबकि अन्य हिस्से में मध्यम दर्जे की बारिश की संभावना है। इसमें दुमका, गोड्डा, गढ़वा, पाकुड़, गिरिडीह, धनबाद, जामताड़ा, साहेबगंज में भारी बारिश की संभावना है। 14 और 15 सितंबर को मध्य, दक्षिणी पश्चिम और उत्तर पूर्व में भारी बारिश की जानकारी दी गयी है। इसे लेकर विभाग ने ऑरेंज अलर्ट भी जारी किया है। इसके तहत दुमका, गोड्डा, गढ़वा, पाकुड़, गिरिडीह, धनबाद, जामताड़ा, साहेबगंज, रांची, बोकारो, गुमला, हजारीबाग, खूंटी, रामगढ़, पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला खरसावां समेत अन्य जिलों में भारी बारिश की जानकारी दी गयी है। इस दौरान इन जिलों में भारी बारिश के साथ ही वज्रपात के लिए भी चेतावनी जारी की गयी है। 16 सितंबर को राज्य के पश्चिमी हिस्से में भारी बारिश की चेतावनी है। इसके लिए विभाग ने येलो अलर्ट जारी किया है। इस दिन पलामू, लातेहार, गढ़वा में भारी बारिश की संभावना है।

संक्षिप्त खबरें

राज्यपाल ने पासपोर्ट कार्यालय की गृहपत्रिका सोहराई का किया लोकार्पण

रांची : राज्यपाल ने संतोष कुमार गंगवार ने गुरुवार को राज भवन में रांची के क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की ओर से प्रकाशित वार्षिक राजभाषा गृहपत्रिका 'सोहराई' के चतुर्थ अंक का लोकार्पण किया। राज्यपाल ने इसके प्रकाशन के लिए क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय के सभी पदाधिकारियों और कर्मियों को बधाई दी।

हेमन्त सोरेन ने जिला परिषद अध्यक्ष एवं उपाध्यक्षों से की मुलाकात

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवास में राज्य के विभिन्न जिलों से पहुंचे जिला परिषद अध्यक्ष एवं उपाध्यक्षों के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री को प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अपनी कुछ समस्याओं एवं मांगों से संबंधित ज्ञापन भी सौंपा। मौके पर मुख्यमंत्री ने उपस्थित सभी जिला परिषद अध्यक्ष एवं उपाध्यक्षों की बातों को गंभीरता से सुना तथा उनकी समस्याओं एवं मांगो पर यथोचित कार्रवाई का भरोसा उन्हें दिया।

हाई कोर्ट से ईडी के अधिकारियों के खिलाफ दर्ज मामले में राज्य सरकार ने मांगा समय

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की शिकायत पर ईडी के अधिकारियों के खिलाफ एससी व एसटी थाना में दर्ज एफआईआर को सीबीआई या अन्य स्वतंत्र एजेंसी को देने का आग्रह करने वाली ईडी की याचिका की गुरुवार को सुनवाई हुई। मामले में हाई कोर्ट की एकल पीठ ने राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने के लिए चार सप्ताह का समय दिया। इससे पहले राज्य सरकार की ओर से समय की मांग की थी। मामले में प्रतिवादी सीएम हेमंत सोरेन की ओर से अधिवक्ता ने वकालतनामा दाखिल किया, पिछली सुनवाई में कोर्ट ने हेमंत सोरेन को नोटिस जारी किया था। मामले की अगली सुनवाई 15 अक्टूबर को होगी। ईडी के सहायक निदेशक देवव्रत झा की ओर से हाई कोर्ट में दाखिल याचिका में आग्रह किया गया है कि इस मामले में गोंदा पुलिस द्वारा ईडी के अधिकारी को प्रताड़ित करने की कोशिश की जा रही है। इसलिए इस मामले की जांच का जिम्मा सीबीआई या अन्य स्वतंत्र एजेंसी को सौंपी जाए। हालांकि पूर्व में ईडी के अधिकारियों के खिलाफ एससी व एसटी एक्ट में दर्ज एफआईआर को चुनौती देने वाली ईडी के अधिकारियों कपिल राज एवं अन्य की याचिका पर हाई कोर्ट ने ईडी के अधिकारियों को गोंदा पुलिस द्वारा 41 ए के तहत दिए गए नोटिस पर रोक लगा दी थी। कोर्ट ने कहा था कि अगले आदेश तक पुलिस ईडी अधिकारियों को 41 ए का नोटिस जारी कर पूछताछ के लिए नहीं बुला सकती है। कोर्ट ने ईडी अधिकारी को खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक अगले आदेश तक जारी रखा है। यह एफआईआर झारखंड पुलिस ने एससी/एसटी एक्ट के तहत रांची के एससी/एसटी पुलिस थाना में दर्ज की है। यह एफआईआर हेमंत सोरेन की दिल्ली आवास पर ईडी की गई तलाशी के संबंध में एक शिकायत को लेकर की गई है। एफआईआर में ईडी के सीनियर अधिकारियों पर दिल्ली में हेमंत सोरेन के आवास पर की गई तलाशी का आरोप लगाया गया है।

घुसपैठियों की संरक्षक है राज्य सरकार, वोट बैंक की राजनीति के लिए लीपापोती करने में जुटी है : बाउरी

रांची : गुरुवार को नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी बांग्लदेशी घुसपैठियों के मुद्दे को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस किया। इस दौरान उन्होंने राज्य सरकार पर जमकर हमला बोला और कहा कि बंग्लादेशी घुसपैठ को लेकर झारखंड हाईकोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की गई है जिसकी लगातार सुनवाई हो रही है। भाजपा हमेशा इस मुद्दे को उठाता है कि झारखंड की डेमोग्राफी चेंज हुई है। इस कारण देश के संप्रभुता पर भी खतरा मंडरा रहा है। वहीं झारखंड के आदिवासियों मूलवासियों के अस्मिता भी खतरे में है। विशेषकर संथाल परगना में। चाहे वह पाकुड़ है, चाहे साहिबगंज है। उन जिलों के माध्यम से भयंकर घूसपैठ हो रहा है। ऐसे में हमारे माटी, बेटी, रोटी के अस्मिता की प्रश्न खड़े हुए है। भाजपा के इस प्रबल दावे को जेएमएम, कांग्रेस, आरजेडी लगातार खारिज करती रही है। लेकिन जब हाईकोर्ट ने इस गंभीर विषय को संज्ञान में लिया पीआईएल के माध्यम से और कहा कि संथाल परगना की डेमोग्राफी चेंज हो रही है। और वहां के छह जिलों के डीसी और एसपी सीधे उनको रिपोर्ट करें कि उसके लिए वह क्या कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार घुसपैठियों की संरक्षक है। तुष्टिकरण और वोट बैंक की राजनीति के लिए सबसे बड़ी रहनुमा है। इस अति गंभीर समस्या को मानने की जगह वो इस पर लिपापोती कर रही है। जिसका नतीजा होता है कि कोई भी रिपोर्ट वह सही नहीं देती है। आपने देखा होगा कि पिछले सुनवाई में हाईकोर्ट ने राज्य सरकार के साथ केंद्र सरकार को भी ताकिद किया कि यह जो समस्या है इसमें राज्य और केंद्र सरकार दोनों की जवाबदेही बनती है। इसलिए केंद्र सरकार भी एफिडेफिट के माध्यम से इस समस्या पर अपने विचार रखे। राज्य सरकार ने डीसी और एसपी के माध्यम में एफिडेफिट दायर किया था वो पूरी तरह से हाईकोर्ट ने खारिज किया था।

चेक बाउंस मामले के दोषी बिल्डर को एक साल की सजा और 15 लाख का जुर्माना

रांची : न्यायिक दंडाधिकारी राजकुमार पांडे की अदालत ने गुरुवार को चेक बाउंस मामले के दोषी बिल्डर क्रिस्टोफर बा(55) को एक साल की सजा सुनाई है। साथ ही उस पर 15 लाख रुपए का जुमार्ना लगाया गया है। जुमार्ना नहीं देने पर उसे अतिरिक्त दो माह का साधारण कारावास काटना होगा। बिल्डर क्रिस्टोफर डोरंडा के सचिदानंद स्कूल लेन कुसाई नामकुम रोड का निवासी है। पेशे से शिक्षिका हरिहर सिंह रोड निवासी वैदेही चारी एवं मर्चेंट नेवी में सेवारत उनके पति विवेकानंद चारी ने बिल्डर क्रिस्टोफर बा से कुछ वित्तीय आवश्यकता को बताते हुए लोन लिया था। पैसा लेते समय तय हुआ था कि बदले में या तो आरोपित बिल्डर उन्हें एक पूरी तरह से निर्मित रहने को तैयार फ्लैट देगा या पूरी राशि वापस कर देगा। जब फ्लैट तैयार हो गया तो शिकायतकर्ता ने दिए गए पैसे मांगे तो उसने पोस्ट डेटेड चेक दिया। इसमें से 10 लाख रुपए का एक चेक बाउंस कर गया। इसके बाद 14 सितंबर 2020 को अपने अधिवक्ता संजय कुमार विद्रोही के माध्यम से शिकायतवाद दर्ज कराया। मामले में चली सुनवाई के दौरान संजय कुमार विद्रोही ने शिकायतकर्ता की ओर से पक्ष रखा।

कालचक्र का बदलता स्वरूप- अमेरिका में लगातार बिगड़ती आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति

प्रहलाद सबनानी

अमेरिका में उच्च आय वाले क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिका में प्रति घंटा औसत मजदूरी की दर वर्ष 1973 से (मुद्रा स्फीति की दर के समायोजन के पश्चात) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिका में आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फेडरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तर पर पहुंच गया है।

विश्व में कई गतिविधियां एक चक्र के रूप में चलती रहती है। एक कालखंड के पश्चात चक्र कभी नीचे की ओर जाता है एवं एक अन्य कालखंड के पश्चात यह चक्र कभी ऊपर की ओर जाता हुए दिखाई देता है। विदेशी व्यापार के मामले में वर्ष 1750 तक पूरे विश्व में भारत की तूती बोलती रही है, परंतु इसके पश्चात यूरोपीयन देशों ने विस्तारवादी नीतियों के चलते अपने आर्थिक हित साधते हुए विभिन्न देशों पर अपना कब्जा जमा लिया। ब्रिटेन, फ्रांस, डच जैसे देशों ने एशियाई देशों एवं कुछ अफ्रीकी भू भाग पर पर अपना कब्जा जमाया तो स्पेन आदि देशों ने अमेरिकी महाद्वीप पर अपना कब्जा जमाया। समय के साथ चक्र कुछ इस प्रकार चला कि वर्ष 1950 आते आते अमेरिका पूरे विश्व में सबसे अमीर देशों की श्रेणी में शामिल हो गया और ब्रिटेन, जिसके बारे में कभी कहा जाता था कि ब्रिटेन की महारानी के राज्यों में सूरज कभी डूबता नहीं है, का आर्थिक दृष्टि से ढलान शुरू हो गया और आज ब्रिटेन के आर्थिक एवं सामाजिक ढांचे की स्थिति हम सभी के सामने है। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था हाल ही में पूरे विश्व में छठे स्थान पर पहुंच गई है तथा अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी के पश्चात भारत आज विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जबकि वर्ष 1750 के पश्चात जब ब्रिटेन ने भारत पर अपना कब्जा स्थापित कर लिया था उसके बाद भारत की स्थिति यहां तक बिगड़ी थी कि पूरी विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत के विदेश व्यापार की हिस्सेदारी वर्ष 1750 के 32 प्रतिशत से घटकर वर्ष 1947 में 3 प्रतिशत के नीचे आ गई थी। परंतु, एक बार फिर कालचक्र अपना रंग दिखाता हुआ नजर आ रहा है और अमेरिकी अर्थव्यवस्था के साथ ही वहां का सामाजिक ताना बाना भी छिन्न भिन्न होता हुआ दिखाई दे रहा है।

दरअसल, अमेरिका ने पूंजीवादी नीतियों को अपनाकर अपने नागरिकों में केवल आर्थिक उन्नति को ही विकास के एकमात्र मार्ग के रूप में चुना था, इससे वहां के नागरिकों में किसी भी प्रकार से धन अर्जन करने की प्रवृत्ति विकसित हुई एवं सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ताना बाना छिन्न भिन्न हो गया। परिवार व्यवस्था समाप्त हो गई जिसका परिणाम आज हमारे सामने हैं कि आज अमेरिका में नागरिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना, मेडीकेयर योजना, मेडीकैड योजना, प्रौढ़ नागरिकों को सुविधाएं एवं केंद्र (फेडरल) सरकार के कर्मचारियों को अदा की जा रही पेंशन, आदि योजनाएं सरकार द्वारा नागरिकों के हितार्थ अमेरिका में चलानी पड़ रही हैं। इन योजनाओं पर खर्च किए जा रहे 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की भारी भरकम राशि का लाभ करोड़ों अमेरिकी नागरिक प्रतिवर्ष उठा रहे हैं। यह राशि अमेरिकी सकल घरेलू उत्पाद का 14 प्रतिशत है। सुरक्षा की मद पर भी अमेरिका द्वारा 70,000

करोड़ अमेरिकी डॉलर का खर्च प्रतिवर्ष किया जाता है। बेरोजगारी बीमा लाभ योजना पर भी भारी भरकम राशि अमेरिकी सरकार द्वारा प्रतिवर्ष खर्च की जाती है। अमेरिका में सेवा निवृत्त हो रहे कर्मचारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है जिसके कारण इस मद पर व्यय की जाने वाली राशि में भी बेतहाशा वृद्धि हो रही है, साथ ही लगातार बढ़ रहा सुरक्षा खर्च, स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय की लगातार बढ़ रही राशि के बीच वर्तमान में कर की दरों में वृद्धि नहीं करने के कारण बजटीय घाटे पर दबाव बढ़ता जा रहा है। इकोनोमिक रिपोर्ट आफ द प्रेजीडेंट के अनुसार अमेरिका में वर्ष 2000 में 23,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का बजट आधिक्य था जो वर्ष 2001 में घटकर 12,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया। परंतु, वर्ष 2002 में एक बार जो 15,800 करोड़ अमेरिकी डॉलर का बजट घाटा प्रारम्भ हुआ तो इसके बाद से वह बढ़ता ही गया है। वर्ष 2009 में तो बजट घाटा बढ़कर 141,300 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया, वर्ष 2010 में 129,400 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2011 में 130,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2012 में 108,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं वर्ष 2020 में 313,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2021 में 277,000 करोड़ अमेरिको डॉलर एवं वर्ष 2022 में 188,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है।

अमेरिका में प्रति परिवार वास्तविक औसत आय वर्ष 1973 में (वर्ष 2015 में डॉलर की कीमत पर) 50,000 अमेरिकी डॉलर थी। अमेरिका के लगभग आधे परिवारों की वास्तविक औसत आय 50,000 अमेरिकी डॉलर से अधिक थी एवं शेष आधे परिवारों की 50,000 अमेरिकी डॉलर से कम थी, जिससे आय की असमानता आज की तुलना में कम दिखाई देती थी। वर्ष 1973 से वर्ष 2015 तक अमेरिका में उत्पादकता में 115 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि परिवारों की औसत आय (मुद्रा स्फीति के समायोजन के बाद) केवल 11 प्रतिशत ही बढ़ी है। यह भी, इस बीच, अमेरिकी महिलाओं को भारी मात्रा में प्रदान किए गए रोजगार के अवसरों के चलते सम्भव हो पाया है। इस प्रकार, मुद्रा स्फीति के समायोजन के पश्चात, अमेरिका में वर्ष 1973 के पश्चात औसत आय में वृद्धि नगण्य ही रही है। वर्ष 1973 से वर्ष 2007 के बीच अमेरिकी मध्यवर्गीय परिवारों ने उपभोग पर औसत खर्च को दुगने से भी अधिक कर दिया है। जिसके कारण इन परिवारों की बचत दर 10 प्रतिशत से घट कर 2 प्रतिशत हो गई है। बल्कि कई परिवारों को तो अपने मकानों पर ऋण लेकर एवं क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऋण लेकर भी काम चलाना पड़ रहा हैं।

जोसेफ शुम्पटर के अनुसार अमेरिका में कार ने घोड़ा गाड़ी को खत्म कर दिया एवं कम्प्यूटर ने टाइपराइटर को खत्म कर दिया। इसे ह्रासरचनात्मक विनाशह्व (क्रीएटिव डेस्ट्रक्शन) का नाम दिया गया, क्योंकि इससे उत्पादकता का स्तर बढ़ा था, परंतु रोजगार के लाखों अवसर समाप्त हो गए थे। अमेरिका में आज 5 में से 4 रोजगार के अवसर, सेवा क्षेत्र में उत्पन्न होते हैं, जहां तुलनात्मक रूप से आय कम है। कृषि एवं उद्योग (विनिर्माण सहित) क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हो पा रहे हैं।

60 वर्ष पूर्व तक अमेरिका विदेशी व्यापार के मामले में आत्मनिर्भर था। अमेरिका में विभिन्न उत्पादों का जितना उपभोग होता था उन लगभग समस्त उत्पादों का उत्पादन भी अमेरिका में ही होता था। बल्कि, विदेशी व्यापार के मामले में तो उस समय अमेरिका के पास विदेश व्यापार आधिक्य शेष रहता था। आज अमेरिका में विभिन्न उत्पादों का जितना उत्पादन होता है उससे कहीं अधिक उपभोग होता है। अमेरिकी नागरिक आज अपनी आय से अधिक व्यय करता हुआ दिखाई देता है। अमेरिका में कई नए शहरों की बसावट के पहिले, समस्त बड़े नगरों में 75 प्रतिशत श्रमिक रेल्वे एवं बसों से यात्रा करते थे। परंतु आज केवल 5 प्रतिशत नागरिक ही पब्लिक वाहनों का उपयोग, एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने के लिए, करते हैं। समस्त नागरिकों के पास अपनी अपनी कार है एवं केवल स्वयं ही उस कार में वे यात्रा करते हुए पाए जाते हैं। इससे पेट्रोल, डीजल एवं गैस की खपत में बेतहाशा वृद्धि दर्ज हुई है। द्वितीय विश्व युद्ध तक अमेरिका कच्चे तेल का एक निर्यातक देश हुआ करता था परंतु आज अमेरिका अपनी कच्चे तेल की कुल आवश्यकता का एक तिहाई भाग आयात करता है।

अमेरिका में वर्ष 2000 में विदेशी व्यापार घाटा 38,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का था जो 2021 में बढ़कर 86,100 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है। 1970 के दशक तक, लगभग प्रत्येक वर्ष, अमेरिका के पास विदेशी व्यापार आधिक्य हुआ करता था। परंतु, इसके पश्चात अमेरिका की स्थिति विदेशी व्यापार के मामले में लगातार बिगड़ती चली गई है।

अमेरिका में उच्च आय वाले क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिका में प्रति घंटा औसत मजदूरी की दर वर्ष 1973 से (मुद्रा स्फीति की दर के समायोजन के पश्चात) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिका में आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फेडरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तर पर पहुंच गया है। विदेशी व्यापार घाटा के लगातार बढ़ते जाने से आज अमेरिका 100 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का ऋण प्रतिदिन ले रहा है। देश में लगातार बढ़ रही गरीबी अब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की ओर स्थानांतरित हो रही है। कुल मिलाकर उक्त वर्णित अमेरिकी अर्थव्यवस्था की वर्तमान हालत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी आर्थिक दर्शन पर टिका पूंजीवादी मॉडल पूर्णतः असफल हो रहा है। इसी कारण से अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा भी अब यह कहा जाने लगा है कि पूंजीवादी मॉडल समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है अतः साम्यवाद एवं पूंजीवाद के बाद एक तीसरे आर्थिक रास्ते की अब सख्त आवश्यकता है, जो संभवतः केवल भारत ही उपलब्ध कर सकता है।

संपादकीय

शांति का रास्ता

कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के मुद्दे पर आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर सुप्रीम कोर्ट के अल्टीमेटम के बावजूद अभी तक काम पर नहीं लौटे हैं, जो चिंता की बात है। इस अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और उसकी हत्या को लेकर पिछले 9 अगस्त से डॉक्टरों का आंदोलन जारी है। निसंदेह यह बहुत जघण्य घटना है, जिससे हर व्यक्ति दुखी है, और उससे भी ज्यादा दुखद यह है कि अब तक पीड़िता के परिजनों को न्याय नहीं मिला है। इस मामले को लेकर पीडिता के सहकर्मियों की हड़ताल वैधानिक और न्यायसंगत है। लोकतंत्र में राजनीतिक-सामाजिक संगठनों, व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह को अपनी मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ शांतिपूर्ण ढंग से विरोध-प्रदर्शन और हड़ताल करने का संवैधानिक अधिकार है। लेकिन हड़ताल की वजह से सैकड़ों किलोमीटर दूर से आए मरीज और उनके तीमारदारों को परेशानियों का सामना करना पड़.रहा है। सरकार ने दावा किया है कि हड़ताल से 23 मरीजों की मौत हो गई है। जाहिर है कि इस पहलू पर मानवीय दृष्टि से विचार करते हुए डॉक्टरों को काम पर लौट आना चाहिए। वस्तुतः प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और हत्या के मामले में राज्य की पुलिस और प्रशासन ने जिस तरह से गुमराह और भ्रमित करने वाला रवैया अपनाया उससे डॉक्टरों के साथ आम लोगों में भी निराशा है। पुलिस, प्रशासन और सरकार के ऊपर से सभी का भरोसा उठ गया है। डॉक्टरों के काम पर नहीं लौटने की यह एक बड़ी वजह हो सकती है। मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आंदोलनकारी डॉक्टरों को वार्ता के लिए राज्य सचिवालय में आमंत्रित किया था लेकिन डॉक्टरों को निमंत्रण की भाषा पर आपत्ति थी। इसलिए उन्होंने इसे ठुकरा दिया। डॉक्टरों का कहना है कि पीड़िता के परिवार को न्याय मिले और कार्यस्थल पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। जब तक यह नहीं होगा हमारी हड़ताल जारी रहेगी। ये दोनों मांगें जायज हैं और राज्य सरकार को इन्हें तुरंत मानना सुनिश्चित करना चाहिए। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्वयं महिला हैं, और राज्य की मुखिया होने के नाते उनसे अपेक्षा की जाती है कि महिला प्रशिक्षु डॉक्टर को न्याय दिलाने के लिए वह स्वयं पहल करें।

चिंतन-मनन

जीवन एक क्रिकेट मैच

प्रतिकारी संत तरुणसागरजी ने क्रिकेट की व्याख्या करते हुए कहा कि जीवन एक क्रिकेट है, धरती की विराट पिच पर समय बॉलिंग कर रहा है। शरीर बल्लेबाज है, परमात्मा के इस आयोजन पर अम्पायर धर्मराज हैं। बीमारियाँ फील्डिंग कर रही हैं, विकेटकीपर यमराज हैं, प्राण हमारा विकेट है, जीवन एक क्रिकेट है। इस डे-नाइट मैच में हमें रचनात्मकता के जलवे दिखाने हैं और साँसों के सीमित ओवर में सृजन के रन बनाने हैं। गिल्लियाँ उड़ने का अर्थ साँस का टूट जाना है, एलबीडब्ल्यू यानी हार्ट-अटैक। दुर्घटना में मरने वाला रन आउट कहलाता है और सीमा पर शहीद होने वाला कैच आउट कहा जाता है। आत्महत्या का अर्थ हिट विकेट और हत्या स्टम्प आउट हो जाना है।

कभी-कभी कुछ आप्रामक खिलाड़ी जल्दी ही पैवेलियन लौट जाते हैं, लेकिन पारी ऐसी खेलते हैं कि कीर्तिमान बना जाते हैं, सबका अपना-अपना रन रेट है, जीवन एक क्रिकेट है। घर आए अतिथि को भोजन के लिए पूछा करो, भोजन के लिए नहीं पूछ सकते तो पानी के लिए पूछा करो, पानी का नहीं पूछ सकते हैं तो बैठने के लिए आसन दिया करो। बैठने के लिए आसन भी नहीं दे सकते तो दो मीठे बोल बोला करो। दो मीठे बोल नहीं बोल सकते, मुस्कुराहट भी नहीं दे सकते तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो। उक्त प्रेरक विचार उन्होंने प्रवचनमाला में व्यक्त किए। हाथों में मोबाइल हो न हो, चेहरे पर स्माइल हर हाल में होना चाहिए। आदमी स्मार्ट मोबाइल से नहीं, मुस्कुराहट से बनता है। हँसना पुण्य है और हँसाना परमपुण्य है। जब आप हँसते हैं तो आप ईश्वर की आराधना करते हैं। जब आप किसी रोते हुए को हँसाते हो तो ईश्वर आपकी आराधना करता है। दुनिया के सामने रोने की आवश्यकता नहीं है। जब पाँच सेकंड मुस्कुराने से फोटो अच्छी आ सकती है तो जिंदगी भर मुस्कुराने से जिंदगी क्यों नहीं अच्छी हो सकती।

हरियाणा चुनावी मुद्दों से मिल रहे हैं सत्ता-विरोधी संकेत

ललित गर्ग

हरियाणा विधानसभा चुनाव के मतदान की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आती जा रही है, राजनीतिक दलों में उठापटक हो रही है, दलबदल का सिलसिला जारी है, गठबंधन टूट रहे हैं जो नये जुड़ रहे हैं। प्रदेश में तीसरी बार सरकार बनाने को आतुर भाजपा के सामने इस बार चुनौतियां कम नहीं हैं, वही कांग्रेस लोकसभा चुनाव में मिली सफलता से अति-उत्साहित दिखाई दे रही है, आम आदमी पार्टी भी सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करने में जुटी है। हरियाणा में तू डाल-डाल, मैं पात-पात की कशमकश जोरों से चल रही है। विनेश और बजरंग पहलवान को शामिल करके कांग्रेस खुशियां मना रही थी, लेकिन ह्यआपह्ल से हो रहा समझौता टूटते ही कांग्रेस की खुशियां कुछ हद तक फीकी दिखाई देने लगीं। फिर भी भूपिंदर सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस हरियाणा में अपनी बहुमत की सरकार बनाने का दावा कर रही है। भाजपा भी यहां अपनी सरकार बचाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। इस बार हरियाणा के चुनावों पर समूचे देश की नजरें लगी है। हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए विपक्षी इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन की बातचीत टूटने के बाद से कांग्रेस के जीत के सपनों को सेंध लगी है। आप ने प्रत्याशियों की दो-दो सूची जारी कर दी है, सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान भी कर दिया है। फिर भी दोनों दलों में कुछ लोग हैं, जो अभी गठबंधन की उम्मीद छोड़ने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि यही गठबंधन कांग्रेस की जीत का बड़ा कारण माना जा रहा है। इस गठबंधन के टूटन से भाजपा की निराशा के बादल कुछ सीमा तक छंटते हुए दिखाई दे रहे हैं। लेकिन भाजपा की जीत अभी भी निश्चित नहीं मानी जा रही है। भले ही ह्यआपह्ल को दूर रखकर हरियाणा कांग्रेस की राज्य इकाई खुश हो रही हो, लेकिन इसका फायदा भाजपा को ही होने वाला है क्योंकि ह्यआपह्ल प्रत्याशियों को जहां भी, जितने भी वोट मिलने वाले हैं, वे जाएंगे कांग्रेस के खाते से ही। इस त्रिकोणीय संघर्ष का फायदा भाजपा को ही मिलेगा।

हरियाणा कांग्रेस एवं उसके नेता प्रारंभ से ही स्वतंत्र चुनाव लड़ने के पक्ष में रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस नेताओं के मुताबिक, दस वर्षों की सत्ता-विरोधी लहर के मद्देनजर भाजपा 2019 से कमजोर स्थिति में है, जब उसे 90 सीटों की विधानसभा में 40 सीटें ही मिल पाई थीं। हाल ही में सम्पन्न लोकसभा चुनावों के नतीजे भी संकेत दे रहे हैं जहां पिछली बार की दसों सीटों की जगह उसे सिर्फ 5 सीटें मिलीं। आप को कांग्रेस के साथ गठबंधन में यहां एक लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने का मौका मिला था, लेकिन वह हार गई थी। इसी स्थिति को देखते हुए ही प्रदेश कांग्रेस आप के साथ गठबंधन को पूरी तरह गैर जरूरी मान रहा है। लेकिन कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व राजनीति गणित को देखते हुए आप के साथ गठबंधन को लेकर निरन्तर प्रयास करता रहा। यही कारण दोनों दल गठबंधन के लिए बातचीत की मेज पर बैठे। राहुल गांधी अब लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं और उनकी प्राथमिकता यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष के इंडिया गठबंधन की एकजुटता और उसकी मजबूती में किसी तरह की कमी न दिखे ताकि केंद्र सरकार और भाजपा पर उसका दबाव बना रहे। हरियाणा में आप पार्टी कोई चमत्कार घटित करने की स्थिति में नहीं है। उसकी भूमिका सत्ता के गणित को प्रभावित करना मात्र है। कुछ सीटें उसके खाते में जा सकती है, जिसका रोल भविष्य की सत्ता की राजनीति में हो सकता है। अरविन्द केजरीवाल के जातीय गणित के कारण ह्यआपह्ल पार्टी कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचा सकता है तो कुछ नुकसान भाजपा का भी कर सकती है। कम वोटों के अंतर से होने वाली जीत-हार में ह्यआपह्ल पार्टी का असर साफ दिखने वाला है। देर से ही सही, हो सकता है कांग्रेस नेतृत्व को यह बात समझ में आ जाए, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होगी। हालांकि चुनाव परिणाम आने पर ही असल माजरा समझ आएगा, लेकिन यह तय है कि भाजपा को दस साल के राज के बावजूद कमजोर नहीं माना जा सकता। लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटों में आई कमी के बाद विपक्ष को जो थोड़ी धार मिली है, उसका जो मनोबल बढ़ा था, उसके मद्देनजर ये चुनाव अहम माने जा रहे हैं। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र और झारखंड में भी चुनाव होने हैं। दिल्ली विधानसभा के चुनाव भी ज्यादा दूर नहीं हैं। ऐसे में हरियाणा विधानसभा चुनाव में अगर इंडिया गठबंधन साथ मिलकर मजबूती से लड़ता और अच्छी जीत दर्ज करा पाता तो उसका असर न केवल आने वाले विधानसभा चुनावों पर बल्कि पूरे विपक्ष के मनोबल पर पड़ने वाला था। इंडिया गठबंधन के कारण सबसे ज्यादा नुकसान भाजपा को ही झेलना पड़ता है। इसलिये इस गठबंधन की मजबूती ही भाजपा के लिये असली चुनौती है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों को याद करें तो इस पर लगभग आम राय है कि वहां कांग्रेस को प्रदेश नेतृत्व के अति आत्मविश्वास का नुकसान हुआ। असल सवाल विपक्षी वोटों के बंटवारे का है। जिस तरह से आप प्रत्याशियों की सूची जारी कर रही है, उससे साफ है कि वह इसी पहलू की ओर इशारा कर रही है कि उसे सीटें भले न आएं, कांग्रेस को कई सीटों का नुकसान तो हो ही सकता है। भाजपा लम्बे समय से हरियाणा में कमजोर बनी हुई है, भले ही सरकार उसी की हो। अपनी लगातार होती कमजोर स्थितियों में सुधार लाने एवं प्रदेश में भाजपा को मजबूती देने के लिये ही लोकसभा चुनाव से ठीक पहले मनोहर लाल के स्थान पर ओबीसी वर्ग के नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाकर सत्ता विरोधी कारकों को कम करने की कोशिश की थी, लेकिन भाजपा को उसका पूरा लाभ नहीं मिल सका। इसके मुख्य कारण सत्ता विरोधी वातावरण बना तो किसानों व बेरोजगारों की नाराजगी बड़ी चुनौती बन कर सामने आयी। भाजपा द्वारा पेश किए गए तीन विवादास्पद कृषि कानून हरियाणा में विवाद का मुख्य मुद्दा बने हुए है। राज्य के किसानों ने इन कानूनों का विरोध किया, उनका दावा है कि ये उनकी फसल की बिक्री और आय पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। केन्द्र की अग्निपथ योजना भी इन चुनावों में एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। इसने राज्य के युवाओं में चिंता पैदा कर दी है। आलोचकों का मानना है कि यह स्थायी भर्ती से दूर जाने का कदम है, जिससे सैनिकों के लिए रोजगार में अस्थिरता पैदा होती है। इन चुनावों में बेरोजगारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, राज्य की बेरोजगारी दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में सरकारी नीतियों पर काफी बहस चल रही है, जिससे यह चुनावों में एक केंद्रीय मुद्दा बन गया है। पहलवानों से जुड़ा मामला और बृज भूषण शरण सिंह पर लगे आरोप भी हरियाणा चुनाव में अहम मुद्दा बन गए हैं। पहलवानों ने सिंह पर उन्हें न्याय और सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहने का आरोप लगाया है, जिससे हरियाणा में राजनीतिक परिदृश्य में एक नया आयाम जुड़ गया है।

दिल्ली में यमुना : निर्मल होने का रास्ता चुनौतीपूर्ण

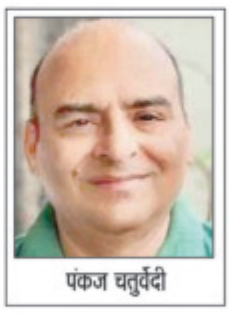

पंकज चतुर्वेदी

सावन बीत गया, भादों भी आधा निकल गया दिल्ली और उसके आसपास यमुना नदी के जल-ग्रहण क्षेत्र कहलाने वाले इलाकों में पर्याप्त पानी बरसा, लेकिन न नदी में पानी दिखा और न ही पानी से शहर की मुक्ति। जिस समय नदी में पानी लबालब होना चाहिए था, तब कम से कम दो बार दो इसमें अमोनिया की मात्रा अधिक हो गई। कई हजार करोड़ के खर्च, ढेरों वादों और योजनाओं के बाद भी लगता नहीं है न कि दिल्ली में यमुना को 2026 तक निर्मल बना देने का लक्ष्य पूरा हो पाएगा। समझना होगा कि यमुना पर लाख एसटीपी लगा कर नालों के पानी को शुद्ध कर लें लेकिन जब तक यमुना में नदी का पानी अविरल नहीं आएगा, तब तक इसके हालात तो सुधरने से रहे।

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की रिपोर्ट के अनुसार जुलाई में यमुना में ऑक्सीजन की मात्रा शून्य पाई गई जबकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। यमुना की सफाई के लिए केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार को 8,500 करोड़ रुपये दिए लेकिन नतीजा शून्य है। असल में दिल्ली में यमुना को साफ-सुथरा बनाने की जो भी नीति हैं, उनका मूल यह है कि दिल्ली में यमुना, गंगा और भूजल से 1,900 क्यूसेक पानी प्रति दिन प्रयोग में लाया जाता है। इसका 60 फीसद यानी करीब 1,100 क्यूसेक सीवरेज का पानी एकत्र होता है। यदि यह पानी शोधित कर यमुना में डाला जाए तो यमुना निर्मल रहेगी और दिल्ली में पेयजल की किल्लत भी दूर होगी। लेकिन हर समय नजरंदाज किया जाता है कि नदी में बाकी जल कहां से आएगा?

ईमानदारी की बात तो यह है कि यमुनोत्री से निकलने वाली जल-धारा, जो मैदान में आ कर गंगा की सबसे बड़ी सखी-सहेली कहलाती है, पहाड़ से उतरने के पहले ही लुप्त हो जाती है। दिल्ली तक जो भी जल आता है वह अधिकांशतः हरियाणा की छोटी नदियों और कारखानों के उत्सर्जन का हिस्सा होता है। बरसात के मौसम के पचहत्तर फीसद दिन बीत जाने के बाद भी दिल्ली में एक भी बार बाढ़ नहीं आई। बाढ़ नदी में जीवन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पहाड़ों से बह कर आया पानी अपने साथ कई उपयोगी लवण लेकर आता है। वहीं नदी के जल-मार्ग में कूड़े-मलबे के कारण धारा अवरुद्ध होती है, बाढ़ उसे स्वतः साफ कर देती है। इस तरह नदी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, जो मछलियों और जीवों की प्रजातियों को अनुकूल परिवेश प्रदान करती है।

दिल्ली में यमुना की शुद्धि के मशीनी उपायों से कहीं ज्यादा जरूरी है कि यहां तसल्ली से बाढ़ आए। आखिर, दिल्ली में बाढ़ क्यों नहीं आई? कारण खोज लें तो यह भी समझ आ जाएगा कि मल-जल को साफ करने के उपाय क्यों असफल ही रहते हैं। यमुना की आत्मा सभी नदियों के मानिंद उसके फ्लड प्लेन अर्थात कछार में है। जब नदी यौवन पर हो तो जमीन पर जहां तक उसका विस्तार होता है, वह उसका कछार या फ्लड प्लेन है। अब दिल्ली में तो नदी को फैलने की जगह ही नहीं बची। हजारों निजी और सरकारी निर्माण और नदी के बीचोंबीच खड़े किए गए खंभे यमुना को दिल से बहने ही नहीं देते। सुनिश्चित करने की जरूरत है कि नदी के फ्लड प्लेन को पूरी तरह से खाली रखा जाए। नदियों में आने वाली बाढ़ एक नये जीवन का निर्माण करती है, और एक तरह से जरूरी भी है। बाढ़ से नदी का जलीय जीवन भी बेहतर होता है।

दिल्ली तक यमुना का अवरोध चाहने वाले दिल्ली से हरियाणा और फिर उससे ऊपर पहाड़ तक भी हैं, जिनने अवैध बालू खनन के लिए कई-कई जगह नदी के रास्ते रोके हुए हैं, या अनैतिक तरीके से इसके मार्ग को ही बदल दिया है, ऐसे लोगों की मंशा की पूर्ति के लिए पहाड़ पर ही नदी को बांधने के सरकारी प्रयास भी कम नहीं हैं। देहरादून के कालसी विकास खंड में यमुना नदी पर 204 मीटर ऊंचे बांध की लखवार व्यासी परियोजना 1972 में शुरू हुई। फिर इस पर काम बंद हो गया। 2014 में काम फिर शुरू हुआ और अब यमुना पहाड़ से नीचे उतरने से पहले यहीं घेर ली जाती है। जाहिर है कि जब पहाड़ में ही यमुना का भाव नहीं है तो हथिनी कुंड से वजीराबाद तक यह एक बरसाती नदी ही है। पहाड़ पर इतने बड़े बांध और कई सुरंगों

के जरिए पानी के मार्ग को बदलने से महज जल-प्रवाह ही कम नहीं हो रहा है, बल्कि इतने निर्माण का मलबा भी बह कर नीचे आ रहा है, जो नदी को उथला बना रहा है। दिसम्बर 21 के आखिरी हफ्ते में जब व्यासी जलविद्युत परियोजना की एक टरबाइन को प्रयोग के तौर पर खोला गया तो यमुना की धारा लगभग लुप्त हो गई थी। इससे स्पष्ट हो गया था कि इस परियोजना के कारण दिल्ली तक यमुना का रास्ता अब बंद हो गया है।

जब व्यापक निर्माण के कारण पहाड़ों पर जम कर जंगल काटे जाएं तो पारिस्थितिकी हानि के कुप्रभाव से नदी भी नहीं बच सकती। महज सिंचाई और बिजली के सपने में यमुना हरियाणा में आने से पहले ही हार जाती है। इधर, दिल्ली जिस नदी को निर्मल करने के लिए बजट बढ़ाती है, वास्तव में उस नदी का अस्तित्व है ही नहीं।

एक नजर

जैन धर्मावलंबी श्रद्धा के साथ मना रहे हैं दशलक्षण पर्व

खूंटी: जैन धर्म लंबियों द्वारा इन दिनों दशलक्षण पर्व मनाया गजा रहा है। पर्व का पांचवां दिन उत्तम सत्य है। दशलक्षण पर्व के अवसर पर पूरे जैन मंदिर को लाइट और फूलों से सजाया गया है। जयपुर के सांगनेर से भैयाजी प्रशांत जैन को आमंत्रित किया गया है। उन्हीं की विशेष देखरेख में मंदिर में पूजा चल रही है। उनका साथ देने के लिए गिरिडीह से सुनील जैन को बुलाया गया है। इस संबंध में जैन समाज कें रोहित जैन ने बताया कि 10 लक्षण धर्म यानी उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आरजव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम अकिचन और उत्तम ब्रह्मचर्य है। प्रतिदिन प्रातः मंदिर में अभिषेक के साथ धारा पूजन पूरे भक्ति भाव के साथ किया जा रहा है। संध्या में प्रशांत जैन द्वारा भक्तामार पाठ, स्वाध्याय किया जा रहा है। इसके बाद सुनील जैन द्वारा सामूहिक आरती करायी जा रही है। बताया गया कि 18 सितंबर को क्षमा वाणी पर्व मनाया जाएगा, जिसमें लोग साल भर में अपने द्वारा की गई गलतियों के लिए क्षमा मांगेंगे। कार्यक्रम को सफल बनाने में जैन समाज के अध्यक्ष चंद्रशेखर जैन, सचिन, रमेश जैन, प्रकाश जैन, श्रीपाल जैन, धर्म चंद्र जैन, महावीर जैन, विनय जैन, राकेश जैन, आदि योगदान दे रहे हैं।

झारखंड अलग राज्य के आन्दोलनकारियों का प्रदर्शन प्रशंसनीय : सतीश कुमार

मेदिनीनगर (पलामू): झारखण्ड आन्दोलनकारी संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर सम्पूर्ण राज्य में आन्दोलनकारियो ने बंद के दौरान सडक पर उतरकर हेमंत सोरेन सरकार को आईना दिखाने का काम किया। व सरकार के असली चरित्र को बेनकाब किया। झारखंड बंद मे राज्य के दर्जनों जन संगठन ने समर्थन किया व राज्य की जनता ने बंद को सफल बनाने में अपनी भूमिका अदा की व सहयोग किया उन्हें भी अभिनन्दन व जोहार ।कुछ दिनो के मेहमान हेमंत सोरेन सरकार नही सचेत होती तो झारखण्ड के सत्ता से हाथ धोना पड़ेगा। झारखण्ड बिरोधीयो व राज्य के लुटेरों के साथ गठबंधन कर सरकार चलाने की मंशा पाले हेमंत सोरेन सरकार को आन्दोलनकारी अगामी चुनाव में सबक सिखाने का मन बना लिया है। जीनके बदौलत सरकार मे रहकर मलाई चाट रहे हैं वो आन्दोलनकारी राज्य बना सकते हैं तो आपका खेल भी बिगाड सकते है।कल के बंद मे राज्य के कई जिलों में मे पुलिस ने आन्दोलनकारियो के साथ दुर्व्यवहार किया है व गिरफ्तार किया गया है जो राज्य के निर्माण के बाद गृह बिभाग के संकल्प के बिरूद्ध है। राज्य के डी जी पी से शिकायत की जाएगी। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के केंद्रीय संयोजक सतीश कुमार ने कहा कि कल का बंद नये उलगुलान की शुरूआत है।

17 सितंबर से दो अक्टूबर तक चलेगा स्वच्छता ही सेवा अभियान : डीडीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : जिले में एक बार फिर स्वच्छता ही सेवा अभियान बड़े पैमाने पर चलाए जाने वाला है। इस अभियान को सफल बनाने को लेकर गुरुवार को डीडीसी रॉबिन टोप्पो की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। 17 सितंबर से दो अक्टूबर तक चलने वाला अभियान स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता विषय पर आधारित है। डीडीसी ने बताया कि 17 सितंबर से एक अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा अभियान एवं दो अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत दिवस मनाया जाना है। मौके पर उन्होंने स्वच्छता ही सेवा अभियान के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, जेएसएलपीएस, पंचायती राज, मनरेगा, नगर परिषद सहित अन्य विभागों को आपसी समन्वय के साथ अभियान का सफल आयोजन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। डीडीसी ने यह भी कहा कि निर्धारित कैलेंडर के अनुरूप गतिविधियां होनी है। जिसकी तस्वीरें नियमित रूप से पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल को उपलब्ध कराना है। बैठक के दौरान उप विकास आयुक्त ने 17 सितंबर से शुरू हो रहे स्वच्छता ही सेवा अभियान के पूर्व 15 सितंबर तक जिले के अलग-अलग क्षेत्र में सीटीयू चिन्हित करने का निर्देश दिया। वहीं उन्होंने विद्यालयों में स्वच्छता रैली, स्वच्छता शपथ, सेमिनार, विभिन्न प्रतियोगिताएं आदि का आयोजन कर बच्चों को स्वच्छता ही सेवा अभियान से जोड़ने का निर्देश दिया। मौके पर उप विकास आयुक्त ने जनप्रतिनिधियों की सहभागिता भी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल के जिला समन्वयक आईईसी कॉर्डिनेटर, यूनिसेफ सहयोगी संस्था के जिला समन्वयक के द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत निर्धारित गतिविधियों एवं अभियान के सफल आयोजन को लेकर किए जाने वाले कार्यों को लेकर सभी को जानकारी दी गई।

संक्षिप्त खबरें

पीपीके कॉलेज बुंडू की नयी प्रिंसिपल डॉ. विनीता कुमारी का छात्र नेता राजू कुमार ने किया स्वागत

सिल्ली: गुरुवार को पी.पी.के. कॉलेज बुंडू में छात्रों का एक प्रतिनिधिमंडल वरिष्ठ छात्र नेता राजू कुमार उर्फ.राजीव के नेतृत्व में कॉलेज के नये प्रिंसिपल डॉ.विनीता कुमारी को बुके भेंट कर उनका स्वागत किया और बधाई दिया राजू कुमार ने कहा की कॉलेज के बुनियादी सुविधाएँ ,गर्ल्स हॉस्टल का निर्माण , बी॰एड॰तथा बाकी विषयों में स्नातकोत्तर की पढ़ाई शुरू करने तथा बेहतरीन शैक्षणिक माहौल स्थापित करने की उम्मीद रखती है राजू कुमारने नये प्रिंसिपल महोदया को बधाई देते हुए कहा की कॉलेज के हितार्थ के लिए प्राचार्या महोदया को जब भी छात्र प्रतिनिधियों की आवश्यकता होगी हमलोग मदद करने के लिए पूरी तत्परता के साथ खड़े रहेंगे प्रतिनिधिमंडल में मुख्य रूप से केशव महतो, अनिल कुमार, नरसिंग महतो, राजेश महतो , रौशन कुमार, विष्णु प्रसाद समेत कई छात्र मौजूद थे।

आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम में लगा स्वास्थ्य शिविर

सिल्ली: सिल्ली प्रखंड अंतर्गत लुपम पंचायत में आपके द्वारा आपकी सरकार कार्यक्रम में बुधवार के दिन सिल्ली सामुदायिक अस्पताल के द्वारा अबुआ स्वास्थ्य योजना के तहत स्वास्थ्य शिविर का आयोजन डॉक्टर विवेक कुमार के नेतृत्व में किया गया। स्वास्थ्य शिविर में कल 75 लोगों का बीपी, शुगर, सिकल शेल एनीमिया की जांच की गई। मौके पर डॉक्टर विवेक ने रोगियों को स्वास्थ्य से संबंधित बहुत सारी बातों को बताया। मौके पर मीठी, एएनएम सुनंदा जायसवाल, कलावती, एमपीडब्ल्यू सुरेंद्रनाथ महतो, लुपुंग पंचायत की मुखिया सीमा गोंझूऔर टुटकी पंचायत की मुखिया शर्मिला कुमारी मौजूद रही।

भाजपा ने चलाया संकल्प पत्र सुझाव अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : भारतीय जनता पार्टी चैनपुर ने प्रदेशाध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के निदेर्शानुसार चैनपुर के कुरुमगढ चौक ब्लॉक मोड़ बस स्टैंड सहित कई जगहों पर संकल्प पत्र सुझाव अभियान मंडल अध्यक्ष बुधराम नायक की अध्यक्षता में चलाया गया। इस संकल्प पत्र सुझाव अभियान में एक पेटी के माध्यम से जगह जगह पर लोगों के सुझाव पत्रक में अंकित कर पेटी में डाला गया। भारतीय जनता पार्टी गुमला जिला के उपाध्यक्ष अवधेश प्रताप शाहदेव ने बतलाया कि इस संकल्प पत्र सुझाव अभियान से ही आने वाले विधानसभा चुनाव में घोषणा पत्र तैयार होगा अतःइन्होंने लोगों से अपील किया कि आने वाले समय में झारखंड राज्य के विकास में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने हेतू अपने सुझाव लिखकर इस पेटी में डालें। वहीं इस कार्यक्रम के संयोजक अमित किशोर पाण्डेय ने कहा कि यह संकल्प पत्र सुझाव अभियान चलाकर भारतीय जनता पार्टी ने आम जनता और सरकार के बीच संवाद स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया है।इसके माध्यम से लोग अपनी आवाज सरकार तक पहुंचाकर देश हित में कार्य कर सकते हैं। मौके पर मुख्य रूप से निवर्तमान अध्यक्ष मनोहर बड़ाइक,युवा मोर्चा अध्यक्ष शशि भूषण सिंह अरविन्द मौर्य दीपक रजक पंकज शर्मा सहाबीर गोप शिवा नायक बिनोद केशरी रुक्मणि देवी संगीता देवी अनुराधा देवी अनिता देवी सहित भाजपा के कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

पंचायत में आपकी योजना- आपकी सरकार- आपके द्वार कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : प्रखंड अंतर्गत रामपुर पंचायत में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूवात प्रखण्ड विकास पदाधिकारी यादव बैठा जिला परिषद सदस्य मेरी लकड़ा और रामपुर पंचायत के मुखिया दीपक खलखो ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस शिविर में स्वास्थ्य विभाग से लेकर तकरीबन सभी विभाग के स्टॉल लगाए गए थे वही शिविर में योजनाओं का लाभ लेने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। शिविर में फसल बीमा के 67, केसीसी के 2, उद्यान के 2, राजस्व विभाग 59, पशुधन विभाग 25, मनरेगा 12 , अबुआ आवास 130, मईया सम्मान योजना के लिए 140, दावा वितरण 84, सावित्री बाई फुले के लिए आवेदन जमा किये गए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ने उपस्थित लोगों से कहा कि आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन समस्याओं के निष्पादन के लिए चैनपुर प्रखण्ड के सभी पंचायतों में बारी बारी से किया जा रहा है ताकि आप सबों को सरकार की हर महत्वाकांक्षी योजना का लाभ मिल सके। वहीं जिला परिषद सदस्य मेरी लकड़ा ने लोगों से अपील किया कि सभी जरूरत मंद व्यक्ति इस कार्यक्रम के माध्यम से सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाएं। वही शिविर में अबुआ आवास,राशन कार्ड आवासीय प्रमाणपत्र, सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना पशुधन योजना सर्वजन पेंशन योजना केसीसी, वृद्धा पेंशन, जाति प्रमाण पत्र विधवा पेंशन सहित अन्य योजनाओं के लिए आवेदन जमा हुए। वही मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा, जिला परिषद सदस्य मेरी लकड़ा मुखिया दीपक खलखो सभी योजनाओं से संबंधित पदाधिकारी सहित रामपुर पंचायत सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे।

कार्यालय नगर परिषद रामगढ़।

निविदा रद्द संबंधीत सूचना

एतद् द्वारा सर्वसाधरण को सूचित किया जाता ह कि रामगढ़ नगर परिषद् द्वारा निकाले गए निविदा संख्या–NIT/RGH/NP/14/2024-25 जिसका PR No.- 335229 District (24-25)#D द्वारा निविदा प्रकाशित की गई थी, जिसे अपरिहार्य कारणों से उक्त निविदा को रद्द किया जाता है।

प्रशासक
नगर परिषद रामगढ़।

PR 335491 District(24-25)D

SHEIKH BHIKHARI MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL, HAZARIBAG
(Formerly called as - HAZARIBAG MEDICAL COLLEGE, HAZARIBAG)
Ph. No. 06546-296629/ website: www.hazaribagmedicalcollege.org/
E-mail Id: hazaribagmedicalcollege@gmail.com/
sheikhbhikharimedicalcollege@gmail.com

Very Short E-Tender no. 01/2024-25

Sl no	Details	Timeline/other Particulars
1	Name of work	For Purchasing of Medical Books for Central Library of Sheikh Bhikhari Medical College, Hazaribag.
2	Name & Address of the Tender Inviting Authority	Principal, Sheikh Bhikhari Medical College, Hazaribag. At- Hazaribag, Jharkhand PIN-825301
3	Bidding Document Fee (Non- Refundable)	Rs. 500/- (Ruppes Five Thousand) through online submission gateway.
4	Date of Publication of Tender on website	14/09/2024 on www.jharkhandtenders.gov.in 11:00 AM
5	Last date and time for submission of bids	21/09/2024 up to 02:00 PM
6	Opening of Technical Bid	23/09/2024 at 03:00 PM in the office of the Principal, Sheikh Bhikhari Medical College, Hazaribag.

Note – 1. Tender will be accepted only through e-tender.
2. For Details of Tender Terms, Conditions & other Pls. visit website www.jharkhandtenders.gov.in from 14/09/2024
Letter no:- 1147 dated 12/09/2024

Principal
Sheikh Bhikhari Medical College,
Hazaribag.

PR 335636 Health Med Edu and Family Welfare(24-25)#D

कांग्रेस प्रदेश महासचिव विनोद कुशवाहा ने चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव विनोद कुमार कुशवाहा का सदर विधानसभा क्षेत्र में जनसंपर्क अभियान लगातार जारी है। श्री कुशवाहा ने सदर प्रखंड अंतर्गत तरवा- खरवा,मेरू, डंडई अमनारी का तूफानी दौरा कर जनसंपर्क अभियान चलाया। इस दौरान श्री कुशवाहा ने आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत मेरु और अमनारी के आयोजित शिविरों का जायजा लिया। ऐसे में बताना अहम यह होगा कि श्री कुशवाहा कांग्रेस की नीति एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचने को लेकर लगातार जनसंपर्क कर लोगों को अवगत करा रहे हैं साथ ही साथ झारखंड सरकार द्वारा जनहित में चलाए जा रहे जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे तौर पर लाभुकों को मिले इसको लेकर दृढ़ संकल्प के साथ विनोद कुशवाहा आयोजित शिविरों का निरीक्षण कर जायजा ले रहे हैं और संबंधित विभागों में दिए जा रहे आवेदनों का ऑन द स्पॉट निष्पादन को लेकर दिशा निर्देश भी दे रहे हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक झारखंड सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके। इसी को मद्दे नजर रखते हुए ऑन द स्पॉट आवेदनों का निष्पादन स्थानीय मुखिया के द्वारा किया जा रहा है। इस मौके पर श्री कुशवाहा ने कहा कि आज देश राहुल गांधी की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है जिस प्रकार से राहुल गांधी ने देश में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के द्वारा देश में फैले नफरतों के बाजार को खत्म कर मोहब्बत का संदेश दिया।

पंचायत पैका में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अनगड़ा : प्रखण्ड के पंचायत पैका में सरकार आपके द्वार आयोजित की गई कार्यक्रम में गोद भराई रस्म के साथ 6 माह के बच्चे का मुंहजूठी भी किया गया प्रखण्ड विकास पदाधिकारी जयपाल सोई ने बताया कि गोद भराई के दौरान महिलाओं को पोष्टिक आहार के साथ साथ 7 पीला फलों 7 हरी सब्जियां का सेवन करनी एव ज्यादा भोजन ग्रहण करनी चाहिए जिसे मां के साथ - साथ बच्चा भी स्वस्थ अवस्था में रहें । कैंप में निम्नलिखित अवेदन प्राप्त किए गए अबुआ आवास 217 सावित्री बाई फुले 10 सर्वजन पेंशन 42 मईंया योजना 75 बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीसा 52 पशुधन योजन 10 स्वास्थ जांच 43 वही बहेया में 13 छात्राओं के बीच साइकिल का भी वितरण हुआ।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमंडल, सिमडेगा।
e-mail:-eercdsimdega-jhr@nic.in
अतिअल्पकालीन उद्धरण आमंत्रण सूचना सं0–01/2024–25, दि0–12.09.2024

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पथ निर्माण विभाग, झारखण्ड, सिमडेगा के **"Providing fitting & fixing of modular ABS Speed breaker (i) 750 mm Width x 250 mm Length x 75 mm top height** एवं **(ii) 350 mm Width x 250 mm Length x 50 mm top height"** हेतु सूचीबद्ध निर्माता/आपूर्तिकर्ता से दर (सभी कर सहित) उद्धरण मुहरबन्द लिफाफे में अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में प्राप्त किया जायेगा। दिनांक 21.09.2024 को अपराह्न 3.30 बजे अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में उद्धरणकर्त्ता / उनके द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति के समक्ष उपस्थित / अनुपस्थिति में खोला जायेगा।

नोट :–
1. उद्धरणकर्त्ता को दर उद्धरण में PAN एवं GST अंकित करना अनिवार्य होगा।
2. किसी भी उद्धरण को बिना कारण बताये रद्द करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी को सुरक्षित होगा।
3. उद्धृत दर में ढुलाई एवं अधिष्ठापन की राशि शामिल रहेगी।
4. यह दर उद्धरण आमंत्रण सूचना मात्र दर निर्धारण हेतु होगा।
5. सामग्रियों का आपूर्ति हेतु अलग से निविदा आमंत्रित की जायेगी।

कार्यपालक अभियंता
पथ निर्माण विभाग, पथ प्रमंडल,
सिमडेगा।

PR 335626 Simdega(24-25)D

झारखण्ड सरकार
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
उद्यान निदेशालय, झारखण्ड
कार्यालय जिला उद्यान पदाधिकारी, लोहरदगा

" प्रोमोशन ऑफ अरबन फार्मिंग " योजना के लाभ हेतु
आम – सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग (उद्यान प्रभाग) के स्वीकृत्यादेश संख्या–42, दिनांक– 24.07.2024 द्वारा राज्य उद्यान विकास योजनान्तर्गत उपयोजना " प्रोमोशन ऑफ अरबन फार्मिंग " के तहत शहरी इलाको एवं एससे सटे हुए आस–पास के छोटे–भूखण्ड एवं सरकारी परिसर, जहाँ उपलब्ध हो तथा Trace Gardening अन्तर्गत जैविक एवं गुणवत्तायुक्त विभिन्न प्रकार के सब्जियों, फूलों एवं फलों के उत्पादन किये जाने हेतु प्रमोशन ऑफ अरबन फार्मिंग की योजना स्वीकृत है।

उपरोक्त योजनान्तर्गत Trace Gardening तथा शहरी क्षेत्रों में खाली पडे भू–खण्डो पर इच्छुक कृशक द्वारा आवेदन के माध्यम से लाभ दिया जायेगा।

इस योजना का कार्यान्वयन सरकारी परिसर में 100 प्रतिशत अनुदान पर एवं निजी व्यक्तियों का Trace Gardening एवं अवासीय परिसर में खाली पडे भू–खण्डो पर 75 प्रतिशत अनुदान पर किया जायेगा।

- आवेदन जमा दिनांक 21.09.2024 तक कार्यालय कार्य अवधि में किया जायेगा।

विशेष जानकारी हेतु कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है।

ह0/–
जिला उद्यान पदाधिकारी,
लोहरदगा।

PR.NO.335527 Lohardaga(24-25):D

बालिग हो रहा जिला लेकिन खल रहा संसाधनों का अभाव : चैंबर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ जिला अब बालिग हो रहा है। 17वीं वर्षगांठ पूरी हो चुकी है, लेकिन अभी भी जिला वासियों को संसाधनों का अभाव खल रहा है। यह बातें गुरुवार को रामगढ़ चैंबर ऑफ कमर्स एंड इंडस्ट्रीज भवन में रामगढ़ स्थापना दिवस कार्यक्रम के दौरान अध्यक्ष विनय अग्रवाल ने कही। उन्होंने कहा कि अब इस जिले के भविष्य को लेकर जिला के पदाधिकारी और आम नागरिकों को और गंभीर होना होगा। रामगढ़ जिले के 17 वर्ष पूर्ण होने पर केक काटकर चेंबर सदस्यों ने अपनी खुशी का इजहार किया। मौके पर चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष विनय अग्रवाल ने कहा कि रामगढ़ जिले की तुलना दूसरे जिले से करने पर यह महसूस होता है कि 17 वर्षों में ही यहां विकास के कई नए आयाम गढ़े गए हैं। लेकिन अभी भी संसाधनों का अभाव है। गोला और भुरकुंडा में औद्योगिक क्षेत्र का निर्माण नहीं होने से नए इंडस्ट्रीज नहीं लग पा रहे हैं। बिजली की व्यवस्था भी लचर है। पुराने उद्योगों को लेकर भी रामगढ़ जिला प्रशासन का रवैया बेहतर नहीं है। जो व्यापारियों के लिए बेहद दुखद है। जिला का एकमात्र बाजार समिति भी सुविधाओं के अभाव में खंडहर बनकर रह गया है। चूटूपाल घाटी में आए दिन होने वाली दुर्घटना में मोत के कारण पूरा जिला कलंकित हो रहा है। आम जनमानस और अधिवक्ता भी सुविधाओं के लिए तरस रहे जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष आनंद अग्रवाल (अधिवक्ता) ने कहा कि रामगढ़ जिला बनने के पश्चात यहां की विधि व्यवस्था में बहुत सुधार हुआ है। लेकिन अभी भी आए दिन कुछ ना कुछ घटनाएं होने से यहां के व्यापारी के साथ-साथ आम जन भी अपराधी घटनाओं से जूझ रहे हैं। रामगढ़ जिला में बना सिद्धू कान्हू स्टेडियम सुविधाओं के अभाव में जूझ रहा है। आज भी रामगढ़ शहर के साथ-साथ जिला के अन्य भागों में बिजली की समस्या लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। चेंबर के अन्य सदस्यों ने 17 वर्षों में हुए कार्यों पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की। इस अवसर पर चेंबर के उपाध्यक्ष मनजीत सहनी, मानद सचिव मानू चतुर्वेदी, कोषाध्यक्ष इंद्रपाल सिंह सैनी, पूर्व अध्यक्ष प्रदीप सिंह, आनंद अग्रवाल, दुर्गा प्रसाद सिंह, मनजी सिंह, कार्यकारिणी सदस्य अमरेश गणक, अमित साहू, राहुल जैन, राजेश अग्रवाल, परविंदर सिंह जस्सल, अनिल मित्तल, मृत्युंजय केसरी आदि उपस्थित थे।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
NATIONAL HIGHWAY DIVISION, MEDININAGAR
Jailhata, Near Railway Crossing, Daltonganj, Dist.-Palamau-822101
Ph. No. 06562- 231237, E-mail Id- eenhmedini-jhr@nic.in, eenhmedini@gmail.com

Short Term Notice Invitation for Quotation (2nd Call)

Quotation Ref. No. NH/MEDININAGAR/01/2024-25 Dated : 10.09.2024

Name of work: Hiring of Commercial Vehicles of One No. of Innova (In well condition)/equivalent on monthly hire basis for the O/o Executive Engineer, National Highways Division, Medininagar officials - Reg.

Time Period: One year likely to be extendable up to a maximum period for Two (02) years and on same terms and conditions.

Sealed Quotation are hereby invited from established, experienced and reputed individuals, firms/ Organizations and other agencies having adequate experience in execution of such works.

The blank BOQ and terms & conditions for the above may be obtained from the office of the undersigned on any working day from **12.09.2024 to 23.09.2024** on 05:00 PM office hours by submitting a copy of online receipt towards payment of cost of document of Rs. 500/- (Rupees Five Hundred only/-) on NTRP Portal-https://bharatkosh.gov.in/Ministry Info.aspx through Pay & Account Office Code : 034756- PAO(NH)- Kolkata and Drawing & Disbursing Office (DDO) Code : 202122-Regional Officer, Ministry of Road Transport Highways.

The duly filled quotation in sealed envelope can be submitted in the office of the undersigned up to 03:00 PM on **24.09.2024**. The quotation will be opened on **24.09.2024** at 03:30 PM in the presence of intending quotationers or its authorized representatives, who choose to remain present.

This office reserves the right to reject all Quotations and cancel the Quotations without assigning any unavoidable reasons.

Executive Engineer
National Highways Division, Medininagar
Ph: 9006954612

PR 335471 NREP (24-25)_D

एक नजर

आंगनवाड़ी केंद्र नहीं मगर 95 बच्चे नामांकित

ईचागढ़ : कुकडू प्रखंड अंतर्गत ओड़िया पंचायत के दुलमी गांव में 95 बच्चे आंगनबाड़ी केंद्र में नामांकित है, लेकिन एक भी आंगनबाड़ी केंद्र नहीं है। दुलमी गांव की जनसंख्या 1000 है। जबकि 250 जनसंख्या में एक आंगनबाड़ी केंद्र होना चाहिए। लेकिन दुलमी गांव में आंगनबाड़ी केंद्र नहीं है जिसके चलते नैनीहाल के बच्चे शिक्षा से वंचित है। इस संबंध में पंचायत समिति सदस्य श्रीमती सेफाली दत्ता ने स्थानीय विधायक व सम्बंधित पदाधिकारी को पत्र के माध्यम से आंगनवाड़ी केंद्र खोलने के लिए आग्रह भी किया।

नरेंद्र मोदी की सभा में बोड़ाम से शामिल होंगे हजारों कार्यकर्ता

पटमदा : जुगसलाई विधानसभा क्षेत्र के पटमदा ,बोड़ाम,कमलपुर और एमजीएम मंडल के कार्यकताओं के साथ मोदी कार्यक्रम प्रभारी भाजपा नेता अभय सिंह की उपस्थिति में एक आवश्यक बैठक संपन्न हुई।बैठक में आगामी 15 सितंबर रविवार को गोपाल मैदान में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम को सफल बनाने को लेकर बैठक संपन्न हुआ।बैठक में जानकारी देते हुए कार्यक्रम प्रभारी अभय सिंह ने बताया की कमलपुर,पटमदा और बोड़ाम,एमजीएम मंडल से हजारों की संख्या में कार्यकर्ता सभा में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम को लेकर कार्यकताओं ने उत्साह है।वही राज्य में भाजपा की सरकार का बनना सुनिश्चित हो गया है।हेमंत सोरेन की सरकार से राज्य की जनता त्रस्त हो गई हैं।बैठक में जिला उपाध्यक्ष प्रदीप महतो, प्रदीप कुमार बेसरा,संदीप मिश्रा,किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष मुचिराम बाउरी,शांतनु मुखर्जी,बासुदेव मंडल, महावीर महतो, बिरेन महतो,सूरज साहू,मंटू दत्ता, कृपासिंधू सहित काफी में भाजपाई उपस्थित थे।

लातेहार में बस और ट्रक में टक्कर, आठ से अधिक यात्री घायल

लातेहार: लातेहार जिले के चंदवा थाना क्षेत्र अंतर्गत बालूमाथ चंदवा मुख्य मार्ग पर कोयला लदे ट्रक और यात्री बस में टक्कर हो गयी। इस घटना में आठ से अधिक यात्रियों को चोट लगी । इनमें दो गंभीर रूप से घायल हो गए । सभी घायलों को चंदवा अस्पताल में पहुंचाया गया, जहां सभी घायलों का प्राथमिक इलाज किया गया। जानकारी के अनुसार बालूमाथ की ओर से कोयला लेकर ट्रक आ रही थी । वहीं उसके पीछे यात्री बस भी आ रही थी। भुसाड़ गांव के पास कुछ युवकों ने चंदा लेने के लिए ट्रक को सड़क पर रुकने का इशारा किया। अचानक चालक के द्वारा ब्रेक लगाकर गाड़ी को रोकी गई, जिससे तेज रफ्तार से आ रही यात्री बस पीछे से ट्रक को टक्कर मार दी। तेज रफ्तार के कारण टक्कर से बस में बैठे यात्रियों को चोट आई। इधर घटना की जानकारी मिलने के बाद डीएसपी अरविंद कुमार के निर्देश पर पुलिस की टीम तत्काल एंबुलेंस के साथ घटनास्थल पर पहुंची और सभी घायलों को चंदवा अस्पताल पहुंचाया।जहां चिकित्सकों की टीम के द्वारा घायलों का इलाज किया गया।घायलों में रामगढ़ निवासी दौलतिया देवी और चतरा निवासी आदित्य प्रसाद को गंभीर चोट आई । शेष अन्य घायलों को प्राथमिक इलाज के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया।

सामान्य स्नातक योग्यताधारी संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला दंडाधिकारी - सह- उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में समहरणालय सभागार में झारखंड सामान्य स्नातक योग्यताधारी संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा- 2023 के सफल आयोजन को लेकर पदाधिकारियों साथ समीक्षा बैठक की। मौके पर उपायुक्त ने कहा कि दिनांक 21 एवं 22 सितंबर 2024 को झारखंड कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित होने वाले झारखंड सामान्य स्नातक योग्यताधारी संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा 2023 के कदाचार मुक्त एवं शांतिपूर्ण वातावरण में आयोजन को लेकर पदाधिकारियों को जरूरी बिंदुओं पर आवश्यक एवं उचित दिशा निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जिले में कुल 13 केंद्रों में यह परीक्षा आयोजित की जायेगी। जो तीन पाली में आयोजित होगी। प्रथम पाली पूर्वाहन 08:30 बजे से पूर्वाह्न 10:30 बजे तक, दूसरी पाली पूर्वाहन 11:30 बजे से अपराहन 1:30 तक व तृतीय पाली अपराह्न 3:00 बजे से अपराह्न 5 बजे तक होगी। कदाचार मुक्त शांतिपूर्ण एवं सफलतापूर्वक परीक्षा संचालन हेतु परीक्षा केंद्र बार स्टौटिक दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी व सशस्त्र पुलिस बल, महिला बल के प्रतिनियुक्त की गई है जिनमें, स्टौटिक दंडाधिकारी कुल-14, गस्ती दंडाधिकारी में कुल-13, एवं उड़न दस्ता दल के कुल-04 पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है। मौके पर उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, अपर समाहर्ता राज महेश्वरम, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी जयवर्धन कुमार, जिला परिवहन पदाधिकारी विष्णु देव कच्छप, जिला कल्याण पदाधिकारी प्रमोद आनंद, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी छुटेश्वर कुमार दास, सहित जिले के वरीय पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी अंचल अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

25000 वोल्ट का करंट लगने से एक मजदूर हुआ घायल

साहिबगंज: साहिबगंज मालदा रेलवे खंड अंतर्गत तालझारी रेलवे स्टेशन परिसर में गुरुवार को रंग रोगन करने के लिए रेलवे ओवर ब्रिज में रंग कर रहा था। इसी दौरान मालदा के पंकज मंडल 25 हजार विद्युत तार के चपेट में आने से घायल हो गया। जहां उनके सहयोगी ने इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तालझारी लाया गया, जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार किया। घायल मजदूर पंकज मंडल ने बताया कि हमलोग चार की संख्या में मालदा से तालझारी रेलवे स्टेशन पर बीते तीन दिनों से तालझारी में रंग रोगन का काम कर रहे हैं गुरुवार को तालझारी रेलवे ओभर ब्रिज में रंग रोगन काम कर रहे थे, तभी 25000 वोल्ट के चपेट में आने से घायल हो गए।

थाना प्रभारी ने लोगों से की शांतिपूर्वक पर्व मनाने की अपील

साहिबगंज: राधानगर थाना परिसर में थाना अध्यक्ष नितेश कुमार पांडे व एसडीओ कपिल कुमार एसडीपीओ विमलेश कुमार त्रिपाठी एवं बीडीओ विशाल कुमार पांडेय की संयुक्त अध्यक्षता में विश्वकर्मा पूजा तथा ईद मिल्लादून नबी। पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित आमलोग भी उपस्थित थे। उपस्थित लोगो को संबोधित करते हुए थाना प्रभारी नितेश कुमार पांडे ने कहा की हम सभी हर वर्ष का हर एक त्यौहार शांतिपूर्ण वातावरण में मनाते हैं। इस बार भी शांतिपूर्ण वातावरण में मनाने की अपील की। बीडीओ विशाल कुमार पांडे ने लोगो से अपील किया कि सार्वजनिक रूप से शांति पूर्वक जुलूस निकालना है। आपसी भाईचारा से ईद मिलादुन्नबी मनाना है तथा एक दूसरे से किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखना है। राधानागर थाना अध्यक्ष नितेश कुमार पांडे ने कहा कि इस बार ईद मिलादुन्नबी पर्व में डीजे पर पूर्णतः प्रतिबन्ध रहेगा। क्षेत्र में कही भी डीजे नहीं बजाया जाएगा। ईद मिलादुन्नबी में जहां भी डीजे बजाया जाएगा कानूनी कार्रवाई किया जाएगा। इसको लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद रहेगी हर जगह पुलिस की पैनी नजर रहेगी।असामाजिक तत्वों पर पुलिस प्रशासन की पैनी नजर रहेगी। हुड़दंग मचाने वाले के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बैठक में उपस्थित पतौड़ा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि फिरोज, डॉ मोहम्मद शफीक, उप प्रमुख मामलोत शेख, मुखिया प्रतिनिधि मसीदुर रहमान, मो० शाहिद अख्तर, समाज सेवक सुनील प्रमाणिक, अनवारूल हक, मोस्ताफा शेख, बीस सूत्री सदस्य कीनू सोरेन, दर्जनों लोग मौजूद थे।

फूलभंगा में शौचालय की हुई जांच

साहिबगंज: बरहेट प्रखंड क्षेत्र के फूलभंगा पंचायत अंतर्गत लोगाई गांव के मांझी टोला में एसीबी की टीम शौचालय की फिर से जांच शुरू की है। इस जांच दल में एसीबी का एसपी सहदेव साव,कनीय अभियंता नवनीत कुमार, पंचायत सचिव संतोष कुमार, शिक्षक शमशेर आलम, स्टनो रणधीर कुमार के अलावा वार्ड सदस्य की उपस्थिति में जांच किया गया। जिसमे फूलभंगा पंचायत के मांझी टोला और ताला टोला 417 शौचालय की टीम के सदस्यों के द्वारा घर-घर जाकर शौचालय की जांच की गई। ज्ञात हो कि फूलभंगा गांव के समाजसेवी सोनाली हेंब्रम के द्वारा फूलभंगा में शौचालय निर्माण का व्यापक अनियमितता की जांच की मांग को लेकर हाईकोर्ट में पीआईएल दाखिल कर जांच की मांग की थी। जिसके बाद हाई कोर्ट के निर्देश पर एसीबी की टीम दूसरी बार फूलभंगा पहुंचकर जांच दूसरी बार जांच प्रारंभ की है। खबर लिखे जाने तक जांच टीम द्वारा जांच जारी था।

पंचायत में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का मुखिया सावित्री सिंह ने किया उद्घाटन

पटमदा: पटमदा प्रखंड के ओड़िया पंचायत में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार शिविर का पंचायत की मुखिया सावित्री सिंह ने द्वीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया।इस दौरान मुखिया के हाथो पंचायत के कई लाभुको के बीच विभिन्न योजनाओं से संबंधित परिसंपति का वितरण किया गया।इस दौरान शिविर में मुखिया सावित्री सिंह,सहदेव ,बीएओ देव कुमार सहित काफी संख्या में पंचायत के ग्रामीण उपस्थित थे।

मदरसा फैजुल उलूम हरिहरा की हुई जांच

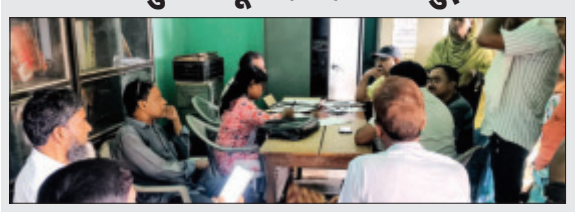

बरहरवा: प्रखंड क्षेत्र के हरिहरा पंचायत स्थित मदरसा फैजुल उलूम, हरिहरा में 3 पदों के लिए आलिम एवं शिक्षक बहाली को लेकर विवाद थामने का नाम नहीं ले रहा है। बहाली प्रक्रिया में कथित धांधली को लेकर ग्रामीणों की शिकायत पर जिला शिक्षा पदाधिकारी के आदेश पर गुरुवार को क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी एवं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी के नेतृत्व में मदरसा का स्थलीय जांच किया गया। इस दौरान जांच टीम ने प्रधान मौलवी मजहरूल इस्लाम से आवश्यक कागजातों की मांग की। इस दौरान ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि मदरसा के प्रधान मौलवी मजहरुल इस्लाम एवं सचिव मंजारूल इस्लाम के मिलीभगत से मोटी रकम लेकर पहले ही 3 आवेदकों का चयन कर लिया गया है। इनमें से एक प्रधान मौलवी का पुत्र भी है। इसे लेकर ग्रामीणों ने भरपूर विरोध दर्ज कराया। हालांकि इससे पहले जिला शिक्षा पदाधिकारी के पत्रांक 1713, दिनांक: 09/09/2024 के माध्यम से बहाली को लेकर राजस्थान इंटर विद्यालय,साहेबगंज में 12 सितंबर को आयोजित होने वाले साक्षात्कार से तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया गया था।

इंद मेला 15 को, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का होगा आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चांडिल : कुकडू प्रखंड क्षेत्र के पारगामा में प्रत्येक साल होने वाले एक दिवसीय प्रसिद्ध इंद मेला का आयोजन इस वर्ष 15 सितंबर 2024 को होगा। इस संबंध में मेला के अध्यक्ष स्वपन चंद्र महतो ने जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष प्रसिद्ध झारखंडी इंद मेला में झूमर संस्कृतिक व नृत्य कार्यक्रम का आयोजन होगा। इस अवसर पर आयोजित होने वाले झूमर सांस्कृतिक कार्यक्रम में जंगल महल महिला झूमर दल ऊपर बाटरी, कोटशीला, पुरुलिया के महिला झूमर शिल्पी अंबिका महतो, गोविंदलाल महतो, झूमर उस्ताद भोलानाथ महतो व राजदूत महतो के द्वारा झूमर पेश किया जाएगा। वहीं सोनारी जमशेदपुर के रघु एंड माही डांस ग्रुप के द्वारा आदिवासी, बंगला एवं हिंदी गानों में रंगारंग नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा।

मेला में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक सविता महतो होंगी शामिल

मेला में मुख्य अतिथि के रूप में ईचागढ़ की विधायक सविता महतो को आमंत्रित किया गया है। इसके साथ ही अति विशिष्ट और विशिष्ट अतिथि के रुप में झामुमो के कई नेता, पंचायत प्रतिनिधि, ग्राम प्रधान आदि को आमंत्रित किया गया है। मेला को लेकर पारगामा में तैयारी जोरों पर चल रही है। मेला देखने के लिए यहां दूर-दराज से लोग पहुंचते हैं।

उपायुक्त ने की समाज कल्याण विभाग के कार्यों की समीक्षा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : उपायुक्त हेमंत सती के अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में समाज कल्याण विभाग की समीक्षात्मक बैठक आहूत की गई। बैठक में उपायुक्त के द्वारा जिला समाज कल्याण विभाग के कार्यों की समीक्षा की गई। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त के द्वारा मुख्यमंत्री सुकन्या योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पूरक पोषाहार योजना, आंगनबाड़ी केंद्र भवन, टेक होम राशन से संबंधित विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।उपायुक्त के द्वारा सावित्रीबाई किशोरी समृद्धि योजना के समीक्षा के क्रम में विभिन्न प्रखंडों को दिए गए टारगेट के अनुरूप कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिया कि सावित्रीबाई किशोरी समृद्धि योजना का लाभ बच्चियों की आयु प्रतिवेदन की जांच कर उन्हें इन योजना का लाभ देना सुनिश्चित करेंगे। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त के द्वारा सभी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी को निर्देश दिए गए कि आवंटित लक्ष्य के अनुरूप शत-प्रतिशत उपलब्धि प्राप्त करने की दिशा में कार्य पूर्ण करें। जिला में बनाए जा रहे हैं आंगनबाड़ी की निविदा के विषय में जानकारी ली एवं सभी आंगनबाड़ी का निर्माण कार्य को आरंभ करने एवं समय पर पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया। मौके पर उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी चित्रा यादव, सीडीपीओ एवं महिला पर्यवेक्षिका, समाज कल्याण विभाग के कर्मीगण मौजूद थे।

दुर्गम जंगल के बीच ग्रामीणों की हो रही सेहत की जांच

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला के बोरियो प्रखंड में गुरूवार के दिन प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, बोरियो के आदेशानुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बोरियो के आयुष्मान आरोग्य मंदिर, रानीबथान अंतर्गत अति दुर्गम पहाड़ी गाँव तंडोला पहाड़ और धूलियानी में स्वास्थ्य शिविर, मलेरिया मास सर्वे एवं पीवीजीटी कैंप का आयोजन किया गया। दोनों गांवों में आयोजित कैंप में स्वास्थ टीम के द्वारा गांव के सभी बुखार पीड़ित रोगियों का मलेरिया जाँच किया गया। जांच अभियान में ग्रामीणों को मलेरिया जाँच के साथ-साथ सभी तरह के स्वास्थ्य सुविधा प्रदान किया गया। साथ ही उपस्थित ग्रामीणों को मलेरिया फैलने के कारण, लक्षण, उपचार एवं बचाव आदि के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दिया गया और लोगों को अपने घर के आस-पास साफ-सफाई रखने, प्रत्येक दिन मच्छरदानी लगा कर सोने, ताजा व गर्म खाना खाने, पानी को उबाल कर ठंडा कर पीने, किसी को भी बुखार होने पर तुरंत अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर खून की जाँच करवाने, किसी झोलाछाप डॉक्टर या झाड़-फूंक ओझा-गुनी, जड़ी-बूटी के चक्कर में ना पड़ने आदि की सलाह दिया गया। जिसमें एमपीडब्ल्यू मुरारीलाल गोंड, बिमल ओझा, विनोद कुमार सिंह, बेंजामीन मुर्मू, संजय हरिजन, अजित कुमार, अनिल कुमार, पवन कुमार, सहित सहिया बहनें आदि स्वास्थ्य कर्मी मौजूद थी।

प्रदीप बेसरा के नेतृत्व में सैकड़ों बाइक चंपाई सोरेन के स्वागत में टाटा रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : भाजपा नेता कोल्हान टाइगर चंपाई सोरेन के घाटशिला दौरा के दौरान भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह पार्षद प्रदीप बेसरा के नेतृत्व में सैकड़ो बाइक सवार रैली के सकल में पटमदा से डिमना पहुंचकर पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन का जोरदार स्वागत किया।इसके बाद पुर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने तिलका मांझी के मूर्ति में माल्यार्पण कर गुड़मा हाट मैदान में सभा को संबोधित करते हुए घाटशिला के लिए रवाना हुए। इस दौरान रैली में जिला उपाध्यक्ष प्रदीप बेसरा,मंडल अध्यक्ष बासुदेव मंडल, बिमल मंडल, निरंजन रजक, मलिंद्र मिश्रा सहित काफी संख्या में भाजपाई शामिल हुए।वही दूसरी ओर भाजपा एससी मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष बिमल बैठा के नेतृत्व में भी डिमना में पुर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन का गाजा बाजा के साथ गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

उप विकास आयुक्त ने पोषण रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : पोषण माह 2024 के अंतर्गत पोषण रथ उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, जिला योजना पदाधिकारी अनूप कुमार, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी चित्रा यादव के द्वारा संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर समाहरणालय से रवाना किया गया। पोषण रथ के द्वारा बच्चों के पोषण एवं कुपोषण से बचाव, अनीमिया से बचाव एवं कुपोषण मुक्त झारखंड के तहत झारखंड सरकार की अति महत्वाकांक्षी समर कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। उप विकास आयुक्त ने सभी हितधारकों से इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि पोषण हमारे बच्चों और महिलाओं के समग्र स्वास्थ्य और विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। उन्होंने बच्चों और महिलाओं के अच्छे पोषण को सुनिश्चित करने के लिए सभी को मिलकर काम करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि महिलाओं और बच्चों के लिए पोषण बहुत महत्वपूर्ण है। गर्भावस्था के दौरान और बच्चे के जन्म के बाद पोषण बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही समरहणालय स्थित सभागार में उप विकास आयुक्त के समक्ष पोषण माह हेतु शपथ भी दिलाई गई। मौके पर जिला समाज कल्याण पदाधिकारी चित्रा यादव, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पूनम टोप्पो, क्षेत्रीय प्रबंधक कमल किशोर, सहायिका, सेविका एवं अन्य उपस्थित थे।

मंत्री श्रवण कुमार बोले- कुछ लोग सिर्फ राजनीति करना चाहते हैं

नालंदा । बिहार के राजनीतिक माहौल में एक बार फिर गरमाहट देखने को मिली है। राज्य के मंत्री श्रवण कुमार ने गुरुवार को नालंदा में विपक्षी दलों पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने जन स्वराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर के शराबबंदी कानून को खत्म करने के बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। मंत्री कुमार ने कहा, कुछ लोग सिर्फ राजनीति करना चाहते हैं। लेकिन समाज राजनीति से नहीं, बल्कि समाज की बुराइयों को दूर करने से चलता है। उन्होंने महात्मा गांधी का उदाहरण देते हुए कहा, गांधीजी ने कहा था कि अगर उन्हें एक क्षण के लिए भी तानाशाह बनना पड़े तो वे सबसे पहले शराब जैसी बुराइयों को खत्म कर देंगे।

मंत्री कुमार ने आगे कहा, देश की आधी आबादी चाहती है कि शराबबंदी हो और समाज नशामुक्त हो। जो लोग राष्ट्रपिता के सपनों को चकनाचूर करने की

कोशिश कर रहे हैं, उन्हें कौन समझाए? इसी बीच, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव द्वारा लगाए गए आरोपों पर भी मंत्री ने प्रतिक्रिया दी। यादव ने दावा किया था कि उनके पास मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का एक वीडियो है, जिसमें वे सरकार बनाने के लिए गिड़गिड़ा रहे थे। इस पर मंत्री कुमार ने कहा, नीतीश कुमार जी ने आज तक किसी के सामने गिड़गिड़ाया नहीं है। उनका सपना बिहार की तरक्की, शांति और अमन का है।

लॉ एंड ऑर्डर के मुद्दे पर बोलते हुए मंत्री ने स्वीकार किया कि राज्य में अपराध की घटनाएं हो रही हैं, लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि अपराधियों को किसी भी हालत में नहीं बख्शा जाता। बिहार में कानून व्यवस्था की यही खासियत है। मंत्री श्रवण कुमार ये बयान नालंदा स्थित महाबोधि एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर संस्थान में दे रहे थे, जहां वे इ.एं के नए शैक्षणिक सत्र के उद्घाटन समारोह में शामिल हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने परिसर में पौधारोपण भी किया और जल-जीवन-हरियाली का संदेश दिया।

शराबबंदी की नीति पर राजद का हमला, सरकार की विफलता पर उठाए सवाल राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने बिहार सरकार की शराबबंदी नीति पर तीखा प्रहार किया। गुरुवार को जिला कार्यालय में आयोजित एक प्रेस वार्ता में राजद के जिला प्रवक्ता धनंजय कुमार और दीपक कुमार सिंह ने वर्तमान सरकार की नीतियों की कड़ी आलोचना की। प्रवक्ताओं ने 2015 के महागठबंधन सरकार का स्मरण कराते हुए कहा, तब हमने कहा था मदिरालय नहीं, विद्यालय चाहिए। शराब नहीं, किताब चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान में शराबबंदी कानून पूरी तरह से विफल हो चुका है।

दीपक कुमार ने कहा, शराबबंदी के नाम पर गरीबों और दलितों को जेल भेजा जा रहा है। जबकि वास्तविक अपराधी खुले आम घूम रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि हाल ही में सरकार के एक मंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री ने भी इस नीति पर सवाल उठाए हैं। राजद नेताओं ने नालंदा जिले का उदाहरण देते हुए कहा कि यहां जदयू के एक प्रखंड अध्यक्ष को शराब के साथ गिरफ्तार किया गया है। यह कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी एक पूर्व प्रखंड अध्यक्ष इसी आरोप में गिरफ्तार हुए थे।

शराबियों ने खेत में आने से मना किया था, घायल का सदर अस्पताल में चल रहा इलाज

भोजपुर । जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के जमीरा गांव स्थित चलिसवा पुल के समीप बुधवार की देर शाम हथियारबंद बदमाशों ने खेत में बोरिंग चलाने गए युवक को पीटकर घायल कर दिया। धारदार हथियार से भी हमला किया। जख्मी युवक ने गोली मारने का आरोप लगाया है। जख्मी के बाएं हाथ की हड्डी पूरी तरह टूट गई है।

स्थानीय लोगों ने सूचना परिजनों को दी। परिजन आरा सदर अस्पताल लेकर पहुंचे। जख्मी युवक मुफस्सिल थाना क्षेत्र के जमीरा गांव वार्ड- 4 निवासी हरी दयाल राय का 31 वर्षीय बेटा अमरजीत कुमार है। जो पेशे से किसान है। खेत में गए थे जख्मी

मुफस्सिल थानाध्यक्ष राजीव रंजन सिन्हा पुलिस बल के साथ आरा सदर अस्पताल पहुंचे।

जख्मी युवक से घटना की जानकारी ली। अमरजीत कुमार ने बताया कि बुधवार शाम जमीरा गांव स्थित खेत पटाने जा रहा था। जैसे ही अपने खेत में पहुंचा तो देखा कि खेत में कुछ बदमाश बैठकर शराब पी रहे हैं। नशेड़ियों ने खेत में आने से मना किया।

जब मैंने कहा कि ये मेरा खेत है, मैं आऊंगा।

इसी बात पर उन लोगों ने पहले धारदार हथियार से मारा। फिर गोली चला दी। परिजनों ने मुझे अस्पताल पहुंचाया। बदमाशों ने हमला क्यू किया कारण अभी स्पष्ट नहीं हो सका है।

एसपी प्रमोद कुमार ने बताया कि किसी व्यक्ति को शायद गोली लगी है, लेकिन सूचना झूठी है। मारपीट की धारा में कांड दर्ज करते हुए आगे की कार्रवाई की जा रही है।

52 साल पुरानी पार्टी मासस का भाकपा माले में विलय

पटना । 52 साल पुरानी पार्टी मार्क्सवादी समन्वय समिति (मासस) का विलय भाकपा माले में हो गया। इसके लिए झारखंड के धनबाद में 9 सितंबर को बड़ी रैली आयोजित की गई थी। झारखंड में विधानसभा का चुनाव इसी साल होना है, जबकि बिहार में 2025 में है।

मासस के विलय के बाद माना जा रहा है कि बिहार-झारखंड में होने वाले विधानसभा चुनाव पर इसका असर पड़ेगा। खासकर, झारखंड के धनबाद, बोकारो, हजारीबाग, गिरिडीह, रामगढ़ जिले में इसका बड़ा असर देखने को मिल सकता हैं। फिलहाल बगोदर से माले के विनोद सिंह विधायक हैं। वहीं, बिहार में माले के 12 विधायक हैं।

बिहार माले के वरिष्ठ नेता केडी यादव से भास्कर ने बात की। उन्होंने बताया कि 'इस विलय का असर झारखंड की राजनीति पर तो पड़ेगा। इसके साथ ही बिहार के नवादा, नालंदा, गया में भी प्रभाव देखने को मिलेगा।'

माले के सीनियर नेता केडी यादव ने कहा- वामपंथ की एकता बढ़ेगी भास्कर से बातचीत में माले के सीनियर नेता केडी यादव ने कहा कि इस ऐतिहासिक घटना का बड़ा असर होगा और वामपंथ की एकता बढ़ेगी। पुराने दिनों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि काफी विरोधाभास के बाद 52 साल पहले मासस बना था।

एके राय ट्रेड यूनियन के बड़े नेता थे। 29 अप्रैल 1972 में जब उन्होंने मार्क्सवादी कॉर्डिनेशन कमेटी बनाई थी, तब कहा था कि इसे पार्टी के रूप में नहीं रखना है। हालांकि, राजनीतिक पार्टी के तौर पर मासस काम करने लगी थी। तीन बार सांसद रहे मासस के फाउंडर एके राय मासस से एके राय तीन बार लोकसभा का चुनाव जीतकर सांसद बनें। नक्सलबाड़ी आंदोलन के बाद चारु मजूमदार के नेतृत्व में भाकपा माले तेजी से आगे बढ़ रही थी। दूसरी तरफ एके राय के नेतृत्व में कोयला मजदूर आंदोलन कर रहे थे। इन आंदोलनों में ही गुरुदास चटर्जी और महेंद्र सिंह जैसे कई नेता शहीद हुए थे।

एके राय ने धनबाद के इलाकों में 70 के दशक में आदिवासियों, मजदूरों के सवाल पर कई आंदोलन किए। हालांकि, बाद के दिनों में मार्क्सवादी समन्वय समिति और माले के नेता कई मुद्दों पर एक साथ काम किया। लेकिन, अधिकृत रूप से माले में मासस का विलय अब हुआ है। एके राय का निधन पांच वर्ष पहले हो चुका है। विलय के समय अरुप चटर्जी मासस के कार्यकारी अध्यक्ष थे।

धनबाद में बढ़ रही माले की ताकत केडी यादव कहते हैं कि एक समय था, जब धनबाद में मासस की तूती बोलती थी। निरसा विधानसभा सीट से मासस के अरूप चटर्जी कई बार विधायक रह चुके हैं। अभी यहां बीजेपी की अपर्णा सेन गुप्ता विधायक हैं। पिछले चुनाव में जेएमएम ने भी यहां से प्रत्याशी दिया था।

सीएम नीतीश कुमार ने पार्टी में किया बदलाव

पटना। जनता दल यूनाइटेड ने विभिन्न प्रकोष्ठों में नए अध्यक्ष और प्रभारियों की नियुक्ति की है। इस बात की जानकारी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने पत्र जारी कर दी है। इस क्रम में भारती मेहता को महिला मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मंत्री डॉ. रंजू गीता को प्रभारी बनाया गया है।

पूर्व सांसद चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी को अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। मनीष कुमार युवा प्रकोष्ठ का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। वशिष्ठ सिंह प्रभारी बने हैं। राधेश्याम को छात्र जदयू के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है, जबकि विधान पार्षद वीरेंद्र नारायण यादव छात्र प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रभारी बनाये गये हैं। अशरफ अंसारी को अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है, वहीं मेजर इकबाल हैदर प्रभारी होंगें।

यह भी हैं सूची में राजेश त्यागी को अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है, जबकि पूर्व विधायक अरुण मांझी इसके प्रभारी बनाये गये हैं। सुरेंद्र उरांव को अनुसूचित

जनजाति का प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है। मनोज कुमार किसान प्रकोष्ठ के अध्यक्ष बनाये गये हैं, जबकि डॉक्टर एन ल बी सिंह को चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है।

धनजी प्रसाद व्यवसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष बनाये गये हैं, जबकि विधान पार्षद ललन सर्राफ को प्रभारी का दायित्व दिया गया है।

राम चरित्र प्रसाद को तकनीकी प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली है। सुनील कुमार को शिक्षा प्रकोष्ठ का प्रदेश अध्यक्ष और नीतीश पटेल को मीडिया प्रकोष्ठ का प्रभारी बनाया गया है।

धार्मिक झंडा लगाने को लेकर दो समुदाय के बीच झड़प

किशनगंज । ठाकुरगंज बाजार में बुधवार को धार्मिक झंडा लगाने को लेकर दो समुदाय के बीच झड़प हो गई। घटना की सूचना मिलते ही ठाकुरगंज थानाध्यक्ष और एसडीपीओ मंगलेश कुमार मौके पर पहुंचे और मामले को शांत कराया। बताया जाता है कि ठाकुरगंज बाजार स्थित एक दवाई दुकान के सामने सड़क किनारे लगे एक विशेष समुदाय के झंडे को असामाजिक तत्व के द्वारा वहां से हटा दिया गया था।

इसके विरोध में उक्त समुदाय के लोगों ने असामाजिक तत्व की गिरफ्तारी की मांग करने लगे। स्थानीय लोगों के बयान और निशानदेही पर पुलिस ने एक अभियुक्त विशाल उर्फ पप्पू को गिरफ्तार किया है। फिलहाल उससे पूछताछ की जा रही है।

आरोपी की गिरफ्तारी के बाद पुलिस आक्रोशित लोगों को समझा बुझाकर घटना स्थल से हटा दिया और उक्त स्थल पर पुलिस बल की तैनाती कर दी गई। वहीं विभिन्न चौक चौराहों पर पुलिस बल को प्रतिनियुक्त करते हुए सघन रात्रि गश्ती का निर्देश दिया गया हैं। हालांकि ठाकुरगंज पुलिस दावा कर रही है कि फिलहाल अभी विधि-व्यवस्था सामान्य है। लोगों से अपील कर कहा की कृपया अफवाहों पर ध्यान न दें। अफवाह फैलाने वालों पर होगी कार्रवाई मामले में एसडीपीओ 2,मंगलेश कुमार ने वीडियो जारी करते हुए कहा कि एक समुदाय के लोगों के द्वारा दूसरे समुदाय के धार्मिक झंडा को हटा दिया गया। ठाकुरगंज पुलिस मौके पर पहुंचकर झंडे को वापस उसी स्थान पर लगा दिया है, फिलहाल दोनों समुदाय के लोगों के साथ बैठक की गई है। एक व्यक्ति की गिरफ्तारी हुई है। वही इस मामले को लेकर सोशल मीडिया में काफी अफवाह उड़ाई जा रही थी।

बिहार में फिर पुलिस पर जानलेवा हमला, थानाध्यक्ष समेत तीन पुलिसकर्मी घायल

जमुई। जमुई में बालू के अवैध कारोबार को रोकने गए पुलिसकर्मियों पर बालू माफियाओं ने हमला कर दिया है, जिसमें थानाध्यक्ष समेत दो पुलिसकर्मी गंभीर रूप से घायल हो गये। आननफानन में उन्हें इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया, जहां सभी का इलाज किया जा रहा है। घटना गिद्धौर बरहट थाना के सीमावर्ती क्षेत्र गुगुलडीह इलाके की है। थानाध्यक्ष समेत वकई पुलिसकर्मी घायल

घटना के संबंध में पुलिसकर्मियों का कहना है कि गुरुवार को गिद्धौर थाना को सूचना मिली कि गिद्धौर के सीमावर्ती क्षेत्र गुगुलडीह इलाके में बालू का अवैध खनन धड़ल्ले से किया जा रहा है। सूचना मिलते ही पुलिस

हरकत में आई और अवर निरीक्षक पंकज कुमार दलबल के साथ वहां पहुंच गये। पुलिस को देखते ही वहां लोग इधर-उधर भागने लगे। पुलिस बालू लोड ट्रैक्टर का पीछा करने लगी, तभी बालू माफियाओं ने पुलिस पर हमला कर दिया। इस घटना में एसआई पंकज कुमार को नाक पर चोट लग गई। साथ ही दो अन्य सिपाही भी चोटिल हो गये।

इस घटना के बाद घटनास्थल पर पुलिस ने अतिरिक्त बल के साथ मिलकर छापामारी की, जिसमें पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस फिलहाल उनसे पूछताछ कर रही है। घटनास्थल से एक ट्रैक्टर एवं एक बाइक भी जब्त किया गया है। गौरतलब है कि जमुई जिले में ऐसी कई घटनाएँ पहले भी हो चुकी हैं।

पटना के गांधी मैदान थाने में ही चली गोली

पटना। पटना के गांधी मैदान थाने में बुधवार की देर रात फायरिंग हुई। फायरिंग के समय पिस्टल का बैरल नीचे था, जिसके चलते एक बड़ा हादसा टल गया। इसमें कोई घायल नहीं हुआ। दरअसल पटना के गांधी मैदान थाना परिसर में दारोगा ने अपने सर्विस रिवॉल्वर को सही तरीके से कॉक नहीं किया। इसके चलते पिस्टल के बैरल से कारतूस अटक गई। दारोगा ने फिर से पिस्टल को कॉक कर गोली निकालना चाहा, इसी दौरान गोली चल गई। गांधी मैदान थाना थानाध्यक्ष सीताराम प्रसाद ने बताया कि इसी थाने में पदस्थापित दारोगा को सूचना मिली थी कि गांधी मैदान में कोई संदिग्ध देखा गया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए दारोगा अपने पिस्टल को साथ लेकर निकलने ही वाला था की पिस्टल गलती से कॉक हो गया। इसके चलते गोली फंस गई और बाद में गोली चल गई।

बेतिया में जादू-टोना के आरोप में महिला की गोली मारकर हत्या, जांच में जुटी पुलिस

बेतिया। बेतिया में एक युवक ने जादू टोना करने का आरोप लगाकर एक महिला को गोली मार कर हत्या कर दी है। घटना के बाद इलाके में सनसनी की फैली हुई है। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं, जितनी मुंह उतनी बातें सुनने को मिल रही हैं।

बता दें कि मामला बगहा पुलिस जिले की बगहा के रामनगर थाना क्षेत्र के सपही पंचायत के चूड़ीहरवा गांव की है। मृतका की पहचान सरयू राय की पत्नी सुनरपति देवी के रूप में हुई है। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए बगहा भेज दिया है। इधर, मृतका के पति सरयूराय ने बताया कि चार साल पहले उनके भाई के साथ रास्ते को लेकर विवाद शुरू हुआ था, जिसे स्थानीय लोगों के हस्तक्षेप से सुलझा लिया गया था। एक साल पहले उनके भाई और उसकी पत्नी की बीमारी के कारण मौत हो गई। इसके बाद से सरयूराय के भतीजे और उसके परिजन आरोप लगाने लगे कि सुनरपति देवी ने टोना-टोटका कराकर उनके मां और पिता की मौत करवाई थी।

इसी रंजिश में उनकी पत्नी की हत्या कर दी गई। हत्या की इस घटना से चूड़ीहरवा गांव में तनाव का माहौल है। लोग डरे-सहमे अपने घरों में हैं। पुलिस का कहना है कि सरयूराय के बयान के आधार पर कुछ संदिग्धों की तलाश की जा रही है और जल्द ही दोषियों को गिरफ्तार कर सख्त कार्रवाई की जाएगी। मामले की गहनता से जांच की जा रही है और हर पहलू को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई की जा रही है। वहीं, एफएसएल टीम भी घटना स्थल पर पहुंचकर जांच कर रही है। घटना के बाद पहुंचे एसडीपीओ नंद जी प्रसाद ने बताया कि पूर्व में हुए जमीन विवाद के चलते इस हत्या को अंजाम दिया गया है। पुलिस ने बताया कि मृतका के पति सरयूराय के बयान पर कुछ लोगों के नाम सामने आए हैं, जिनमें पट्टीदारों की संलिप्तता भी हो सकती है। सरयूराय ने बताया कि उसकी पत्नी के पास उनकी बेटी रेशमा 13 वर्षीय बैठी थी। तभी बदमाश आए और उसे गोलीमार पर चले गए। दोनों का नाम भी सरयूराय ने पुलिस को बताया है। दोनों सरयूराय के अपने भतीजे होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

25 नदियों के बीच बसे गांव में पढ़ाती महिला सिपाही

बगहा। 45 किलोमीटर दूर, जंगलों के बीच बसा गोबरहिया थाना क्षेत्र जहां पहुंचना आसान नहीं है। यहां करीब 25 नदियों को पार कर आना पड़ता है। दो पंचायतों के 26 गांवों में मुख्य रूप से थारू और उरांव जनजाति के आदिवासी लोग रहते हैं। यह जगह कभी नक्सलियों के लिए कुख्यात इस क्षेत्र था। जहां बिहार पुलिस की महिला सिपाहियों की अनूठी पहल से अब शिक्षा और आत्मरक्षा की नई अलख जग रही है।

महिला सिपाहियों की अनूठी पहल से नक्सल प्रभावित इस इलाके में सुरक्षा के साथ-साथ शिक्षा का संदेश फैलाने की ठानी है। पुलिस मुख्यालय से दूर और अपराधिक दृष्टिकोण से संवेदनशील माने जाने वाले गोबरहिया थाना की ये महिला सिपाही अब सिर्फ थाने तक सीमित नहीं हैं। इन्होंने गांव-गांव जाकर लड़कियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने और शिक्षा के महत्व को समझाने की अनूठी पहल शुरू की है। यहां हुआ था नरकटिया दोन नरसंहार यह वही क्षेत्र है जहां कभी नरकटिया दोन नरसंहार जैसी घटनाएं हो चुकी हैं। नक्सल प्रभावित इस इलाके में पुलिस मुख्यालय से दूर स्थित गोबरहिया थाना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहां की महिला सिपाही अब थाने की चारदीवारी से बाहर निकलकर गांवों में किशोरियों को आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ आत्मरक्षा के गुर सिखा रही हैं। यह पहल लड़कियों के आत्मविश्वास को बढ़ा रही है और उन्हें किसी भी संकट से निपटने के लिए तैयार कर रही है।

किशोरिया ले रही है बढ़ चढ़कर हिस्सा इस पहल को स्थानीय लोगों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। गांव की किशोरिया बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। बगहा के जंगलों और नदियों के बीच बसे इन दूरस्थ गांवों में शिक्षा और आत्मरक्षा का यह संदेश एक नई उम्मीद की किरण लेकर आया है।

बिहार पुलिस की इन महिला सिपाहियों के प्रयास से अब यहां की बेटियां निडर होकर आगे बढ़ने का सपना देख रही हैं। गोबरहिया थाना की महिला सिपाही, जो कभी महिला हेल्पलाइन के तौर पर काम करती थीं, अब बेटियों को सशक्त बनाने के मिशन पर हैं।

उत्तम औषधि है काजू

मेवे का प्रयोग उतम औषधि के रूप में किया जाता है। क्योंकि मेवा स्वाद की नहीं बल्कि सेहत की दृष्टि से भी उतनी ही फायदेमंद हैं। काजू में मैग्नीशियम पाया जाता हैं जो उच्च रक्तचाप को कम करने में और दिल के दौरे को रोकने में मदद करता है। काजू कोलेस्ट्रॉल के स्तर को भी संतुलित रखता है। काजू में प्रोटीन की मात्रा काफी होती है जो बॉडी व हड्डियों को मजबूत बनाती है। चाहे मिठाई में काजू कतली हो या फिर दूसरे पकवानों में काजू का इस्तेमाल। काजू किसी भी आम डिश को शाही बना सकता है। अब जब काजू हमें इतना पसंद ही है तो इससे होने वाले लाभ के बारे में भी जान लेना चाहिए। काजू में प्रोटीन, खनिज लवण, लौह, फाइबर, फोलेट, मेग्नीशियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, और तांबा का अच्छा स्त्रोत है। काजू का तेल, स्कर्वी मस्सा और रिंगवर्म के उपचार के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आप प्रतिदिन 7-10 काजू का सेवन कर सकते हैं। काजू खाने से मसूडों और दांतों को स्वस्थ रखता है। काजू में मोनो सैचुरेटड फैट होता है जो की दिल को स्वस्थ रखता है ओर दिल की बीमारियों के खतरे को कम करते में मदद करता है। काजू में एंटी ओक्सिडेंट भी होते हैं जो कैंसर से बचाव करता है। काजू पाचन शाक्ति को बढाता है। इससे भूख भी कहीं अधिक लगती है। आंतों में भरी गैस कम किया जा सकता है। काजू में पाए जानवाले फाइटो-केमिक्लस कैंसर और दूसरे बीमारियों से सुरक्षा करते हैं। जिन महिलाओं को मेनोपॉज है उन्हें तनाव, स्ट्रेस होनो एक आम सा समस्या है। उन महिलाओं को रोजाना एक काजू खाना चाहिए। काजू में पर्याप्त मात्रा में मैग्नीशियम पाया जाता है। काजू में अधिक एनर्जी होती है और इसमें अधिक मात्रा में फाइबर होता है। इसलिए इसको खाने से शरीर का वजन संतुलित रहता है।

खीरे में हैं सेहत व सौंन्दर्य के अनगिनत गुण

खीरा सेहत के लिए काफी लाभकारी माना जाता है। ये सेहत के साथ-साथ सौंदर्य में बहुत फायदेमंद होता है। कम फेट व कैलोरी से भरपूर खीरे का सेवन आपको कई रोगो से बचाने में सहायता करता है। खीरे को आप कई तरह से खा सकते हैं, जैसे सलाद, जूस, सैंडवीच, या यूं ही नमक छिडक कर भी खा सकते हैं। खीरे के स्वास्थ्यवद्रधक और सौन्दर्यवद्रधक गुण दोनों अनगिनत होते हैं जैसे आयुर्वेद के अनुसार खीरा, पित्त, रक्त पित्त दूर करने वाला तथा रक्तविकार और मूत्र कच्छ नाशक रूचिकर फल है। खीरे के प्रयोग से पेट तथा जिगर की जलन शांत होती है। खीरे का नियमित सेवन से मासिक धर्म में होने वाली समस्याओं से भी छुटकारा मिलता है। खीरा एक ऐसी सब्जी है जिसमें कोलेस्ट्रोल बिल्कुल नहीं होता। यह हृदय रोगी के लिए बहुत लाभकारी माना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार खीरा में जो स्टेरराल नाम का योगिक होता है वह कोलेस्ट्रोल को कम करने में मदद करता है। खीरे में कैलोरी कम और फाइबर उच्च मात्रा में होता है। इसलिए मीडे डे में भूख लगने पर खीरा खाने से पेट देर तक भरा हुआ रहता है। आयुर्वेद के मुताबिक पेट में गर्मी होने के वजह से मुंह से बदबू निकलता है, खीरा पेट को शीतलता प्रदान करने में मदद करता है।

गर्भाशय में रसौली के लक्षण जान इस तरह करें घरेलू उपचार

बिगड़ते लाइफस्टाइल में महिलाओं में कई समस्याएं देखने को मिलती है, इन्हीं में से एक फाइब्रॉइड यानी रसौली। फाइब्रॉइड या रसौली की गांठें महिलाओं के गर्भाशय में या उसके आसपास बनती है। इस बीमारी के ज्यादातर लक्षण न होने के कारण महिलाओं को इसका पता नहीं चल पाता। एक शोध के अनुसार लगभग 40 प्रतिशत महिलाएं रसौली का शिकार होती है। वैसे तो अक्सर यह समस्या 30 से 50 की उम्र में देखने को मिलती है लेकिन गलत खान-पान के कारण यह समस्या इससे कम उम्र में हो जाती है। मोटापे से ग्रस्त महिलाओं का एस्ट्रोजन हार्मोन स्तर ज्यादा होने के कारण उन्हें इसका खतरा सबसे अधिक होता है। इस बीमारी के कुछ सामान्य लक्षणों से इसकी पहचान करके आप इससे बच सकते है। तो आइए जानते है फाइब्रॉइड के लक्षण और इसे दूर करने के कुछ घरेलू उपाय।

फाइब्रॉइड या रसौली के लक्षण

पीरियड्स के दौरान भारी ब्लीडिंग
अनियमित पीरियड्स
पेट के नीचे के हिस्से में दर्द
प्राइवेट पार्ट से खून आना
कमजोरी महसूस होना
प्राइवेट पार्ट से बदबूदार डिस्चार्ज
पेट में अचानक दर्द कब्ज
पेशाब रुक-रुककर आना

फाइब्रॉइड या रसौली के घरेलू उपाय

केस्टर ऑयल

दिन में 2 बार केस्टर ऑयल और अदरक के रस को मिला कर लें। सुबह और रात में सोने से पहले इसका सेवन इस बीमारी को दूर करता है।

लहसुन

रसौली की समस्या होने पर खाली पेट रोज 1 लहसुन का सेवन करें। लगातार 2 महीने तक इसका सेवन इस समस्या को जड़ से खत्म कर देता है।

बरडॉक रूट

यह जड़ी-बूटी एस्ट्रोजन को डिटॉक्स कर गर्भाशय फाइब्रॉइड को कम करने में मदद करती है। एंटी-इंफ्लेमेंटरी गुण से भरपूर इस जड़ी-बूटी का सेवन इस समस्या और कैंसर के खतरे को कम करता है।

सेब का सिरका

गर्म पानी के साथ सुबह शाम सेब का सिरका पीने से फाइब्रॉइड की समस्या दूर होती है। इसके अलावा इसका सेवन फाइब्रॉइड से होने वाले पेट दर्द को भी दूर करता है।

चेस्टबेरी

यह हर्ब हार्मोन संतुलन करके एस्ट्रोजन के कम स्तर को बनाए रखने और सूजन को कम करने में मदद करता है। चेस्टबेरी हर्ब से बने मिश्रण की 25-30 बूंदों को दिन में दो से चार बार लेने से आपकी यह समस्या दूर हो जाएगी।

हल्दी

एंटीबॉयोटिक गुणों से भरपूर हल्दी का सेवन शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकाल देता है। यह फायब्रॉइड की ग्रोथ को रोक कर कैंसर का खतरा कम करता है।

दांतों में कैविटी की समस्या को इन तरीकों से करें दूर

सफेद और सुंदर दांत व्यक्ति की खूबसूरती को और बढ़ादेते हैं। इनके बिना खाना खाने का कोई मजा नहीं आता। ऐसे में दांतों की सही देखभाल करना बहुत ही जरूरी होता है। कुछ लोग के गलत खान-पान या सही तरीके से दांतों की देखभाल न करने पर इनमें कैविटी यानी कीड़ा लग जाता है। यह किसी भी उम्र के लोगों को हो सकता है। कई बार कीड़ा लगने से इतना दर्द होता है कि उसको सहन करना बहुत मुश्किल हो जता है। इस दर्द से छुटकारा पाने के लिए कई लोग दवाइयां और ट्रीटमेंट का सहारा भी लेते है। जो की बहुत मंहगा है। ऐसे में आप नैचुरल तरीके से भी दांतों में लगे कैविटी को आसानी से हटा सकते हैं। तो आइए जानते हैं उन तरीकों के बारे में।

क्या है कैविटी

शक्करयुक्त खाद्य पदार्थो यानि बिस्किट्स, चॉकलेट्स, आलू, केला को खाने से मुंह में अमल बनने लगते हैं। इससे दांतों में धीर-धीरे छोटे-छोटे से छिद्र बन जाते हैं। बाद में इन्हीं छिद्रों में कैविटी या कीड़ा लगत जाता है। इसके अलावा दांतों में संक्रमण होने पर भी कैविटी बन सकती है। इसका इलाज न करावाने पर दांतों के खराब होने का खतरा बढ़ जाता है। पीड़ित व्यक्ति को दांत खोने पड़ सकते हैं।

ऐसे करे कैविटी से बचाव

मिठाई, कैंडी और चॉकलेट खाना कम करें।
शक्करायुक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करने से बचें।
ज्यादा मिठ्ठा फल न खाएं।
सोड़ा न पीऐं। इसमें 12 से 40 ग्राम चीनी की मात्रा होती है जो कि दांतों के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं होती ।खाने के बाद कुल्ला करें।
तेल और मसालेदार भोजन न खाएं।
ज्यादा गर्म या ठंडा खाना खाने से बचें।

कैविटी लगे दातों का घरेलू इलाज

नारियल या सूरजमुखी का तेल

कीड़ा लगे दांतों में तेल भरना सबसे बेस्ट घरेलू तकनीक है। इसके लिए आप नारियल तेल या सूरजमुखी का तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं। 1 चम्मच तेल को अपने मुंह में कम से कम 20 मिनट तक रखें। इसके बाद कुल्ला करें और ब्रश कर लें। कुछ दिनों तक ऐसा करने से आपको खुद ही फर्क दिखाई देने लगेगा।

फ्लोराइड

यह एक तरह का प्राकृतिक खनिज पदार्थ है। यह दांतों में किसी भी प्रकार का रोग नहीं होने देता है। दातों को सुरक्षित रखने के लिए उस पानी का इस्तेमाल करें जिस में फ्लोराइड की मात्रा ज्यादा हो। इसके साथ ही टूथ पेस्ट से रोजाना दो बार ब्रश करें।

हींग

हींग का इस्तेमाल करने से भी दांतों के कीड़े खत्म हो जाते हैं। हींग के पाउडर को पानी में डालकर उबा लें। इसके ठंड़ा होने पर इस पानी से कुल्ला करें। रोजाना ऐसा करने से दांत के कीड़े खत्म हो जाएंगे। इसके साथ ही दांतों में होने वाले दर्द से भी छुटकारा मिलेगा।

प्याज के बीज

दांतों के कीड़े को नष्ट करने के लिए प्याज के बीजों का इस्तेमाल करें। इसके बीजों को चबाने से कीड़े जल्द ही खत्म हो जाते हैं। आप चाहें तो प्याज को बारिक काट कर भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। एक कटोरे बारिक कटा प्याज डालकर उसमे इसमें थोड़ा-सा तेल डालकर कम आंच पर गर्म करें। इससे निकलने वाले धुएं को मुंह में लेने से भी कीड़े मर जाते हैं।

खट्टे-मीठे बेर में समाएं कई गुण

आयुर्वेद के अनुसार बेर दिल की सेहत के लिए बहुत ही लाभकारी है। बेर खाने से कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल रहता है, जिससे दिल से जुड़ी बीमारियां होने की आशंका कम हो जाती है। बरे खाने से बार-बार प्यार लगने की शिकायत भी दूर होती है। खट्टे-मीठे बेर में पोटैशियम, कॉपर, आयरन, फॉस्फोरस और खनिज पदार्थ आदि भी होते हैं। इन सभी तत्वों से इम्यून सिस्टम मजबूत बनता है और शरीर में रोगों से लडने की क्षमता बढती है। गर्मियों में पौधे सुषुप्तावस्था में प्रवेश कर जाते हैं व उस समय पत्तियां अपने आप ही झड जाती हैं तब पानी की आवश्यकता नहीं के बारबर होती है। इस तरह बेर अधिक तापमान तो सहन कर लेता है लेकिन शीत ऋतु में पडने वाले पाले के प्रति अतित संवेदनशील होता है। क्योंकि इसमें कम पानी व सूखे से लडने की विशेष क्षमता होती है। जिस तरह नींबू और संतरे में विटामिन सी प्रचुर मात्रा पाई जाती हैं उसी तरह बेर में भी। बेर में अन्य फलों के मुकाबले विटामिन-सी और एंटीऑक्सीडेंट ज्यादा मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से त्वचा बढती उम्र तक जवां बनी रहती हैं। इसमें विटामिन सी की मात्रा खट्टे फलों से 20 गुना तक अधिक होती है। बेर की गुठली को घिसकर आंखों में काजल की तरह लगाने से कनीनिका प्रदाह ठीक हो जाता है। आंखों से बहने वाला पानी भी बंद हो जाता है। बेर के पत्तों को पानी में काफी समय तक उबालकर काढा बनाकर छानकर पीने से शरीर की बढती चर्बी कंट्रोल हो जाती है। चेचक में बेर के पत्तों का रस भैंस के दूध के साथ रोगी को देने से रोग का वेग कम होता है। बेर में 6 ग्राम पत्तों के चूर्ण को 2ग्राम गुड के साथ मिलाकर रोगी को खिलाने से भी 2-3 दिन में चेचक खत्म होने लगता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने पैरालंपिक पदक विजेताओं से की मुलाकात, परमार ने लिया पीएम का आटोग्राफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को यहां अपने आवास पर भारत के पैरालंपियन खिलाड़ियों से मुलाकात की और उन्हें हाल ही में संपन्न पेरिस खेलों में रिकॉर्ड 29 पदक जीतने के लिए बधाई दी। खेल मंत्रालय द्वारा साझा किए गए 43 सेकेंड के वीडियो में प्रधानमंत्री को पैरालंपियन पदक विजेताओं को बधाई देते और उनसे बात करते हुए देखा जा सकता है।

बातचीत के दौरान खेल मंत्री मनसुख मांडविया और भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) के प्रमुख देवेंद्र झाझडिया भी मौजूद थे। महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल (एसएच1) स्पर्धा में लगातार दूसरा पैरालंपिक स्वर्ण जीतने वाली निशानेबाज अवनि लेखरा और पैरालंपिक पदक जीते वाले भारत के पहले जूडो खिलाड़ी दृष्टिबाधित कपिल परमार उन लोगों में शामिल थे जिन्हें प्रधानमंत्री के साथ तस्वीर खिंचवाते देखा गया।

परमार को प्रधानमंत्री मोदी से अपने पदक पर हस्ताक्षर करवाते देखा गया। भारत ने पैरालंपिक खेलों में 29 पदक जीतकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जिसमें अभूतपूर्व 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य पदक शामिल हैं। पेरिस खेलों में भारत के 84 सदस्यीय दल ने हिस्सा लिया और तीन साल पहले तोक्यो खेलों में हासिल किए गए 19 पदकों के पिछले सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को पीछे छोड़ दिया।

इन खेलों के दौरान भारत ने पहली बार एथलेटिक्स की ट्रैक स्पर्धाओं में पदक जीतने के अलावा तीरंदाजी में पहली बार स्वर्ण (हरविंदर सिंह के माध्यम से) पदक जीता। स्वदेश लौटने पर पैरालंपियन खिलाड़ियों को सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है और खेल मंत्री मांडविया ने स्वर्ण पदक विजेताओं को 75 लाख रुपए, रजत पदक विजेताओं को 50 लाख रुपए और कांस्य पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को 30 लाख रुपये का पुरस्कार दिया। राकेश कुमार के साथ मिलकर कांस्य पदक जीतने वाली बिना हाथ वाली तीरंदाज शीतल देवी जैसे मिश्रित टीम स्पर्धाओं में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को 22.5 लाख रुपए की राशि मिली।

भारत ने कोरिया को हराकर एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में जीत की लय जारी रखी

हुलुनबुइर (चीन) (एजेंसी)। गत चैम्पियन भारत ने बृहस्पतिवार को यहां हीरो एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट में कोरिया को 3-1 से हराकर लगातार चौथी जीत दर्ज की। पेरिस ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता भारत ने इससे पहले चीन को 3-0 से, जापान को 5-0 और पिछले साल की उप विजेता मलेशिया को 8-1 से मात दी।

कोरिया के खिलाफ भारत के लिए अराईजीत सिंह हुंडल ने आठवें मिनट में जबकि कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने नौवें और 43वें मिनट में दो गोल दागे। कोरिया की ओर से एकमात्र गोल जिहुन यांग ने 30वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर किया। पहले ही सेमीफाइनल में स्थान सुनिश्चित कर चुकी भारतीय टीम अब शनिवार को अपने अंतिम लीग मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी।

छह टीमों के टूर्नामेंट के लीग चरण से शीर्ष चार टीमें शनिवार को होने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी जबकि फाइनल रविवार को खेला जायेगा।

विराट कोहली इतिहास रचने से मात्र 58 रन दूर, बांग्लादेश के खिलाफ बनाएंगे नया कीर्तिमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम 19 सितंबर से बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज में उतरेगी तो सभी की निगाहें विराट कोहली पर होंगी। कोहली बांग्लादेश टेस्ट सीरीज में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में विश्व रिकॉर्ड बनाने के लिए तेंदुलकर को पीछे छोड़ सकते हैं। विराट कोहली को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 27,000 रन पूरे करने के लिए 58 रनों की जरूरत है।

विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर के बीच अक्सर तुलना की जाती रही है, हालांकि सचिन हमेशा कहते रहे हैं कि बाद वाले का कोई मुकाबला नहीं है। कोहली के नाम 80 अंतरराष्ट्रीय शतक हैं और शतकों की संख्या के मामले में वह तेंदुलकर (100) के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

तेंदुलकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे तेज 27,000 रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं जिन्होंने 623 पारी (226 टेस्ट पारी, 396 वनडे पारी, 1 टी20 पारी) में ऐसा किया है। कोहली ने अब तक सभी प्रारूपों में 591 पारियां खेली हैं और 26942 रन बनाए हैं। अगर कोहली अपनी अगली आठ पारियों में 58 रन और बना लेते हैं जो कि बहुत संभव है तो वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के 147 साल के इतिहास में 600 से कम पारियों में 27,000 रन बनाने वाले पहले क्रिकेटर बन जाएंगे।

अब तक तेंदुलकर के अलावा ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग और श्रीलंका के कुमार संगकारा ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 27000 से ज्यादा रन बनाए हैं। इस बीच, संभावना है कि एफ्रो-एशिया कप को फिर से शुरू किया जा सकता है। अगर यह टूर्नामेंट वाकई शुरू होता है, तो विराट कोहली के बाबर आजम के साथ गेंदबाजी करने या शाहीन अफरीदी के जसप्रीत बुमराह के साथ मिलकर गेंदबाजी करने की संभावना खुल सकती है।

आईपीएल 2025: दिल्ली कैपिटल्स में हो सकते हैं बड़े बदलाव, ऋषभ पंत के हाथ से जाएगी कप्तानी?

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन इसी साल होना है, लेकिन उससे पहले हर फ्रेंचाइजी कितने खिलाड़ियों को रिलीज और रिटेन करेगी ये सबसे बड़ा सवाल है। वहीं दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत अभी तक कई बार दमदार प्रदर्शन कर चुके हैं। लेकिन एक्सीडेंट के कारण से वह आईपीएल 2023 में नहीं खेल पाए थे। इसके बाद जब 2024 सीजन में उन्होंने कमबैक किया तो खुद को साबित किया। लेकिन उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा। दिल्ली ने पिछले सीजन में 14 मैच खेले थे और 7 जीते थे। अब टीम बड़े बदलाव की ओर बढ़ रही है।

बता दें कि, रिपोर्ट्स की मानें तो पंत को कप्तानी से हटाया जा सकता है। लेकिन इसको लेकर किसी

भी तरह की आधिकारिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। मेगा ऑक्शन से पहले दिल्ली में सबसे बड़ा बदलाव कोचिंग स्टाफ को लेकर हुआ। रिकी पोंटिंग ने टीम का साथ छोड़ दिया है। अब खिलाड़ियों को रिलीज करने की बारी है। टीम मेगा ऑक्शन से पहले प्लेयर्स की रिलीज लिस्ट जारी करेगी। इसमें कई बड़े प्लेयर्स का नाम भी शामिल हो सकता है। टीम के पास रिटेन करने का ऑप्शन कम है। इसको लेकर अभी तक संख्या का पता नहीं चल सका है।

अगर पंत की बात करें तो उन्होंने 2016 में आईपीएल डेब्यू किया था। पंत के लिए पहला सीजन कुछ खास नहीं रहा था। लेकिन उन्होंने 2018 में कमाल का प्रदर्शन किया था। ऋषभ पंत ने 2018 के 14 मैचों में 684 रन बनाए थे। उनको टीम ने आईपीएल 2021 में कप्तान बना दिया था। लेकिन अब उनसे कप्तान छिन सकती है। आज तक ने एक रिपोर्ट के हवाले से लिखा है कि पंत की कप्तानी छिन सकती है। टीम के मालिक पिछले सीजन के प्रदर्शन से खुश नहीं थे।

आयरलैंड की महिला टीम ने इंग्लैंड को रोमांचक मुकाबले में हराया

बेलफास्ट (एजेंसी)। एमी मैगुएर (पांच विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद कप्तान गैबी लुईस (72) रनों की शानदार अर्धशतक पारी की बदौलत आयरलैंड की महिला टीम ने इंग्लैंड को रोमांचक एकदिवसीय मुकाबले में हराया दिया है।

154 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरलैंड की सलामी जोड़ी एमी हंटर और कप्तान गैबी लुईस ने अच्छी शुरुआत की। दोनों बल्लेबाजों ने पहले विकेट के लिये 51 रन जोड़े। सातवें ओवर में फ्रेया केम्प ने एमी हंडर (18) को आउट कर इंग्लैंड को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद मैडी विलियर्स ने ओर्ला प्रेंडरगैस्ट (11) को आउट कर दिया।

लीह पॉल (22) रन बनाकर आउट हुई। इस दौरान कप्तान गैबी लुईस एक छोर पर डटी रही। नौवें ओवर में 137 के स्कोर पर कप्तान गैबी लुईस के (72) के आउट होने के बाद लगातार तीन और विकेट गिरने से आयरलैंड की टीम संकट में आ गई थी। हालांकि रेबेका स्टोकेल (नाबाद तीन) तथा अलाना डाल्जेल (नाबाद चार) टीम को जीत की ओर ले गई और आयरलैंड ने 22 ओवर में सात विकेट पर 155 रन बनाकर मुकाबला तीन विकेट से जीत लिया।

इंग्लैंड ने इस हार के बावजूद तीन एकदिवसीय मैचों की श्रृंखला 2-1 से जीत ली है। इंग्लैंड की ओर से मैडी विलियर्स ने तीन विकेट लिये। लॉरेन फाइलर को दो विकेट मिले। फ्रेया केम्प ने एक बल्लेबाज को आउट किया। पिछले मैच 275 रनों से करारी हार झेलने के बाद बुधवार की रात तीसरे एकदिवसीय मुकाबले में इंग्लैंड ने टॉस जीतने के बाद पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया।

इंग्लैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 22 के स्कोर पर सलामी बल्लेबाज एम्मा लैम्ब का विकेट गवां दिया। इसके बाद टैमी ब्यूमोंट ने होली आर्मिटेज के साथ दूसरे विकेट के लिये 43 रन जोड़े। होली आर्मिटेज ने (15), पैगे स्कोल्फील्ड (21) और रयाना मैकडोनाल्ड-गे (17) रन बनाकर आउट हुई। टैमी ब्यूमोंट ने (52) रनों की पारी खेली। आयरलैंड के गेंदबाजी कहर के आगे इंग्लैंड के छह बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके।

हेड के शानदार प्रदर्शन से ऑस्ट्रेलिया ने पहले टी20 में इंग्लैंड को हराया

साउथैम्पटन । ट्रैविस हेड के शानदार प्रदर्शन से ऑस्ट्रेलिया ने यहां पहले ही टी20 क्रिकेट मुकाबले में इंग्लैंड को 28 रनों से हरा दिया। इस मैच में कंगारुओं की जीत के हीरो ट्रैविस हेड रहे। हेड ने 23 गेंदों में 59 रन बनाये। इस जीत के साथ ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है, वहीं आज सुबह इंग्लैंड ने टॉस

जीतकर ऑस्ट्रेलिया का बल्लेबाजी के लिए बुलाया। ऑस्ट्रेलिया के ट्रैविस हेड 59 और मैथ्यू शॉर्ट ने 41 रन बनाकर पावरप्ले के छह ओवरों में ही 86 रन बना दिये। हेड के पावरप्ले में आउट होने के बाद शॉर्ट भी आउट हो गए। इसके बाद जोश इंग्लिस ने 37 रन बनाये। वहीं बाकि बल्लेबाज रन नहीं बना पाये। इस प्रकार ऑस्ट्रेलियाई टीम 19.3 ओवरों में 179 रन पर ही सिमट गयी। वहीं इंग्लैंड की ओर से रीस टोप्ले और सैम कुर्रन ने भी अच्छी गेंदबाजी करते हुए टीम को वापसी कराने के प्रयास किये। टोप्ले ने तीन विकेट जबकि कुर्रन को दो विकेट मिले पर मेजबान टीम के बल्लेबाज किसी भी अवसर का लाभ नहीं उठा सके। लियाम लिविंग्स्टन ही 37 रन बना पाये। ही कप्तान फिल सॉल्ट ने 20 रन बनाए। इस प्रकार इंग्लैंड की पूरी टीम 19.2 ओवरों में ही 151 रन पर आउट हो गयी। ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए इंग्लैंड के बल्लेबाजों को कोई अवसर नहीं दिया। वहीं जेसन बेहरनडॉर्फ ने 3 विकेट जबकि मार्कस स्टोइनिस और एश्टन एगर ने 2-2 विकेट लिए।

बांग्लादेश के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयारी कर रहे शुभमन

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के युवा सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल आजकल बांग्लादेश के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन की तैयारी कर रहे हैं। शुभमन ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि आप किसी भी अंतरराष्ट्रीय टीम को कम आंक सकते हैं। इसलिए हम बांग्लादेश के खिलाफ पूरी ताकत से खेलेंगे। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ महीनों में बांग्लादेश ने जिस तरह की क्रिकेट खेली है, खासकर पाकिस्तान में उससे पता चलता है कि अब वह एक अच्छी टीम बन गयी है। इसलिए ये मुकाबला अच्छा होगा। इस बल्लेबाज ने कहा है कि उन्होंने पांच टेस्ट मैचों की सीरीज पहली बार इंग्लैंड के खिलाफ खेली थी जिसके अनुभवों से उनकी बल्लेबाजी बेहतर हुई। इंग्लैंड की उसी सीरीज से उन्हें लाभ हुआ और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा। शुभमन ने कहा कि तब इंग्लैंड के खिलाफ पहला टेस्ट हारने के बाद हम पर दबाव था। उस समय कई अनुभवी खिलाड़ी खेलने के लिए उपलब्ध नहीं थे। ऐसे में उन्हें बेहतर खेलकर अपने को साबित करने का अवसर मिला। शुभमन ने कहा कि मैंने पहले कभी 5 टेस्ट मैच नहीं खेले थे, इसलिए उस सीरीज का अनुभव एक अच्छा अनुभव और रोमांचक था। शुभमन ने 2021 में गाबा में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 91 रन की साहसिक पारी खेलकर सभी का ध्यान खींचा था। वहीं इंग्लैंड दौरे, आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल और 2022 और 2024 की शुरुआत के बीच दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान खराब प्रदर्शन के बाद उनपर सवाल उठने लगे थे। वहीं शुभमन ने इस साल 6 टेस्ट की 11 पारियों में 49.80 की औसत से 498 रन बनाए हैं, जिसमें 2 शतक और 2 अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 110 है। गिल ने 25 टेस्ट मैचों की 46 पारियों में 35.52 की औसत से 1,492 रन बनाए हैं, जिसमें 4 शतक और 6 अर्द्धशतक शामिल हैं।

आईओए प्रमुख पीटी उषा ने खेल संहिता के उल्लंघन की शिकायत के बाद कोषाध्यक्ष को नोटिस जारी किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष पीटी उषा ने देश में खेल की इस शीर्ष खेल संस्था के कोषाध्यक्ष सहदेव यादव के चुनाव से राष्ट्रीय खेल संहिता के उल्लंघन की शिकायत के बाद उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया है। उषा ने 10 तारीख को लिखे पत्र में यादव को 24 सितंबर तक जवाब देने को कहा है।

यादव को पत्र में उषा ने लिखा, ''मैं आपका ध्यान उस औपचारिक शिकायत की ओर आकर्षित करने के लिए आपको पत्र लिख रही हूं जो पिछले चुनाव में कोषाध्यक्ष पद पर चुनाव लड़ने की आपकी पात्रता से जुड़ी है और हाल में भारतीय ओलंपिक संघ को मिली है।'' पत्र में कहा गया, ''शिकायतकर्ता ने माननीय उच्च न्यायालय के एक फैसले का हवाला दिया है, जो शिकायतकर्ता के अनुसार चुनाव लड़ने की आपकी पात्रता के बारे में

चिंता पैदा करता है।''

पत्र की एक प्रति खेल मंत्री मनसुख मांडविया और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के एनओसी (राष्ट्रीय ओलंपिक समिति) संबंध विभाग के सहायक निदेशक जेरोमी पोइवी को भी भेजी गई है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि यादव और कुछ अन्य अधिकारी अपने पदों पर बने हुए हैं जो खेल संहिता के तहत आयु और कार्यकाल की सीमा संबंधी नियमों का उल्लंघन है। खेल संहिता के तहत विभिन्न पद पर लगातार 12 साल रहने के बाद पद छोड़ना पड़ता है।

यादव इससे पहले भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के सचिव थे और 15 साल तक उसके साथ जुड़े रहे। शिकायतकर्ता ने भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ के उपाध्यक्ष अजय पटेल, भारतीय वुशु महासंघ के भूपिंदर सिंह बाजवा और भारतीय नौकायन महासंघ की अध्यक्ष राजलक्ष्मी सिंह देव सहित आईओए के अन्य सदस्यों के खिलाफ भी खेल संहिता का पालन नहीं करने पर इसी तरह की चिंता जताई है।

आईओए ने शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी है। शिकायकर्ता ने इन लोगों को तुरंत आईओए की कार्यकारी समिति से हटाने की मांग की है। इसके बाद आईओए में चल रही खींचतान और तेज हो गई है।

अब से हर दो साल में खेला जाएगा अंडर-19 महिला टी20 एशिया कप : जय शाह

कुआलालंपुर । एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष जय शाह ने कहा है कि अब से हर दो साल में महिला अंडर-19 टी20 एशिया कप खेला जाएगा। जय शाह के अनुसार इस नये टूर्नामेंट की शुरुआत से युवाओं को टी20 विश्वकप की तैयारी का भी अवसर मिलेगा। शाह की अध्यक्षता में एसीसी के कार्यकारी बोर्ड की बैठक में इस टूर्नामेंट के आयोजन का

फैसला हुआ। इस टूर्नामेंट को इसलिए शुरु किया जा रहा है जिससे कि एशिया की उभरती महिला क्रिकेटरों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिस्पर्धा का अनुभव मिल सके। इससे ये आईसीसी टूर्नामेंट में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगी। इस फैसले से महिला क्रिकेट को भी आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी। शाह ने कहा, ''महिला अंडर-19 एशिया कप की शुरुआत एक बड़ी उपलब्धि है जो युवा महिला क्रिकेटरों को अपने कौशल को विकसित करने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक एक विश्वस्तर का मंच उपलब्ध करायेगी। यह नई शुरुआत एशिया में महिला क्रिकेट के भविष्य को बेहतर करने के लिए शुरु की गयी है और हमें उम्मीद है कि इससे एशिया में महिला क्रिकेट के विकास में तेजी आयेगी।

प्रतिभाओं की कमी के कारण पीछे जा रहा पाक क्रिकेट : गांगुली

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा है अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसके खराब होते प्रदर्शन का कारण मैच विजेता खिलाड़ियों का टीम में नहीं होना है। गांगुली ने कहा कि पाक में अच्छी प्रतिभाएं नहीं उभर रही हैं, इसी कारण उसे मैच विजेता खिलाड़ी नहीं मिले रहे। उन्होंने कहा कि मैच विजेताओं को तैयार करने के लिए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को हालात का सही तरीके से आंकलन करना होगा। गांगुली का ताजा बयान हाल में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज में टीम के खराब प्रदर्शन को लेकर सामने आया है। पाक को अपने घरेलू मैदान पर बांग्लादेश के खिलाफ 2 टेस्ट मैचों की सीरीज में करारी हार का सामना करना पड़ा था। इसके अलावा आईसीसी टूर्नामेंटों में भी उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। एकदिवसीय विश्वकप में पाक टीम लीग चरण से ही बाहर हो गयी थी। इसके अलावा टी20 विश्व कप के दौरान भी वह शुरु में ही बाहर हो गयी। यहां तक कि उसे अमेरिका जैसे नई टीम ने तक हरा दिया। इसी को लेकर गांगुली ने कहा कि पाक में प्रतिभाएं नजर नहीं आ रही हैं जबकि एक समय पा पाक से जावेद मियांदाद, वसीम, वकार, सईद अनवर, मोहम्मद यूसुफ और यूनिस खान जैसे क्रिकेटर निकले हैं पर वर्तमान में टीम मैच नहीं जीत रही जबकि हर पीढ़ी को जीतने के लिए शीर्ष स्तर के खिलाड़ियों को तैयार करना होता है। साथ ही कहा कि टीम को फिर से बेहतर बनाने के प्रयास पाक बोर्ड पीसीबी को ही करने होंगे।

भारतीय टीम के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन पर हैं नाहिद ही नजरें

ढाका। बांग्लादेश के युवा तेज गेंदबाज नाहिद राणा ने पाकिस्तान के खिलाफ अपनी टीम की टेस्ट सीरीज में 2-0 की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। वहीं अब नाहिद का लक्ष्य भारत के खिलाफ 19 सितंबर से होने वाली टेस्ट सीरीज में बेहतर प्रदर्शन करना है। इस तेज गेंदबाज से भारतीय बल्लेबाजों को सतर्क रहना होगा क्योंकि ये 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने के साथ ही अपनी लाइन व लैंथ भी बेहतर बनाये रखता है। पाकिस्तान के खिलाफ रावलपिंडी में दूसरे टेस्ट मैच में नाहिद ने 44 रन देकर चार विकेट लिए थे। इस क्रिकेटर ने सोशल मीडिय में अपना एक वीडियो साझा कर कहा है कि वह भारतीय टीम के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार है। इसमें उसने कहा, 'निश्चित रूप से हम भारतीय टीम के खिलाफ सीरीज के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं। हमने अभ्यास शुरू कर दिया है। हम जितना अधिक अभ्यास करेंगे उतना अधिक हम मैच के लिए तैयार रहेंगे। उन्होंने कहा, 'भारत की टीम हालांकि बहुत अच्छी है पर से भी सही है कि मैच के दिन जो टीम अच्छा खेलेगी जीत उसे ही मिलेगी। इस तेज गेंदबाज ने इस साल मार्च में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद से ही 150 किमी प्रति घंटे से अधिक की रफ्तार से गेंदबाजी की थी। पाक के खिलाफ भी उसका प्रदर्शन प्रभावी रहा था। नाहिद ने कहा, 'पाकिस्तान दौरे पर जाने से पहले मैंने कहा था कि मैं अपने देश के लिए कुछ हासिल करना चाहता हूं और मुझे खुशी है कि मुझसे जो उम्मीद की गई थी उसे मैंने पूरा किया। भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट मैच 19 सितंबर से चेन्नई में खेला जाएगा, यहां की पिच पर उछाल मिलने की उम्मीद है। ऐसे में जब राणा ने कहा कि वह फिर से 152 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने के लिए तैयार हैं। साथ ही कहा कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए तैयार हूं। साथ ही कहा कि तेजी को लेकर आप हमेशा कुछ नहीं कह सकत हैं। यह लय पर निर्भर होता है।

अफगानिस्तान ने द. अफ्रीका के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए टीम की घोषणा की, राशिद खान की वापसी

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए 17 सदस्यीय टीम की घोषणा की है। हशमतुल्लाह शाहिदी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऐतिहासिक द्विपक्षीय वनडे सीरीज में अफगानिस्तान की कप्तानी करेंगे, जबकि रहमत शाह को उप-कप्तानी सौंपी गई है। इस टीम में राशिद खान की भी वापसी हुई है, जो चोट के कारण आयरलैंड के खिलाफ पिछली वनडे सीरीज से बाहर हो गए थे।

गुलबदीन नैब और मोहम्मद नबी भी अनुभवी खिलाड़ियों वाली इस टीम में शामिल हैं। हालांकि कुछ जाने-माने खिलाड़ियों की चोटों ने दो युवा दावेदारों को शामिल करने का रास्ता साफ कर दिया है। अफगानिस्तान की टीम में इब्राहिम जादरान की सेवाएं नहीं होंगी, जो टखने की मोच के कारण बाहर हो गए थे और मुजीब उर रहमान, जो अभी तक दाएं हाथ की मोच से उबर नहीं पाए हैं। आईसीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार इससे हाल ही में घरेलू लिस्ट ए प्रतियोगिता में प्रभावित करने वाले प्रतिभाशाली दाएं हाथ के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज अब्दुल मलिक और सात टी20आई खेलने वाले शीर्ष क्रम के अन्य विकल्प दरवेश रसूली के लिए रास्ते खुल गए हैं।

एसीबी के सीईओ नसीब खान ने कहा, 'हमारे क्रिकेट इतिहास में पहली बार दक्षिण अफ्रीका की मेजबानी करना अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। वे एक बेहतरीन टीम हैं और उनके खिलाफ वनडे सीरीज खेलना कुछ ऐसा है जिसे लेकर हम सभी उत्साहित हैं। हमारी टीम ने पिछले दो-तीन सालों में आईसीसी इवेंट्स में शानदार प्रदर्शन किया है और हम अपनी टीम को द्विपक्षीय क्रिकेट में भी उतना ही प्रतिस्पर्धी बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।'

यह वनडे सीरीज आईसीसी टूर्नामेंट के बाहर अफगानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहली मुलाकात होगी जिसके तीनों मैच शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में एसीबी द्वारा आयोजित किए जाएंगे। दोनों टीमें पिछली बार आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 में भिड़ी थीं जहां प्रोटियाज ने सेमीफाइनल में अफगानिस्तान को आसानी से हरा दिया था।

अफगानिस्तान टीम: हशमतुल्लाह शाहिदी (कप्तान), रहमत शाह (उपकप्तान), रहमानुल्लाह गुरबाज (विकेटकीपर), इकराम अलिखिल (विकेटकीपर), अब्दुल मलिक, रियाज हसन, दरविश रसूली, अजमतुल्लाह उमरजई, मोहम्मद नबी, गुलबदीन नैब, राशिद खान, नांग्याल खरोती, अल्लाह मोहम्मद गजनफर, फजल हक फारूकी, बिलाल सामी, नवीद जादरान और फरीद अहमद मलिक।

भागलपुर की बूह को गूगल ने दिया 60 लाख रुपये का पैकेज

भागलपुर । दुनिया की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी गूगल ने भागलपुर जिले के नवगछिया अनुमंडल कार्यालय के प्रधान लिपिक राजीव नयन चौधरी की बहु अलंकृता साक्षी को सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर काम करने का मौका दिया है। अलंकृता नवगछिया के सिमरा गांव के शंकर मिश्रा की पुत्री हैं, जो फिलहाल झारखंड के कोडरमा में रह रहे हैं। अलंकृता के ससुर चौधरी ने बताया कि गूगल कंपनी में आने से पहले वह दो साल बेंगलुरु में विप्रो कंपनी में, एक साल अर्न्स्ट एंड यंग कंपनी में और एक साल सैमसंग हार्मन में काम कर चुकी हैं। यहीं से उनका चयन गूगल में हुआ। उन्होंने बताया कि मेरे बेटे मनीष कुमार की शादी 8 दिसंबर 2023 को है। बूह अलंकृता पिता कोडरमा में प्राइवेट नौकरी करते हैं और मां रेखा मिश्रा एक निजी स्कूल में शिक्षिका हैं। अलंकृता के ससुर ने बताया कि उनका बचपन झारखंड के कोडरमा में बीता और वहीं से उनकी पढ़ाई लिखाई हुई। अलंकृता दो बहनें और एक भाई है। अलंकृता के पति मनीष कुमार भी बेंगलुरु में एक सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करते हैं। दोनों परिवारों को इस बात की अपार खुशी है कि गूगल जैसी विश्व प्रसिद्ध कंपनी से 60 लाख रुपये के पैकेज पर चयन कर काम करने का अवसर दिया है। यह अत्यंत गर्व और हर्ष की बात है। और उनके घर से गूगल कंपनी में काम कर रही है।

चंडीगढ़ के सेक्टर 10 में संदिग्ध विस्फोट...पुलिस जांच में जुटी

चंडीगढ़ । पुलिस ने बताया कि बीती रात चंडीगढ़ के सेक्टर 10 में एक संदिग्ध कम तीव्रता वाला विस्फोट हुआ, जिसमें एक रिहायशी इलाके में खिड़कियां और फूलों के गमले क्षतिग्रस्त हो गए। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, घटना की जांच हो रही है, फोरेंसिक टीमें घटनास्थल पर साक्ष्य एकत्र कर रही हैं। उन्होंने बताया कि विस्फोट के सिलसिले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने संदिग्धों के बारे में सूचना देने वाले को 2 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। पुलिस के अनुसार, आरोपी व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल हुआ ऑटो-रिक्शा जब्त कर लिया गया है। चंडीगढ़ एसएसपी कंवरदीप कौर के अनुसार, विस्फोट शाम 6 बजे के आसपास हुआ, जिससे रिहायशी इलाके में खिड़कियों और फूलों के गमलों को नुकसान पहुंचा। सीएफएसएल की टीम आ गई है और सभी साक्ष्य एकत्र किए जा रहे हैं। एसएसपी ने कहा कि शिकायतकर्ता ने बताया कि उसने घर के पास दो लोगों को देखा, जो कथित तौर पर घटनास्थल पर ग्रेनेड फेंक रहे थे। उन्होंने कहा, शिकायतकर्ता ने कहा है कि 2 संदिग्ध लोग एक ऑटो में आए और ग्रेनेड फेंका। शिकायतकर्ता ने उन्हें देखा। टीमें उनकी तलाश कर रही हैं। कुछ विस्फोट हुआ है, हम विस्फोट के कारणों की जांच कर रहे हैं।

मांड्या में गणपति विसर्जन में पथराव, भड़की हिंसा ; दुकानों और वाहनों में लगा दी आग

बैंगलुरु। कर्नाटक के मांड्या जिले में बुधवार रात दो समूहों के बीच झड़प हो गई। यहां के नागमंगला कस्बे में गणपति प्रतिमा विसर्जन जुलूस पर कथित तौर पर पथराव करने के बाद दो पक्षों में झड़प हुई। घटना के बाद कुछ दुकानों और वाहनों में आग लगा दी गई।पुलिस ने इलाके में प्रतिबंधात्मक आदेश लागू कर दिए हैं और हाई अलर्ट पर है। घटना के बाद हिंदू समुदाय के लोगों ने स्थानीय पुलिस स्टेशन पर विरोध प्रदर्शन किया और पथराव के लिए जिम्मेदार लोगों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की। केंद्रीय मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने घटना की निंदा की और जनता से शांति बनाए रखने का आग्रह किया। सूत्रों के अनुसार, कुछ युवक गणपति प्रतिमा विसर्जन के लिए जुलूस निकाल रहे थे और जब वे कस्बे में एक दरगाह के पास से गुजर रहे थे तो कुछ असामाजिक तत्वों ने उन पर पथराव करना शुरू कर दिया। इसके बाद दोनों पक्षों में झड़प हो गई।कुमारस्वामी ने कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर राज्य की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, नागमंगला में यह घृणित घटना पार्टी और राज्य सरकार द्वारा राजनीतिक लाभ के लिए एक विशेष समुदाय के प्रति अतिशय लाड़-प्यार और तुष्टिकरण के परिणामस्वरूप हुई। कुमारस्वामी ने तुरंत कार्रवाई की मांग की।कर्नाटक एसडीपीआई प्रमुख अब्दुल मजीद ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से डीजीपी को कानून-व्यवस्था बहाल करने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करने और आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश देने की अपील की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सीएम को टैग करते हुए लिखा कि, संबंधित अधिकारियों को ऐसे समूहों के खिलाफ सख्त कदम उठाने का निर्देश दें जिनका उद्देश्य सांप्रदायिक सद्भाव को बाधित करना और राज्य की प्रतिष्ठा को धूमिल करना है।

एआई फीचर्स और सेगमेंट के पहले 16 जीबी रैम + 256 जीबी रोम के साथ लॉन्च हुआ पोवा 6 नियो

पटना : इनोवेटिव टेक्नोलॉजी को सुलभ बनाने के लिए मशहूर ब्रांड, टेक्नो ने एक और गेम-चेंजिंग स्मार्टफोन- टेक्नो पोवा 6 नियो लॉन्च किया है। इसे स्मार्टफोन में एआई अनुभव को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। चूँकि, फीचर्स को अधिक सहज और शक्तिशाली बनाते हुए एआई तेजी से स्मार्टफोन के परिदृश्य को बदल रहा है, इसके बावजूद इसकी उपलब्धता सिर्फ चुनिंदा लोगों तक ही सीमित है। टेक्नो उन्नत टेक्नोलॉजी को किफायती बनाने में हमेशा ही सबसे आगे रहता है। यह सुनिश्चित करता है कि हर व्यक्ति के लिए एआई की पहुँच सुलभ हो। पोवा 6 नियो के साथ, टेक्नो चाहता है कि यूजर्स एआई की पूरी क्षमता का लाभ उठाएँ। 'सिम्पली एआई इट' के साथ अब डिजिटल जगत में क्रॉंति लाते हुए, टेक्नो यूजर्स को स्मार्टफोन द्वारा पेश किए जाने वाले तमाम फीचर्स से रूबरू कराएगा। भारत के वो टियर 3 और अन्य शहर, जहाँ इनोवेशन की कम ही पहुँच है, वहाँ पोवा 6 नियो अपनी अलग पहचान बनाने के लिए तैयार है। यह प्रीमियम एआई फीचर्स पेश करने वाले पहले स्मार्टफोन्स में से एक है, जिनमें एआईजीसी पोर्ट्रेट, एआई मैजिक इरेजर, एआई कटआउट, एआई वॉलपेपर, एआई आर्टबोर्ड और आस्क एआई शामिल हैं। एक ऐसे फोन की कल्पना करें, जो न केवल आपके आदेशों का पालन करता है, बल्कि आपकी जरूरतों के अनुरूप काम करता है और आपको व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करता है। पोवा 6 नियो में आपकी जरुरत का हर एक फीचर शामिल है। टेक्नो पोवा 6 नियो 14 सितंबर से अमेजन और रिटेल स्टोर्स पर सिर्फ 11,999 रुपए की शुरूआती कीमत पर खरीदी के लिए उपलब्ध है। यह फोन 108 मेगा पिक्सेल एआई कैमरा, 16 जीबी रैम और 256 जीबी रोम के साथ आता है, जो बेहद किफायती कीमत पर सबसे शानदार परफॉर्मेंस देता है। लॉन्च पर बोलते हुए, टेक्नो मोबाइल इंडिया के सीईओ अरिजीत तालापात्रा ने कहा, टेक्नो में, हमारा मानना है कि मॉडर्न टेक्नोलॉजी की पहुँच सिर्फ चुनिंदा लोगों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह सभी के लिए समान रूप से सुलभ होना चाहिए। पोवा 6 नियो के साथ, हमें अपने ग्राहकों के लिए प्रीमियम एआई फीचर्स लाकर बहुत खुश हैं। 108 मेगा पिक्सेल एआई कैमरा के साथ यह अपने सेगमेंट का पहला 5जी फोन है। यह स्मार्टफोन किफायती और इनोवेटिव प्रोडक्ट्स पेश करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह सुनिश्चित करता है कि देश भर के तमाम ग्राहकों को गुणवत्ता से समझौता किए बिना उन्नत एआई सुविधाओं का अनुभव मिल सके। पोवा 6 नियो के शानदार फीचर्स इसे अपनी श्रेणी का सबसे शानदार स्मार्टफोन बनाते हैं : अगले स्तर के एआई फीचर्स अपने नए एआई बेस्ट फ्रेंड फॉरएवर पोवा 6 नियो से मिलें! स्मार्ट टूल्स की पेशकश के साथ, यह फोन आपके रोजमर्रा के कामों को मजेदार बना देता है। आप एआईजीसी पोर्ट्रेट के साथ फोटोज को अवतार में बदल सकते हैं, एआई मैजिक इरेजर के साथ वो सभी ऑब्जेक्ट्स हटा सकते हैं, जिन्हें आप अपनी फोटो में नहीं चाहते, एआई कटआउट के साथ कस्टम स्टिकर्स बना सकते हैं, एआई वॉलपेपर 2.0 के साथ अपने फोन को पर्सनलाइज कर सकते हैं, एआई आर्टबोर्ड के साथ डूडल्स को आर्ट में बदल सकते हैं, और साथ ही, आस्क एआई के साथ मल्टीटास्किंग, व्याकरण सुधार और त्वरित जवाब प्राप्त करके सबसे आगे रह सकते हैं। सेगमेंट का पहला कैमरा इनोवेशन फोटोग्राफी पसंद करने वाले यूजर्स के लिए विशेष सौगात! पोवा 6 नियो में 5जी के साथ ही 108 मेगा पिक्सेल एआई कैमरा शामिल है, जो स्पष्ट और डिटेल्ड शॉट्स प्रदान करता है। आपकी तमाम जरूरतों के अनुरूप यह 3 गुना दोषरहित इन-सेंसर जूम, सुपर नाइट मोड, टाइम-लैप्स, वीलॉग और ड्युअल वीडियो की सुविधा देता है। ड्युअल-कलर फ्लैश और एआई के साथ 8 मेगा पिक्सेल का फ्रंट कैमरा यह सुनिश्चित करता है कि आपकी सेल्फी सबसे शानदार दिखे, फिर चाहे रोशनी कैसी भी हो।

शक्ति अभ्यास: दूसरे देशों के पायलटों ने उड़ाए हमारे विमान, दिखाए करतब

– रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की तारीफ बोले–हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन

जोधपुर (एजेंसी)। इंडियन एयर फोर्स की पहली मल्टीनेशनल एयर एक्सरसाइज तरंग शक्ति 2024 जोधपुर के एयरफोर्स स्टेशन पर देखने को मिली। वायुसेना की एयर एक्सरसाइज में भारत सहित आठ देश इसमें भाग ले रहे हैं, जबकि 20 अन्य देश इसे ऑब्जर्व कर रहे हैं। इंडियन एयर फोर्स के इस पहले बहुराष्ट्रीय तरंग शक्ति एक्सरसाइज में विदेशी वायु सेनाओं के चीफ भी शिरकत कर रहे हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तरंग शक्ति अभ्यास का निरीक्षण करने पहुंचे। इसके साथ ही रक्षा मंत्री ने 12 से 14 सितंबर तक चलने वाली डिफेंस एविएशन एक्सपो का भी उद्घाटन किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के

साथ भारतीय रक्षा क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। सेंसर, रडार और क्षेत्र में भारत काफी हद तक आत्मनिर्भर हो गया है। आज के समय में जहां कई देश युद्ध लड़ रहे हैं वहीं भारत का लक्ष्य एकजुट रहकर एकसाथ आगे बढ़ना है।

उन्होंने कहा कि दुनिया बदल रही है और नई चुनौतियां सामने आ रही हैं, ऐसे में हमें अपनी साझेदारी, सहयोग का दायरा बढ़ाना होगा। हमारी वायुसेना, और हमारा रक्षा क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हल्के लड़ाकू विमान, सेंसर, राडार और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर जैसी चीजों में हम बहुत हद तक आत्मनिर्भर हो चुके हैं और इन क्षेत्रों में लगातार आगे बढ़ने के लिए हम प्रयासरत हैं।

तरंग शक्ति युद्धाभ्यास के दौरान गुरुवार को रक्षा मंत्री की मौजूदगी में वायुसेना ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। भारत सहित आठ देशों के वायुसेना प्रमुखों ने एक-दूसरे के लड़ाकू विमान उड़ाए। यह नजारा देख रक्षा मंत्री ने खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन है।

लालू प्रसाद यादव को हार्ट प्रॉब्लम, मुंबई के अस्पताल में हुई एंजियोप्लास्टी

मुंबई। राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव की मुंबई के अस्पताल में एंजियोप्लास्टी हुई। यादव को 10 सितंबर को मुंबई के एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में भर्ती कराया गया था और बुधवार को उनकी एंजियोप्लास्टी की गई। सूत्रों ने बताया कि यादव को एक या दो दिन में छुट्टी मिलने की उम्मीद है। सूत्रों ने कहा कि उन्हें 10 सितंबर, 2024 को डॉ. (संतोष) डोरा और डॉ. तिलक (सुवर्णा) द्वारा एंजियोप्लास्टी के लिए एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में फिर से भर्ती कराया गया था। इससे पहले इसी साल जुलाई में अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद यादव को दिल्ली के एम्स अस्पताल ले जाया गया

था। बाद में इलाज के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई। 66 वर्षीय पूर्व केंद्रीय मंत्री की एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में छह घंटे लंबी महाधमनी वाल्व रिप्लेसमेंट सर्जरी हुई थी। उन्होंने 2018 और 2023 में फॉलो-अप के लिए अस्पताल का दौरा किया था। साल 2022 में लालू को किडनी की बीमारी का पता चला क्योंकि उनकी केवल 25 प्रतिशत किडनी ही ठीक से काम कर रही थी। डॉक्टरों ने प्रत्यारोपण की सलाह दी, जिसके बाद सिंगापुर में रहने वाली उनकी बेटी राहिनी आचार्य ने उन्हें अपनी एक किडनी दान कर दी।

मीरवाइज की सुरक्षा में लगे लोग तय करें, मेरी तरफ से कोई रोक नहीं

–हुर्रियत नेता के घर से बाहर निकलने को लेकर एलजी सिन्हा ने कही यह बात

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव से पहले एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में हुर्रियत नेता मीरवाइज उमर फारूक को बोलने और अपनी बात रखने की आजादी प्रशासन की तरफ से दी जाएगी? इसके जवाब में एलजी मनोज सिन्हा ने कहा कि मीरवाइज साहब पर कोई रोक नहीं है। अगर एजेंसियां सलाह देती हैं कि उनको खतरा है और उन्हें सार्वजनिक कार्यक्रमों में नहीं जाना चाहिए तो बात अलग है।

सिन्हा ने कहा कि मीरवाइज उमर फारूक इस कार्यक्रम में आ पाएंगे या नहीं, यह आपको उन्हें और उनकी सुरक्षा में लगे लोगों को तय करना है। मेरी तरफ से कोई

रोक नहीं है। सिर्फ उन्हीं पर नहीं बल्कि किसी भी राजनीतिक या धार्मिक व्यक्ति पर कोई रोक नहीं है। हां उन लोगों पर जरूर बैन है जो भारत की एकता और अखंडता के लिए खतरा हैं। बता दें कि मीरवाइज उमर फारूक को धारा 370 के निरस्त होने से ठीक पहले उनके घर में नजरबंद कर दिया गया था। उन्हें केवल कुछ मौकों के लिए अपने घर से बाहर जाने की इजाजत मिलती रहती है।

रियल स्टेट और हेल्थ सेक्टर को लेकर पूछे गए सवाल पर एलजी सिन्हा ने कहा कि मैंने कभी नहीं कहा कि जम्मू-कश्मीर में रियल स्टेट सेक्टर में इन्वेस्टमेंट आ गया है। एक समिट हुई थी, जिसमें कानूनी पेचीदगियां थीं। अभी तक न्यूनतम इन्वेस्टमेंट आया था। श्रीनगर में तीन नए मेडिकल कॉलेज बन गए हैं। जम्मू में अपोलो और मेदांता में भी काम शुरू होने वाले है। पिछले पांच साल में जम्मू-कश्मीर में बने मेडिकल कॉलेज और एम्स के बारे में उन्होंने कहा कि पांच लाख रुपए तक का इलाज के लिए सबको मिलता है, यह जम्मू-कश्मीर में ही संभव है।

राहुल गांधी ने अपने हाल के जम्मू-कश्मीर दौरे पर एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा था कि एलजी को यहां का राजा बना दिया है। इस सवाल पर मनोज सिन्हा ने कहा कि जनता की राय ले लें, राहुल गांधी के दिमाग के दरवाजे खुल जाएंगे। सीक्रेट बैलट करा लें, अगर जम्मू-कश्मीर की 75 फीसदी से ज्यादा जनता ने ये नहीं कहा कि पिछले पांच साल में उनकी भलाई के लिए काम हुआ है तो मैं यहां से चला जाऊंगा। उन्होंने यह भी कहा कि न्यायालयों पर जो लोग सवाल उठा रहे हैं, ये ठीक नहीं है. कीचड़ में पत्थर गिरता है तो छींटे खुद पर ही आते हैं। लोगों को इस तरह की बातों से बचना चाहिए।

राहुल गांधी पर सिन्हा का तंज...... जनता की राय ले लें, दिमाग के दरवाजे खुल जाएंगे

नई दिल्ली । जम्मू-कश्मीर में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव से पहले राज्य के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने एक मीडिया कार्यक्रम में शिरकत की। उपराज्यपाल सिन्हा ने 1957 के पहले चुनाव का जिक्र कर कहा कि तब 75 सीटें थीं। 20 एमएलए निर्विरोध चुने गए। जम्मू-कश्मीर की अवाम, खासकर घाटी के लोगों ने भी भारत के लोकतंत्र में आस्था व्यक्त की। उन्होंने कहा कि साजिश से बाहर निकलकर घाटी की अवाम को भी समझ आ गया है कि हमारा भविष्य भारत के लोकतंत्र में है। उन्होंने उपराज्यपाल की पावर बढ़ने के सवाल पर कहा कि उस पर सवाल उठाना उचित नहीं है। जहां भी संघ राज्य क्षेत्र या केंद्र शासित प्रदेश हैं, वहां इस तरह की शक्तियां उपराज्यपाल के पास हैं। जो भी सरकार आएगी, उस चुनी हुई सरकार को मेरा पूरा समर्थन होगा। उपराज्यपाल सिन्हा ने कहा कि विधानसभा चुनाव भी पूरी तरह से फ्री और निष्पक्ष होगा। आज रात के 11 बजे भी लोग बाहर जाकर खाना खा रहे हैं, 12 बजे रात तक प्रचार हो रहा है। उन्होंने कहा कि ये जो बदलाव हुआ है, इस बदलाव को देखने की जरूरत है।

निलंबित आईएएस पूजा खेडकर की बढ़ी मुश्किलें, हाईकोर्ट ने भेजा नोटिस

–यूपीएससी के लिए गलत बयान और हलफनामा देने का मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने यूपीएससी की याचिका पर पूजा खेडकर को नोटिस जारी किया, जिसमें दावा किया गया था कि उन्होंने गलत प्रस्तुतियां दी हैं। हाईकोर्ट ने गुरुवार को पूर्व परिवीक्षाधीन आईएएस प्रशिक्षु पूजा खेडकर से यूपीएससी की याचिका पर जवाब मांगा है, जिसमें उनके खिलाफ कोर्ट में गलत बयान और हलफनामा देने के लिए झूठी गवाही की कार्यवाही शुरू करने की मांग की गई है।

यूपीएससी ने तर्क दिया कि 31 जुलाई को पूजा खेडकर की उम्मीदवारी रद्द की गई थी, उसी दिन उन्हें उनके पंजीकृत ईमेल-आईडी पर सूचित किया गया था। इसने कहा कि यह वही ईमेल आईडी थी, जो सीएसपी 2022 के लिए उनके ऑनलाइन आवेदन में पंजीकृत थी। उन्होंने कोर्ट में झूठा बयान दिया कि उन्हें आदेश नहीं दिया गया है और उन्हें यूपीएससी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के जरिए से इसकी जानकारी मिली है, यह दावा किया गया।

यूपीएससी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता नरेश कौशिक ने कहा कि पूजा खेडकर ने अपने वकीलों को भी गलत जानकारी दी और वह अच्छी तरह से जानती थी कि वह शपथ पर झूठा बयान दे रही है, फिर भी उसने जानबूझकर झूठे बयान की सत्यता की शपथ ली। वकील कौशिक ने दायर आवेदन में कहा कि अदालत से अनुकूल आदेश प्राप्त करने के उद्देश्य से शपथ पर गलत बयान देना एक बहुत ही गंभीर अपराध है, जो कानूनी व्यवस्था की नींव को कमजोर करता है।

इसमें दावा किया गया कि खेडकर का हलफनामा 28 जुलाई, 2024 का था, जब यूपीएससी द्वारा जारी 31 जुलाई का आदेश अस्तित्व में भी नहीं था। यूपीएससी ने अदालत से उचित कार्यवाही शुरू करने और झूठी गवाही देने के अपराध के लिए कानून के मुताबिक खेडकर के खिलाफ जांच का निर्देश देने का आग्रह किया है। खेडकर ने पहले यूपीएससी की प्रेस विज्ञप्ति को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था, जिसमें कहा गया था कि उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी गई है। एक अगस्त को यहां की एक ट्रायल कोर्ट ने उनकी अग्रिम जमानत याचिका खारिज करते हुए कहा था कि ये गंभीर आरोप हैं जिनकी गहन जांच की जरुरत है।

अखिलेश के कारण टूटा गठबंधन... फोन उठाना बंद किया : मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो और पूर्व सीएम मायावती ने सपा से गठबंधन टूटने को लेकर बड़ा खुलासा किया है। मायावती ने बताया कि अखिलेश यादव के कारण गठबंधन टूट गया है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव 2019 में महज पांच सीटें मिलीं। इससे दुखी होकर अखिलेश ने उनका फोन भी उठाना बंद कर दिया था। मायावती ने इसका दावा अपनी बुकलेट में किया है। यह बुकलेट उपचुनाव और 2027 विधानसभा के लिए पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को बांटी जा रही है।

मायावती ने कहा है कि 2019 लोकसभा चुनाव में सपा को पांच सीटें मिलीं। वहीं बसपा को 10 सीटें जीती थी। उन्होंने कहा कि यही बड़ी वजह बन थी कि जब सपा के वरिष्ठ नेताओं ने फोन उठाना बंद कर दिया था। इस बुकलेट में मायावती ने सपा के साथ दो बार हुए गठबंधन के टूटने की वजह भी जाहिर की है। दरअसल, पिछले दिनों लखनऊ में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बसपा सदस्यों को 59 पन्नों की बुकलेट वितरित की गई। इस बुकलेट में मायावती ने अपनी अपील में सपा के साथ गठबंधन को फिर से याद किया, जिसकी शुरुआत 1993 में हुई जब कांशीराम ने मुलायम सिंह यादव के साथ गठबंधन किया था। मायावती ने कहा है कि उस गठबंधन के टूटने वजह लखनऊ गेस्ट हाउस कांड था। मायावती की अपीलों और संदेश को लेकर राजनीति गलियारों में चर्चा है। कहा जा रहा है कि मायावती इस बुकलेट के जरिए 2027 के यूपी विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी को मजबूत करना चाह रही हैं। यह एक रणनीतिक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

अयोध्या में चल रही है जमीन की लूट घसोट: अखिलेश यादव

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के मुखिया एवं उप्र के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी के नेता और अधिकारी जमीन की लूट घसोट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेताओं ने अधिकारियों की मिलीभगत से अयोध्या को लूट का अड्डा बना दिया है। सेना की फायरिंग रेंज की जमीन को कौड़ियों के दाम में बेच दिया गया है। किसानों को डरा कर उनकी जमीन को औनेपौने दाम पर खरीदा गया है। सरकार के अधिकारी और भाजपा के लोग लूट में लग गए है और जहां लूट होगी वहां विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

सपा मुखिया अखिलेश यादव ने गुरुवार को यहां पत्रकारों से बातचीत में कहा कि सपा के अयोध्या के नेताओं ने आज लूट का काला चिट्ठा खोला है। अब सोचिए जब राम की नगरी में लूट का यह हाल है तो पूरे प्रदेश में कितनी लूट हो रही होगी। राम मंदिर को लेकर उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद अयोध्या में भाजपा के नेताओं ने सस्ती दरों पर जमीने हथियानी शुरु कर दी और किसानों की सर्किल रेट को बढ़ाने की मांग की नजरअंदाज कर दिया और जब इन्होंने किसानों से सस्ते दामो में जमीनें ले ली, अब सर्किल रेट बढ़ा दिये गये हैं।

सपा अध्यक्ष ने कहा ÷सरकार के नेताओं, और अधिकारियों की सूची और रजिस्ट्रियां हमारे पास है। इन्होंने सेना की जमीन पर कब्जा कर लिया, जिस डिफेंस की ओर कोई नहीं देखता, उस जमीनों को इन्होंने बेंच दिया। अपनी सुविधा के लिए रेलवे की लाइन बदल दी और उस जमीन को सरकारी अधिकारियों और भाजपा नेताओं ने हथिया लिया जबकि नयी रेल लाइन डालने के नाम पर कई घरों को खाली करने के नोटिस थमा दिये।÷ उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार पर ज़ीरो टॉलरेंस का नारा देने वालों ने गरीबों और किसानो को आवास विकास का डर दिखा कर उनसे सस्ते दामों में जमीने ले लीं मगर समाजवादी पार्टी गरीबो के साथ है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि वे विकास के खिलाफ नहीं है। अयोध्या एक वर्ल्ड क्लास सिटी बने, इसके लिए वह हर सहयोग को तैयार हैं मगर विकास के लिये दिमाग का होना जरूरी है जो भाजपा के नेताओं के पास नहीं है। दो साल बाद जब समाजवादी सरकार आएगी तो न सिर्फ अयोध्या को विश्वस्तरीय पर्यटन नगरी बनायेंगे बल्कि गरीबों को सर्किल रेट बढ़ाकर मुआवजा दिया जाएगा।

सुल्तानपुर की घटना का जिक्र करते हुये उन्होने कहा कि पुलिस एनकाउंटर के नाम पर हत्यायें कर रही हैं। मंगेश यादव एनकाउंटर केस में गांव वाले भी कहते है कि पुलिस रात में उठाकर ले गयी, उसके पास से जो मोटरसाइकिल मिली उसकी चोरी की रिपोर्ट घटना के कई दिन बाद लिखी गयी। मंगेश यादव के पास नया बैग मिला, उस बैग में नए कपड़े मिले। दरअसल यह एनकाउंटर नहीं बल्कि हत्या थी और यह पहला मामला नहीं है। इससे पहले तमाम एनकाउंटर हुए जिनमें सबसे ज्यादा पीडीए परिवार के लोग मारे गए। उन्होने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर तंज कसते हुये कहा कि जिसका दिल दिमाग नाकारात्मक हो उससे विकास की क्या उम्मीद कर सकते हैं। अगर दिमाग होता तो पुलिस चप्पल में एनकाउंटर न करती। ये सरकार लूट के साथ डर दिखाकर एनकाउंटर कर रही है। जो अधिकारी रात में हत्या की रणनीति बनाएं, उनसे न्याय की क्या उम्मीद की जा सकती है। हकीकत तो यह है कि भाजपा सरकार किसी की सगी नही है, उन्हें अपना स्वार्थ सिद्ध करना है।

एक सवाल के जवाब में उन्होने जमीन की रजिस्ट्रियां दिखाते हुये कहा ÷जब गरीब से जमीन ली जा रही थी, तब सर्किल रेट क्यो नहीं बढ़ाया गया। इन जमीन रजिस्ट्री में सबकी फोटो लगी है, उनके परिवार के लोगो की फोटो लगी है, अब तय है इसके बाद मुख्यमंत्री कोई अलग सूची नही पढ़ पाएंगे।÷ बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमों मायावती के गठबंधन तोड़ने के आरोप का जवाब देते हुये अखिलेश यादव ने कहा ÷जिस दिन बीएसपी से गठबंधन टूटा दोनो दल के लोग आजमगढ़ में सार्वजनिक मंच पर थे मैं भी था किसी को नहीं पता था कि गठबंधन टूट गया। मैने खुद फोन कर पूछना चाहा था कि ऐसा क्यों किया. कभी कभी अपनी बात छुपाने के लिए कुछ बाते की जाती है।÷

पहले भारत को आंखे दिखाने में कसर नहीं छोड़ी, अब उसी के सामने कटोरा लेकर खड़ा हुआ बांग्लादेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार जाने के बाद वहां केवल अराजकता और असमंजस्य के अलावा कुछ नहीं बचा। जिसका फायदा पाकिस्तान ने उठाया और उसे खुद की कठपुतली बनाने की कोशिश करते हुए भारत के खिलाफ भड़काया। बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार बहकावे में आ गई और भारत के खिलाफ जो आग उगल सकते थे उगली। लेकिन भारत ने कभी कोई सख्ती नहीं दिखाई। केवल छोटा भाई समझकर बांग्लादेश की हरकतों को नजरअंदाज करता रहा। बांग्लादेश ने कभी शेख हसीना के प्रत्यर्पण को लेकर अंतरराष्ट्रीय कोर्ट में जाने की धमकी दी जा रही है तो कभी अंतरराष्ट्रीय सीमा से अवैध घुसपैठ पर बीएसएफ द्वारा गोली मारे जाने पर बांग्लादेश भारत से विरोध जता रहा है। एक महीने के अंदर ही बांग्लादेश में ऐसे घटनाक्रम हुए, जिससे नई सरकार का भारत विरोधी एजेंडा साफ हो गया। हालांकि इसके बावजूद पड़ोसी देश को भारत से खैरात के लिए हाथ पसार रहा है।

बांग्लादेश की फाइनेंस मिनिस्ट्री के एडवाइजर की तरफ से यह स्टेटमेंट जारी किया गया है। बांग्लादेश मीडिया से बात करते हुए अंतरिम सरकार के फाइनेंस एडवाइजर सालेहुद्दीन अहमद ने कहा कि भारत द्वारा फंड की गई परियोजनाएं हमारे लिए बहुत जरूरी हैं। बांग्लादेश में नए प्रशासन के तहत भी यह प्रोजेक्ट चलते रहेंगे। कहा गया कि इंडियन हाई कमीशन चीफ प्रणय वर्मा के साथ बांग्लादेश अपनी बैठक में बढ़े हुए सहयोग की उम्मीद करता है। सालेहुद्दीन अहमद ने कहा, पहले से ही, भारत से हमारे पास जो परियोजनाएं हैं, वे बेहद बड़ी हैं और हम उन्हें जारी रखेंगे क्योंकि वे छोटी परियोजनाएं नहीं हैं और हम अपने फायदे के लिए एक और बड़ी परियोजना लेंगे। हम जो कुछ भी हासिल कर चुके हैं, उस पर नहीं रुकेंगे और हम उन परियोजनाओं के बारे में बात करेंगे। परियोजनाओं के फंड और उनके लागू करने के बारे में भी बात करेंगे। बांग्लादेश भले ही भारत से आर्थिक मदद मांग रहा हो लेकिन उसकी करनी और कथनी में बड़ा अंतर है।

शेख हसीना की सरकार के समय में भारत और बांग्लादेश के रिश्ते ऊंचाईयों पर थे। जी20 के वक्त पीएम मोदी ने खुद वर्ल्ड लीडर्स से शेख हसीना को मिलवाया। अब हसीना की सरकार जाने के एक महीने के अंदर ही बांग्लादेश भारत को तीन बार आंख दिखा चुका है। सबसे पहले मानसून के सीजन में बांग्लादेश ने भारत पर नदी में ज्यादा पानी छोड़कर उन्हें डुबाने का आरोप लगाया। इससे भी काम नहीं बना तो फिर बांग्लादेश ने बॉर्डर पर बीएसएफ को निशाना बनाया। अवैध तरीके से दो

अलग-अलग घटनाओं में भारत में घुसने की कोशिश कर रही एक बच्ची और अन्य शख्स को बीएसएफ ने गोली मार दी थी। बांग्लादेश ने इस पर औपचारिक तौर पर विरोध जताया। इसके बाद बांग्लादेश के चीफ प्रॉसिक्यूटर ने तो सारी हदें पार करते हुए यहां तक कह दिया कि शेख हसीना को वापस लाने के लिए वो अंतरराष्ट्रीय अदालत जाएगी।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 **A** कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**